दशोरा शब्द जाति सूचक नहीं है

गतांक से आगे

'दशोरा' शब्द जाति सूचक नहीं है- मेवाड़ में रह रहे अधिकांश दशोरा परिवार अपने नाम के आगे 'दशोरा' उपनाम लगाते है किन्तु यह 'दशोरा' शब्द किसी जाति का सूचक नहीं है। मूल रुप से इस जाति का नाम 'नागर' (ब्राह्मण) था जो बड़नगर में निवास करती थी। वहां से इसका एक वर्ग प्रश्नोरा चला गया जिससे उस स्थान के नाम से ये 'प्रश्नोरा नागर' अर्थात् प्रश्नोर में रहने वाले नागर कहलाये। फिर ये दशपुर में आये जिससे ये अपना परिचय 'दशपुरीय प्रश्नोरा नागर' से देने लगे। ये ही नागर जब मेवाड़ में आये तो इनका सम्बोधन 'दशपुर ज्ञाति' से होने लगा जो प्राचीन प्रशस्तियों में पाया जाता है। धीरे-धीरे ये दशपुर राज्य (दशोर राज्य) के आधार पर अपने को 'दशोरा' कहने लगे। इस प्रकार प्रश्नोरा एवं दशोरा शब्द जाति के सूचक नहीं है बल्कि स्थान के सूचक हैं। जाति सूचक शब्द तो केवल 'नागर' है। बड़नगरा, विशनगरा, साठोदरा आदि नागरों का नामकरण भी स्थान के अनुसार ही हुआ जो जाति का बोध नहीं कराते बल्कि स्थान का बोध कराने वाले हैं। यदि दशोरा को एक जाति मान लिया जाये तो मन्दसौर से आये सभी व्यक्ति एक ही जाति के माने जाते जैसे दशोरा तेली, दशोरा तम्बोली, दशोरा बलाई, दशोरा महाजन आदि किन्तु ऐसा नहीं है। यदि किसी स्थान विशेष पर रहने के कारण से उसे एक जाति मान लिया जाये तो आगे बेठूम्बी, मालीखेड़ा उदयपुर आदि में रहने वाले दशोरों की भी अलग-अलग जातियां बन जायेगी जो किसी जाति के नामकरण का आधार नहीं है। इस जाति ने 'दशोरा' शब्द उपनाम के रुप में कब व क्यों स्वीकार किया इसका पता नहीं चलता किन्तु प्राचीन समय में इसका प्रयोग नहीं होता था तथा मेवाड़ से बाहर रहने वाले दशोरा आज भी इसका प्रयोग नहीं करते।

ये अपना उपनाम गोत्र अथवा अवटंक के नाम पर रखते थे जैसे झोटिंग भट्ट, भट्ट धनेश्वराय, भट्ट विष्णु आदि। आज से कुछ समय पूर्व भी व्यास, भट्ट, चौबे, मिश्र आदि अवटंक लिखने की ही प्रथा थी। विक्रम सम्वत 1962 में महाराजा श्री फतह सिंह जी ने दशोरा जाति की जो तहकीकात कराई थी उसमें भी इस जाति के व्यक्तियों ने अपना उपनाम व्यास, भट्ट, मिश्र आदि ही लिखा है। एक ने भी 'दशोरा' नहीं लिखा है जिसे इस पुस्तक के प्रकरण 10 के अन्त में देखा जा सकता है।

आज भी कई दशोरा परिवार अपना उपनाम कौशल्य, उपाध्याय, शर्मा, व्यास आदि लिखते हैं किन्तु कुछ लोगों ने दशोरा लिखना आरंभ कर दिया जिससे कई व्यक्ति आजकल अपना उपनाम 'दशोरा' लिखने लग गये। संभवत यह उपनाम इन्होंने मन्दसोर की स्मृति को अपने परिचय के रुप में बनाये रखने के लिए ही स्वीकार किया हो जो यद्यपि उचित ही है किन्तु यह शब्द जाति का बोध नहीं कराता। जाति का बोध कराने वाला शब्द तो 'नागर' ही है। जिस प्रकार अन्य नागर अपना उपनाम 'नागर' ही लिखते है, बड़नगरा, विशनगरा आदि नहीं लिखते, उसी प्रकार दशोरों का भी जाति सूचक शब्द नागर ही है। बड़नगरा, विश नगरा, प्रश्नोरा आदि शब्द भी दशपुर की ही भांति स्थान सूचक ही हैं। दशोरा उपनाम लिखने का एक परिणाम यह भी हुआ कि यह जाति नागरों से भिन्न जाति मानी जाने लगी तथा अन्य नागरों से इसका सम्बंध ही टूट गया जिसे सिद्ध करवाने में कठिनाई हो रही है। यद्यपि वर्तमान में अन्य नागरों के साथ कई विवाह सम्बध हुए है जिससे इसकी एकता पुनः बन रही है किन्तु कई नागर आज भी इस जाति को नागर कहने एवं विवाह सम्बंध स्थापित करने में संकोच करते हैं जबकि यह नागर ब्राह्मणों की ही एक उपजाति है।

नोट- पूर्व में लिखा गया है कि दशोरा जाति ने मन्दसौर पर आठ सौ वर्ष तक शासन किया। यह जनश्रुति के आधार पर तथा कुछ प्राचीन हस्तलिखित सामग्री के आधार पर ही लिखा गया है इसके लिए ऐतिहासिक एवं तथ्यात्मक प्रमाण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रकरण में आगे दिये जा रहे हैं। (शेष अगले अंक में)

संकलन- श्रीमती शीला दशोरा

लघुकथा

ममता

सहेलियों के साथ ऊधम करते हुए नन्ही नम्रता गिर गई और उसके दायें पैर की हड्डी टूट गई। जब डॉक्टर ने बताया कि मेजर फ्रेक्चर है और शायद ऑपरेशन करना पड़े, तो माँ रोने लगी। नम्रता ने अपनी तकलीफ के बीच कहा- 'मम्मी, कल तो तुम कह रही थी कि ज्यादा तंग करेगी, तो तेरी टांग तोड़ दूंगी और आज टांग टूट गई तो जोर-जोर से रो रही हो!'

-सूर्यकांत नागर

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

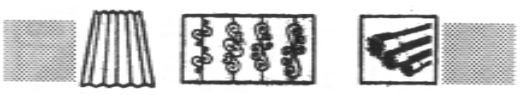

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट, दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578, मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध

R.K. Dave (Pappu)

जो हाटकेश्वर भगवान को माने वो नागर 'ब्राह्मण'

कल्याण शिवोपासना अंक 1993 के पृष्ठ क्र. 403 के अनुसार वड़नगर स्थित श्री हाटकेश्वराय का मंदिर नागर ब्राह्मण के कुल देवता का है, न कि नागर वणिक का। इन्दौर व उज्जैन के वडनगरा नागर समाज जो कि इष्टदेव हाटकेश्वर को मानते है, अपने आप को नरसी मेहता वंशज भी कहते है, मूल रुप से नागर ब्राह्मण है, परन्तु वडनगरा नागर वणिक समाज नाम से जाने जा रहे है, क्योंकि नई पीढ़ी ने यज्ञोपवित धारण करना बन्द कर दी। 55 वर्ष पूर्व आपने और मैंने अपने पिता एवं दादा व अन्य सम्बंधियों को जनेउ धारण किये हुवे देखा है, लेकिन अब आप व आपके परिवार अपने को वणिक मानने लगे है, यह भी सच नहीं है कि सभी नागर या दशोरा नागर ब्राह्मण है, कुछ समय पूर्व एक पुलिस अधिकारी मेरे सह यात्री थे, उनके बेच पर नागर देख कर मैंने परिचय किया, मेरा परिचय जानने के पश्चात उन सज्जन ने कहा कि हम यू.पी के है व नागर ब्राह्मण नहीं है, हरिजन है, हमारे कुल देवता रैदासजी है। इसी प्रकार खाचरोद व उज्जैन के करीबी गांवों में नागर धाकड़ रहते है, उनसे परिचय प्राप्त करने पर मालूम हुआ कि वह नागर पाटीदार है, व कुल देवता हाटकेश्वर को नहीं मानते है। इन्दौर, उज्जैन, संभाग के वीसनगरा व वडनगरा नागर समाज में लड़कियों की कमी के कारण गुजरात व महाराष्ट्र के निवासी नागर वणीक जिनके इष्ट श्रीनाथजी है, के विवाह सम्बंध इन्दौर, उज्जैन आदि मालवा क्षेत्र में होने का कारण हाटकेश्वर को मानने वाले भी वणीक लिखने लगे इससे सत्य यही है कि जो हाटकेश्वर शास्त्रानुसार वडनगरा, विसनगरा, साठोदरा एवं प्रश्नोरा (दशोरा) ही नागर ब्राह्मण है, इसके अनेक प्रमाण माह अप्रेल 2008 की हाटकेश वाणी के पृष्ठ क्र. 6 के अनुसार पंच द्रविड़ों की मुख्य पांच उपजातियां है जिसका सम्बंध गुर्जर देश (गुजरात) से है जिनमें 1 औदिच्य , 2. नागर, 3. भट्ट मेवाड़ा, 4 श्रीमाली, 5 मोढ़ है। इनमें औदिच्यों का मूल स्थान सिद्धपुर (गुजरात) तथा नागरों का वडनगर (गुजरात) है। अब अखिल भारतीय स्तर पर समस्त नागर ब्राह्मण समिति का पंजीयन करवाकर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रमोहनजी नई दिल्ली, उपाध्यक्ष श्री सूर्यकान्तजी नागर मद्रास, कोषाध्यक्ष श्री नित्यानंदजी नागर ने अथक प्रयास कर राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान के नाम वेबसाइट प्रारंभ की है, जिसमें सभी नागर ब्राह्मण अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है, राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान द्वारा म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद का गठन किया है, जिसके पदाधिकारी प्रदेशाध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजी व्यास, सचिव श्री नरेन्द्रजी नागर, कोषाध्यक्ष श्री अनिलजी नागर ने प्रत्येक जिला एवं तहसील स्तर पर नागर ब्राह्मण परिषद की कार्यकारिणी गठन करने के सराहनीय प्रयास कर रहे है, प्रदेश के पदाधिकारियों के मार्ग दर्शन झाबुआ, मेघनगर पिटोल एवं पेटलावद में नागर ब्राह्मण परिषद का गठन किया गया, इसी प्रकार राजस्थान के अकलेरा में राजस्थान नागर ब्राह्मण परिषद का गठन संरक्षक डॉ. हरीप्रसाद नागर के मार्गदर्शन में हुआ, परिषद के पदाधिकारियों द्वारा प्रदेश में निवास करने वाले सभी नागर ब्राह्मणों को एकजुट कर समाज से जोड़ने का संकल्प लिया। जब अखिल भारतीय स्तर सभी हाटकेश्वर को अपना आराध्य मानने वाले नागर ब्राह्मण एकजुट हो रहे इसके पश्चात भी आप वणीक कहलाना चाहते है तो हाटकेश्वरजी कुल देवता को न मानते हुवे, अपने आराध्य की पूजा करें, दो नावों पर सवारी न करें।

राजेश नागर,
अध्यक्ष, नागर ब्राह्मण परिषद् झाबुआ

हाटकेश्वर-मंदिर (वडनगर)

आनर्त (गुजरात) देश वडनगर में परम पवित्र हाटकेश्वर तीर्थ है। स्कन्दादि पुराणों में इस क्षेत्र की महिमा वर्णित है। यहां भगवान् हाटेकेश्वर का महालिंग प्रतिष्ठित है. ये नागर ब्राह्मणों के कुलदेवता हैं। यह कहा जाता है कि त्रिलोकी नापते समय भगवान वामन ने पहला पद वडनगर में ही रखा था। वडनगर का प्राचीन नाम चमत्कारपुर है।

परलोकगमन 12 दिसम्बर 08
आत्मबल से परिपूर्ण : श्री वासुदेव मिश्र

आत्मबल सब बलों से श्रेष्ठ होता है, उसे किसी का छल नहीं जीत सकता है। इसी प्रकार आत्मबल के धनि श्री वासुदेव मिश्र को जब पहला अटैक वर्ष 89 में आया तो उन्होंने स्वस्फूर्त स्वास्थ्य में सुधार किया। 1993 में उन्हें दूसरा अटैक आया किन्तु अस्वस्थता को उन्होंने अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया वे पूर्ववत सामाजिक कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते रहे उनमें जीवटता कूट-कूट कर भरी हुई थी। आपका जन्म श्री ऊंकार लालजी मिश्र के यहां 18 दिसम्बर 1943 को हुआ तथा बचपन यहीं जूनी इंदौर में गुजरा। मात्र 12 वर्ष के जब थे तो पिताजी ने साथ छोड़ दिया। इतनी कम उम्र में परिवार के दायित्वों का बोझ अपने कंधों पर लेकर सफलता पूर्वक जिम्मेदारियों का निर्वाह किया। एम.कॉम. तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात शिक्षा विभाग में सेवाएं दी उनका सम्पूर्ण कार्यकाल उज्जैन में ही बीता। सरल स्वभाव के श्री वासुदेव मिश्र सभी से खुलकर मिलते तथा छोटे-बड़े का कभी भेद नहीं किया। यह भी संयोग ही रहा कि परमात्मा का बुलावा भी उन्हें सामाजिक दायित्व पूर्ण करते समय इंदौर में एक विवाह समारोह में दिनांक 12 दिसम्बर 08 को आया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। तीन सुपुत्र- संजीव-श्रीमती मनीषा मिश्र, मनीष-मानसी मिश्र, प्रवीण-नीतू मिश्र उनकी विरासत को गति देने में सक्षम है। एक बड़े भाई श्रीराम मिश्र इन्दौर में ही थे। तथा दो बड़ी बहनें श्रीमती इंदिरा उपाध्याय उज्जैन में तथा श्रीमती प्रेमलता दशोरा उदयपुर में निवासरत हैं।

सम्पर्क -98266-35401,94240-00734

ज्ञान अर्जन का प्रमुख उद्देश्य है 'सुख की प्राप्ति'

प्रत्येक धर्म का एक ही लक्ष्य होता है कि मानव के वर्तमान जीवन को सुखमय बनाना। हम जो भी ज्ञान अर्जित करते हैं- उसका प्रयोग सुख प्राप्ति के लिये ही करते हैं। प्रत्येक काल में तत्कालीन संतगणों ने आत्म निरीक्षण द्वारा-जीवन में सुख प्राप्ति का साधन खोज निकाला। धर्म का तत्व सूक्ष्म है। एक बीज में उसका प्राण छिपा है। जब उस बीज को भूमि में डाला जाता है उसके प्रस्फूरण हेतु समुचित, प्रकाश गर्मी, पानी, खाद दिया जाता है तब जाकर वह प्रस्फूटित होकर एक नन्हें पौधे के रुप में आ जाता है। इसका समुचित रक्षण एक कुशल माली कर बड़ा कर वृक्ष का रुप देता है। उसी प्रकार धर्मतत्व के विकास की प्रक्रिया भी समतुल्य है। सर्वप्रथम धर्म से अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। धार्मिक जागृति हेतु श्रद्धा, विश्वास तथा युक्ति संगत विचारों के सतत प्रयत्न से धर्म का रक्षण किया जा सकता है।

छोटे बच्चों के मन में प्रारंभ से धर्म संस्कार के ऐसे बीज बोना है ताकि वे संस्कारित परिवार के उचित वातावरण में अंकुरित होकर सुंदर पौधों का आकार ग्रहण कर सके। हिन्दूधर्म का सही निरुपण एक प्रगतिशील नित्य नई विचारधाराओं से पोषित परम्परा के रुप में किया जा सकता है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अधिकाधिक चारित्रिक उन्नति तथा आध्यात्मिकता प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है। यदि बच्चों में बड़ों के प्रति आदरभावना श्रद्धा, स्नेह, उच्चविचार, अनुशासन का भाव हृदयंगम कराना है तो प्रथम परिवार के अन्य सदस्यों में ये सभी गुण होना आवश्यक है क्योंकि बच्चों की पेनीनजर होती है, कोमल भाव होते है वे धर्म संस्कार शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। परिवार में एक सुदृढ़ परम्परा की स्थापना का दायित्व हमारे ऊपर ही है। हिन्दू संस्कृति अपने आप में पूर्ण है और विश्व की अन्य संस्कृतियों में सर्वप्रथम स्थान पर आसीन है। इसमें नई परम्पराओं को स्वीकार करने की क्षमता है। हिन्दू धर्म ने जीवन निर्वाह हेतु शाश्वत सत्यों का सामंजस्य स्थापित किया है। सच्चे धर्म का उद्‌गम स्थान मानव जीवन ही है। हमारे लिये वही धर्म श्रेष्ठ है जो जीवन के साथ जुड़ा है और संकट में हमें बचाता है। प्राचीन संतों का कथन है हम अपना बाह्य जगत कितनी ही सुन्दरता से क्यों न सजाले किन्तु यदि हम अपने व्यक्तित्व को ठीक से नहीं संवार सकते तो उस सुंदर बाह्य जगत के साधनों के होने पर भी हम सुख संतोष का अनुभव नहीं कर पायेंगे।

जब किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व दृढ़ नहीं होता तो ऐसे व्यक्ति की चारों इकाईयां शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा एक दूसरे के साथ सामञ्जस्य स्थापित न करके एक दूसरे के विरोधी होकर अपनी-अपनी दिशाओं में खींचती है परिणाम स्वरुप उसकी सुख शांति खण्डित होकर बिखर जाती है इस कारण वह प्रसन्नता का अनुभव प्राप्त नहीं कर सकता। अतः हिन्दू धर्म रुपी मंदिर के मुख्य भवन में पहुंचने के लिये भक्तियोग, ज्ञान तथा कर्मयोग द्वारा सत्य की पवित्र वेदी तक साधक पहुंचता है।

प्रस्तुतकर्ता- सौ. रुद्रकान्ता रावल
155-ए, तुलसी नगर, इन्दौर -10

तुम मानो तो सही

तुम मानो तो सही,
स्वयं को केन्द्र बिन्दू
प्रकृति सृष्टि की धूरी
करोगे विलक्षण अनुभूति
स्वयं होंगे असीम उर्जा स्त्रोत
पाओगे कण-कण अपना
नहीं मोह होगा इनसे
पर हो जाओगे संरक्षक

आनंद ही आनंद है

आंखे कर बंद विचार करो
स्थिर आसन विराज करो
सूर्योदय-सूर्यास्त क्षण सोचो
चन्द्रगमन की कल्पना करो
प्रकृति सृष्टि के शितिज देखो
बहता पानी हिलते वृक्ष सोचो
उड़ते पक्षी चरते पशु देखो
आपसे स्नेह है इन्हें सोचो
आनन्द ही आनंद है।

मुकुल व्ही मंडलोई एड्व्होकेट फोन 0731-2484370

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है
इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को
हेलो बेबी शॉप फेमेली क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि

किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि

मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि

रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

भगवान राम स्वयं आशीर्वाद देने आते हैं

संत शिरोमणी श्री तुलसीदासजी ने श्री रामचरित मानस रचकर विश्व को ऐसी अनमोल कृति दी है जिसके पारायण, मनन एवं पालन करने से मनुष्य सरलता से भवसागर पार कर जाता है।

कलयुग केवल नाम अधारा। सुमिर सिमर नर उतरहि पारा।।

यहां नाम से आशय भगवान राम के नाम को कहा है।

मनुष्य जीवन लेकर रामचरित मानस को नहीं पढ़ा तो समझो एक बहुत बड़ा लाभ खो दिया

राम नाम मनी दीप धरु जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतर बाहेर ज्यो देखूं उजियार।।

श्री राम चरित मानस में सात कांड है। इसे कथा स्वरुप देकर पहले भगवान शंकर ने गायी फिर काक भुसुंडू जी ने और कलयुग में संत तुलसीदास जी ने गायी। जिस घर में श्री रामचरित मानस रहती है वहां भूत प्रेत भूलकर भी नहीं आते वहां दारिद्र भी नहीं रहता और वहां राम भक्त हनुमान जी सदा फेरी लगाकर उस घर की रक्षा करते है। रामायण के समान कोई ग्रन्थ नहीं है। मेरा यह निजी अनुभव है कि जिस घर में नित्य रामायण का पाठ होता है वहां भगवान राम स्वयं आशीर्वाद देने आते हैं। आजकल समयाभाव का जमाना है घर में कोई एक व्यक्ति यदि 2-4-5-7 दोहे रोज नियमित पाठ करे उसका अर्थ करें और फिर देखे उसके कार्य श्री राम भक्त हनुमान जी बड़ी सरलता से निपटा देंगे। रामायण में जो त्याग, स्नेह एवं भक्ति के उदाहरण है वैसे कहीं नहीं।

राम, लक्ष्मण,भरत, शत्रुध्न ये चार नाम को जपने वाला कभी दुखी न होगा।

आज्ञा पालन और भातृ स्नेह की ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल है। भरत चरित तो मानों अमृत है भरत सरिस को राम सस्नेही। जग जपु राम, राम जपु जे ही। सारा संसार राम राम जपता है परन्तु भगवान श्री राम भरत को जपते हैं।

रामायण में 1173 दोहे, 87 सोरठा, 228 छन्द, 27 श्लोक, 1,16,733 शब्द और 2,91580 अक्षर है। संत तुलसीदास ने रामायण पूरी करने के पूर्व आखिरी छन्द में जो लिखा है उसे पाठक अजमाइश करके अवश्य देखे।

सत, पंच चौपाई मनोहर, सुनही जे न अरु उर धरें।

दारुण, अविद्या शोक जनित विकार श्री रघुवर हरे।।

अतः बिना किसी मुहुर्त को देखे, बिना ज्योतिषी से पूछे सात या पांच चौपाई (मनोहर) का पाठ नित्य कीजिए। और पूरी रामचरित मानस धीरे-धीरे पाठ करके देखिये। आपके सौभाग्य की कली ऐसी खिलेगी जिसकी महक से आप, आपका परिवार, नागर समाज महक उठेगा। जय श्री राम ।

प्रस्तुती
सौ. वसुन्धरा-कृष्णगोपाल व्यास
40 श्री राम नगर सांवेर रोड, उज्जैन
फोन 0734-2510966, मो. 94259-16155

जय हाटकेश सिर्फ नागर बंधुओं हेतु जय श्री कृष्णा
व्यापारी बनें मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...
हमारे उत्पादन
* जालिम-एक्स मलम
* जालिम-एक्स छुक्कू
* जालिम-एक्स लोशन
* पंचसुधा
* वामा क्रीम
* मेकाडो बाम
* अंजू बाम
* पेन ऑफ ऑईल
* पेन क्योर आइंटमेंट
* हज़म टेबलेट
* अंजू कफ सायरप
* अर्शोमृत टेबलेट
* सुगम चूर्ण
* पाचक चूर्ण
* नारी रसायन
आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP.पर बिक्री करें।
अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे-
नवीन झा
अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)
मोबाइल नंबर- 09425062415

हजारों वर्षों पूर्व की गयी भविष्यवाणियां साकार रुप में

हमारे अति प्राचीन पुराण ग्रन्थों में आज से हजारों वर्ष पूर्व की गयी भविष्यवाणियां आश्चर्यजनक रुप से सत्य होती जा रही है। इन भविष्य कथनों की सत्यता के आधार पर हमारे पुराण प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे उतरे हैं। श्रीमद् देवी भागवत महापुराण के अध्याय 8 के एक प्रसंग में श्री नारदजी ने भगवान श्री हरि से कलि (कलयुग) के बारे में प्रश्न किया कलयुग में धरा पर क्या स्थिति निर्मित होगी? भगवान श्री नारायण ने अपने मुखारबिन्द से जवाब दिया- हे नारद जो तीन देवियां नदी के रुप में प्रवाहित होती रहेंगी वे भगवती सरस्वती, गंगा एवं पद्मावती (लक्ष्मी) होंगी। कलि में पांच हजार वर्षों तक भारतवर्ष में रहकर ये तीनों देवियां सरित् रुप का परित्याग करके बैकुण्ठ में चली जावेगी। काशी तथा वृन्दावन के अतिरिक्त अन्य प्रायः सभी तीर्थ भगवान श्री हरि की आज्ञा से उन देवियों के साथ बैकुण्ठ चले जावेंगे। शालग्राम, शिव भक्ति और भगवान पुरुषोत्तम कलि के दस हजार वर्ष व्यतीत होने पर भारत वर्ष को छोड़कर अपने स्थान पर पधारेंगे. इनके साथ ही साधु, पुराण, शंख, श्राद्ध, तर्पण तथा वेदोक्त कर्म भी भारत वर्ष से उठ जायेंगे। देव पूजा, देवनाम देवताओं के गुणों कीर्तन देव शास्त्र पुराण, संत सत्य धर्म ग्राम देवता व्रत तप और उपवास- ये सब भी साथ ही इस भारत से चल पड़ेंगे। प्रायः सभी लोग मद्य एवं मांस का सेवन करेंगे झूठ एवं कपट से किसी को घृणा न होगी उपर्युक्त देवी एवं देवताओं के भारतवर्ष छोड़ देने के पश्चात शठ, क्रूर दम्भी, अत्यन्त, अहंकारी, चोर हिंसक ये सब संसार में फैल जावेंगे। पुरुष भेद (परस्पर मैत्री का अभाव) होगा। स्त्री विभेद अर्थात् केवल स्त्री और पुरुष का ही भेद रहेगा- जाति भेद की सत्ता उठ जावेगी अतएव निर्भिकतापूर्वक किसी भी वर्ण की स्त्री के साथ कोई भी विवाह कर लेगा। वस्तुओं में स्व स्वामिभेद होगा-परस्पर एक-दूसरे को कोई भी वस्तु नहीं देंगे सभी पुरुष स्त्रियों के अधीन होकर रहेंगे। घर घर में पुंश्चलियों का निवास होगा। ये दुराचारिणी स्त्रियां निरन्तुर धुड़क और तड़प कर अपने पतियों को पीड़ित करेंगी सेवक में जितनी नीचता रहेगी, उससे कहीं अधिक स्वामी बन जावेगा। घर में जो बलवान होंगे उन्हीं को कर्त्ता माना जावेगा। बांधवों की सीमा स्त्री के परिवार (ससुराल) में सीमित हो जायेगी। एक साथ पढ़ने-लिखने वाले लोगों में भी परस्पर बातचीत तक का भी व्यवहार न रहेगा पुरुष अपने ही परिवार से अन्य अपरिचित व्यक्तियों की भांति व्यवहार करेंगे। ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य और शूद्र चारों वर्ण अपनी जाति के आचार-विचार छोड़ देंगे। संश्यावन्दन और यज्ञोपवित संस्कार तो प्रायः बन्द ही हो जावेंगे। चारों ही वर्ण म्लेच्छ के समान व्यवहार करेंगे। प्रायः सभी लोग अपने शास्त्रों को छोड़कर म्लेच्छ भाषा पढ़ेंगे। ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य और शूद्र सेवावृत्ति से जीविका चलाएंगे। सम्पूर्ण प्राणियों में सत्य का अभाव हो जावेगा। जमीन पर धान्य नहीं उपजेंगे. वृक्ष फलहीन हो जावेंगे। गौओं में दूध देने की शक्ति नहीं रहेगी। लोग बिना मक्खन के दूध का व्यवहार करेंगे। स्त्री और पुरुष में प्रेम का अभाव होगा। गृहस्थ असत्य भाषण करेंगे. राजाओं का तेज अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। प्रजा भयानक 'कर' के भार से कष्ट भोगेंगे। नदियों और तालाबों पर धान्य होंगे अर्थात् समायोजित वर्षा के अभाव से अन्यत्र खेती न होने के कारण लोग इनके तट पर ही खेती करेंगे. कलियुग में सम्भ्रान्त कुल के पुरुषों की अवनति होगी।

नारद! कलि के मनुष्य अश्लील भाषी, धूर्त, शठ और असत्यवादी होंगे। भलिभांति जोते-बोये हुए खेत भी धान्य देने में असमर्थ रहेंगे। नीच वर्ण वाले धनी होने के कारण श्रेष्ठ माने जायेंगे। देव भक्तों में नास्तिकता आ जावेगी। नगरवासी हिंसक निर्दयी तथा मनुष्यघाती होंगे। कलि में प्रायः स्त्री और पुरुष-रोगी थोड़ी उम्र वाले और युवा अवस्था से रहित होंगे। सोलह वर्ष में ही उसके सिर के बाल पक जावेंगे। बीस वर्ष में उन्हें बुढ़ापा घेर लेगा। आठ ही वर्षों में स्त्रियां रजस्वला होकर गर्भधारण करने लगेंगी। कलियुग में भगवन्नाम बेचा जायेगा। मिथ्यादान होगा। मनुष्य अपनी कीर्ति बढ़ाने के लिये दान देकर स्वयं पुनः उसे वापस ले लेंगे। देव वृत्ति, ब्राह्मणवृत्ति अथवा गुरुकुलवृत्ति चाहे वह अपनी दी हुई हो अथवा दूसरों की कलि के मानव उसे छीन लेंगे। कलियुग में मनुष्य को अगम्यागमन में कोई हिचक नहीं रहेगी। कलियुग में स्त्रियों और पतियों का निर्णय नहीं हो सकेगा। अर्थात् सभी स्त्री-पुरुषों में अवैध व्यवहार होंगे। प्रजा किन्हीं ग्रामों और धनों पर अपना पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त कर सकेगी। प्रायः सब लोग अप्रिय वचन बोलेंगे। सभी चोर और लम्पट होंगे। सभी एक-दूसरे की हिंसा करने वाले एवं नरघाती होंगे। ब्राह्मण क्षत्रीय और वैश्य सबके वंशजों में पाप प्रवेश कर जावेगा। सब लोग लाख, लोहा रस और नमक का व्याप करने लग जाएंगे। पुंश्चली सूद से जीविका चलाने वाली यथा कूटनी स्त्री रजस्वला रहती हुई भी ब्राह्मणों के घर भोजन बनावेगी। पंच यज्ञ करने में द्विजों की प्रवृत्ति न रहेगी। यज्ञोपवित पहनना उनके लिये भार हो जावेगा। वे संध्या वन्दन और शौच से विहीन रहेंगे। अन्नों में, स्त्रियों में और आश्रमवासी मनुष्यों में कोई नियम नहीं रहेगा। घोर कलि में प्रायः सभी म्लेच्छ हो जायेंगे।

इस प्रकार जब सम्यक प्रकार से कलियुग आ जावेगा तब सारी पृथ्वी म्लेच्छों से भर जावेगी, तब विष्णुयशा नामक ब्राह्मण के घर उनके पुत्र रुप से भगवान कल्कि प्रकट होंगे। सुप्रसिद्ध पराक्रमी ये कल्कि भगवान नारायण के अंश हैं। ये एक बहुत ऊंचे घोड़े पर चढ़कर अपनी विशाल तलवार से म्लेच्छों का विनाश करेंगे और तीन रात में ही पृथ्वी पर अराजकता फैल जावेगी। डाकू सर्वत्र लूटपाट मचाने लगेंगे। तदनन्तर मोटे धार से असीम जल बरसने लगेगा। लगातार छः दिन रात वर्षा होगी पृथ्वी पर सर्वत्र जल ही जल दिखाई पड़ेगा। पृथ्वी प्राणी वृक्ष और गृह से शून्य हो जाएगी। मुने! इसके बाद बारह सूर्य एक साथ उदय होंगे. जिनके प्रचण्ड तेज से पृथ्वी सूख जायेगी। यों होने पर दुर्घर्ष कलियुग समाप्त हो जायेगा। तब तप और सत्व से सम्पन्न धर्म का पूर्ण रुप से प्राकट्य होगा। उस समय तपस्वियों, धर्मात्माओं और वेदहा ब्राह्मणों से पुनः पृथ्वी शोभा पायेगी। (देवी भागवत पुराण अध्याय-8)

उपरोक्त तथ्यों से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हजारों वर्षों पूर्व की गई आज के समय (वर्तमान) की भविष्यवाणियां साकार रुप से दृष्टिगोचर होती जा रही हैं। इन भविष्य कथनों का अक्षरशः सत्य होने में किंचित् भी संशय नहीं रह जाता है।

पं. ऋषभदेव (ज्योतिषी)
49, कैलाश पार्क कालोनी, गीताभवन, इन्दौर
मो. 9301370059

उम्र के अंतिम पड़ाव पर सच्चा हमसफर

योगाभ्यास

उम्र के साथ वरिष्ठता हर व्यक्ति को आती है, इसमें आंखें, कमजोर हो जाती हैं, रीढ़ की हड्डी झुक जाती है, गालों पर झुर्रियां पड़ जाती हैं। आमतौर पर वरिष्ठ लोग ऐसा सोचते है कि उम्र के साथ उनके मस्तिष्क की कार्यप्रणाली धीमी हो जाती है, लेकिन यह बात पूरी तरह से सत्य नहीं है। उम्र के साथ मस्तिष्क सिकुड़ता है लेकिन आशावादी वैज्ञानिकों, डॉक्टरों ने यह खोज निकाला है कि अधिक उम्र के साथ मस्तिष्क सिकुड़ता है लेकिन अधिक उम्र के साथ वरिष्ठों की अक्ल में कमी नहीं आती है। अधिकांश वरिष्ठ इस भ्रम में रहते हैं कि वे वरिष्ठ हो गए हैं। अतः दिमाग नहीं चलता और स्मृति कमजोर हो जाती है। यह बात सत्य नहीं है।

इंटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यून में जिना कोलाता ने इस बारे में रिपोर्ट दी-समाज में बहुत-सी बातें बुजुर्गों के परामर्श से की जाती है। डॉ. पोपोर्ट का कथन था कि स्वस्थ मनुष्य के दिमाग में उम्र के साथ परिवर्तन कम होते है। डॉ. कोटमेन का कथन था कि बुजुर्गों का दिमाग ध्यान में अधिक सक्षम हो सकता है। कई लोगों का मानना है कि नियमित रक्तसंचार में कमी आने से मस्तिष्क ठीक ढंग से काम नहीं करता है। उम्र के बढ़ने के साथ बहुत-सी बातें भूल जाते हैं, लेकिन वरिष्ठता के अलावा हादसा या प्रियजनों के बिछड़ने से या सदमें के कारण भूलने की आदत हो जाती है। वास्तविकता में वरिष्ठता शरीर से कम और मन से ज्यादा आती है, शरीर कमजोर हो जाता है, आत्मविश्वास में कमी आती है। पहला सुख निरोगी काया का होता है।

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिये वृद्ध लोगों को निम्नलिखित क्रियाएं करनी चाहिये-

आहार-नियम से शरीर मन, मस्तिष्क स्वस्थ रह सकता है। उचित आहार से बढ़ती उम्र की बीमारियों से बचा जा सकता है जैसे-विटामिन बी, कैल्शियम का उपयोग उचित मात्रा में, उचित समय पर किया जाना चाहिये, विटामिन सी,ई को भी लेना चाहिये।

दिनचर्या को सरल करना चाहिये ताकि दिमाग से अधिक सोचना न पड़े। अपनी रुचि के अनुसार काम करना चाहिये जैसे घूमना, बगीचे का कार्य, संगीत, पढ़ना, पेटिंग आदि करना चाहिये।

अपनी शक्ति व शरीर के अनुसार, योगाभ्यास करना चाहिये। सुबह या शाम घूमना चाहिये। अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करना चाहिये।

निराशा को दूर रखने के लिये स्वयं को व्यस्त रखना चाहिये। यौगिक क्रिया करने से पहले व अंत में पांच-पांच बार ऊँ का उच्चारण करना चाहिये।

योग की निम्नालिखित क्रियाएं लाभदायक है

1. शरीर संचालन- निम्नलिखित तरीके से पांच-पांच वक्त उंगली से लेकर पूर्ण देह की सुबह या शाम 5 व एक-एक क्रिया को करना चाहिये। प्रत्येक क्रिया में पूरी सांस लेना, छोड़ना प्रत्येक क्रिया में मन सांस पर रखना।

2. निस्पंद भाव- दीवार के पास बैठकर दोनों पांव लंबे कर दोनों हाथों को घुटने पर रखकर, आंखे बंदकर बाहर की आवाज सुनना चाहिये। पूरी सांस लेना व छोड़ना 10 मिनट या 5 मिनिट तक करना चाहिये।

लंबी गहरी सांस- प्रत्येक 3 घंटे के बाद 2 मिनट के लिये लंबी गहरी सांस लेना छोड़ना एवं अपने सांस का निरीक्षण करना चाहिये।

क्रोकोडाइल- सीधा पीठ के बल लेटकर दोनों पांवों को पास में कर लें। गर्दन को दाहिनी और मोड़िए एवं दोनों पांवों को बाई ओर। फिर विपरीत क्रिया करें। यह क्रिया 5 से 10 बार करें।

सेतु-बंध- सीधे लेटकर दोनों पांवों को पास रखकर बीच में से थोड़ी सी कमर उठाना, 10 सांस लेना व छोड़ना

योगेन्द्र प्राणायाम- सीधा बैठकर एक नाक से सांस लेना, दूसरे नाक से छोड़ना फिर दूसरे से सांस लेकर पहले से छोड़ना। यह क्रिया 5 बार करनी है। ध्यान 5 मिनट करना चाहिये। ध्यान के बाद 10 वक्त ऊँ का उच्चारण करना चाहिये।

योगनिद्रा- शवासन की स्थिति में लेटकर पूरी सांस लेना, छोड़ना व अपनी सांस को देखते जाना। इसमें सांस बाहर पेट अंदर होगा। इसमें बीच-बीच में अंदर ही अंदर धीरे-धीरे ऊँ का उच्चारण 5 से 10 बार करना होगा। कल्पना में नदी को देखना, नदी के बहाव को देखना, पहाड़ को देखना, शिव भगवान को देखना, अपने इष्टदेव को देखना फिर अपनी सांस पर मन को लेकर सांस दो देखना अंदर ही अंदर ऊँ का 5 बार उच्चारण करना। सांस बाहर जा रही है। व पेट अंदर आ रहा है। योगनिद्रा करने के पहले व बाद में पूर्ण होता है। संकल्प करने के पहले भगवान शिव या अपने इष्ट देव को ध्यान करना पड़ता है। इसके साथ-साथ सुबह का भोजन 11 से 12.30 के बीच में, रात्रि का भोजन 7 से 8.30 के बीच करना चाहिये। रात्रि का भोजन हल्का होना चाहिये। दिन में एक वक्त दिल खोलकर हंसना चाहिये।

ए.के. रावल (योगाचार्य)
25, पत्रकार कॉलोनी (साकेत)
इन्दौर फोन 2565052

लघुकथा

भूमिका

कस्बे में अभी-अभी खुले नए होटल में पहली बार आकर ठहरा। होटल के शांत वातावरण ने मन मोह लिया। यात्रियों की अच्छी-खासी भीड़ के बावजूद न व्यर्थ का शोरगुल, न गुंडागर्दी। कमरों में शराबबंदी का कठोरता से पालन। सभ्य, शालीन और शिक्षित लोगों की बहुतायत। प्रभावित होकर मैंने प्रबंधक से कारण पूछा तो गर्व से सीना फुलाकर उसने कहा, होटल से लगा हुआ ही पुलिस थाना है। इसलिए गलत लोग और असामाजिक तत्व यहां ठहरने से डरते हैं। सुनकर प्रसन्नता हुई। कुछ महीनों बाद फिर उस होटल में आकर रुका। मगर वहां का सन्नाटा देख चकित रह गया। होटल में बमुश्किल चार-पांच यात्री थे। रात को फुरसत में बैठे प्रबंधक से मैंने इसका कारण जानना चाहा तो ठंडा निःश्वास भरकर उसने कहा, अब कोई भला आदमी यहां आकर ठहरना नहीं चाहता।

कारण ? आश्चर्य से मैंने भौंहें उचका दीं।

कारण, वही, पुलिस थाना।

-सूर्यकांत नागर

सांई बाबा का आशीर्वाद ही उनकी संपत्ति थी

सांई बाबा ने खास तौर से दीक्षित व उनके परिवारजनों का पूरा ध्यान रखा ताकि दीक्षित की आध्यात्मिक उन्नति में किसी प्रकार की कोई बाधा न आए। बाबा ने काका से कहा था, " काका तुला कलजी काजली माला आहे।" अर्थात् " काका, तुम चिन्तित क्यों हो? तुम्हारा ध्यान रखना व सभी जरुरतों को पूरा करना अब मेरी जिम्मेदारी है।" बाबा ने जब यह वचन दीक्षित को दिया तो साथ ही बाबा ने उन्हें इसका निर्विवाद प्रमाण देते हुए समझाया कि समय व हालात को मद्देनजर रखते हुए इस कठिन वचन को निभाना आम व्यक्ति के बस की बात नहीं है। लेकिन दिव्य शक्तियों के कारण वे इस वचन का पालन हर कीमत पर करेंगे। शिरडी में जब बाबा ने दीक्षित को ऐसा कहा तो उस समय विलेपार्ले के बंगले में काका की आठ वर्षीय बालिका एक बड़ी आलमारी (जो बहुत से खिलौनों से भरी हुई थी) के समीप खेल रही थी। वह आलमारी पर चढ़ गई जो उसके ऊपर गिर गई। बाबा की कृपा से बच्ची पर कोई भी खिलौना नहीं गिरा। गिरने से बच्ची की चूड़ियां टूट गईं, जिससे उसे हल्की सी खरोंच लगी। काका को जब इस घटना की सूचना मिली तो उन्होंने अपने दिव्य-दृष्टि वाले करुणावतार सद्गुरु श्री सांई बाबा को प्रणाम किया। अब किसी प्रकार की चिन्ता, भय तथा शंका नहीं थी। बाबा की शरण में आने के बाद दीक्षित की वकालत से होने वाली आमदनी ठप्प हो गई, उनके राजनैतिक व सामाजिक संबंध फीके पड़ गए और उन्हें कई उच्च पदों से हटना पड़ा। लेकिन इन सब सांसारिक बंधनों के टूटने से वे कभी दुःखी नहीं हुए। वे सादा जीवन व्यतीत करते। हमेशा फिजूल खर्च व ऐशो आराम की चीजों से स्वयं को दूर रखते। किसी अन्य व्यक्ति के लिए धन का अभाव हो जाना दुःख का कारण हो सकता था। किन्तु बाबा के सच्चे भक्त व भागवत् का पाठ करने वाले दीक्षित श्री कृष्ण द्वारा कहे नीचे दिए श्लोक का मनन कर अति प्रसन्न थे।

तम ब्रह्मस्यामि सम्पतभ्यो
यस्य च इच्छामि अनुग्रहम्

अर्थात जिसे मैं आशीर्वाद देने की इच्छा करता हूं, उसे सभी प्रकार की संपत्तियों से वंचित करता हूं। समाज, अदालत एवम् सामाजिक कार्यों से दूर होने से शुरु में दीक्षित को अपना जीवन नीरस सा प्रतीत हुआ। किन्तु वे समझ गए कि बाबा उन्हें धन के साथ होने वाली उन्नति, खुशी और आनन्द के भ्रम-जाल से बाहर निकाल कर सद्गति प्रदान करने के लिये तैयार कर रहे हैं। हमारे ग्रन्थों में बताया गया है कि गृहस्थाश्रम का आनन्द भोगने के बाद व्यक्ति को वानप्रस्थ आश्रम का भोग करने के लिये किसी एकान्त स्थान पर जाकर अकेले रहकर साधना व ध्यान करना चाहिए। (क्रमश :)

सेवानिवृत्ति पर अभिनंदन

कोटा (राजस्थान)। परमपावन चर्मण्यवती नदी के तट पर स्थित हाड़ौती की हृदय स्थली, औद्योगिक एवं शैक्षणिक नगरी कोटा (राज.) को जननी समान स्वच्छता एवं सुंदरता प्रदान करने में अग्रणी नगर निगम कोटा में कार्यरत श्री रमेशचन्द्र नागर सुपुत्र स्व. श्री भंवरलालजी नागर राजस्व निरीक्षक ने 34 वर्षों की सेवा के पश्चात 30 अक्टूबर 08 को सेवा निवृत्ति प्राप्त की। आप अपने सेवाकाल में मृदुभाषी, सरल हृदय एवं कार्य के प्रति लगनशील रहे। राजस्थान नागर (ब्राह्मण) परिषद अकलेरा आपके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए आशा करती है कि आप भविष्य में परिवार एवं समाज को नई दिशा प्रदान करते रहेंगे।

प्रस्तुति कुलेन्द्र नागर एडव्होकेट
महासचिव राजस्थान
नागर ब्राह्मण परिषद अकलेरा

बार-बार मिले

इस बार बड़ा परिवर्तन है
मौसम का अर्चन है
जल वायु फिजां में बड़ी
सुहानी सी तड़पन है
परिवर्तन के महादौर में
अर्चन का नर्तन है
आठ बीता और नव आया
प्रकृति का दर्पण है
आपका हो मंगल और
गरिमा का सौपान मिले
प्रगति आपकी सहभागी हो
पूर्णचन्द्र सा मान मिले
नव वर्ष में ऊंचाई पाये
सौगात नई हर बार मिले
शुभकामना भी नवीन हो
आपको बारं-बार मिले

व्रजेन्द्र नागर

❁ बात में वजन ❁

दो पत्नियां आपस में अपने-अपने गृहस्थ जीवन के बारे में बातें कर रही थी।

पहली- पति के व्यवहार से इतना तंग आ चुकी हूं कि मेरा वजन 20 किलो कम हो गया है।

दूसरी- तो फिर तुम अपने पति को छोड़ क्यों नहीं देती?

पहली- अभी नहीं। पहले अपना वजन 15 किलो और कम तो कर लूं।

❁ टेरर अलर्ट ❁

पक्की खुफिया जानकारी है कि आपके ऑफिस में छह आतंकी काम कर रहे हैं। हमें खुशी है कि इनमें से पांच की पहचान हो गई है और उन्हें कस्टडी में ले लिया गया है। ये हैं-बिन स्लीपिन, बिन ड्रिंकिन, बिन लंचिन, बिन गॉसिपिन, बिन नोटगिन और बिन बिहाइंड किसिन। हमें विश्वास है कि बिन वर्किन जैसे दिखने वाले छठे व्यक्ति को पहचानना कठिन नहीं होगा। निश्चिंत रहिए, आप पर शक नहीं किया जा रहा।

❁ बिल जीजाजी को ❁

एक आदमी की ओपन हार्ट सर्जरी हुई। होश आते ही उससे नर्स ने पूछा- क्या आपका मेडिक्लेम है?

आदमी- नहीं।

नर्स- तो क्या आप चेक या कैश पे करेंगे?

आदमी- नहीं, मेरे अकाउंट में तो 1000 रुपए भी नहीं हैं।

नर्स- (चौंकते हुए)- यानी आपका कोई रिश्तेदार आएगा बिल भरने।

आदमी- मेरी एक अविवाहित बहन है। वह नन है।

नर्स- क्या बकवास है। नन अविवाहित नहीं होती, बल्कि उनकी शादी भगवान से होती है।

आदमी- ठीक है, मेरे जीजाजी को बिल भेज दीजिए।

❁ तीन रिंग्स वाला सर्कस ❁

शादी शब्द नहीं बल्कि सेंटेन्स है (लाइफ सेंटेन्स)

शादी तीन रिंग्स वाला सर्कस है- एंगेजमेंट रिंग, वेडिंग रिंग और सफरिंग।

प्यार एक लंबा प्यारा सपना है, शादी एक अलार्म क्लॉक।

पुरुष उस महिला के पीछे क्यों दौड़ते हैं जिससे शादी करने का कोई इरादा न हो? ठीक वैसे ही, जैसे कुत्ते कार के पीछे दौड़ते हैं जबकि उनका ड्राइव करने का कोई इरादा नहीं होता।

❁ सफलता ❁

सफल पुरुष- जो बीवी के खर्च से ज्यादा कमा सके।

सफल स्त्री- जो ऐसा पति ढूंढ सके।

-श्रद्धा शर्मा

आपके पत्र

एक-एक शब्द का अर्थ है

महोदय,

मासिक पत्रिका 'जय हाटकेश वाणी' आज नागर समाज में जागरुकता लाने के लिए पुरजोर प्रयास कर रही है इसके लिए पत्रिका की सम्पूर्ण टीम बधाई की पात्र है। पत्रिका समाज के छिपे हुए प्रतिभाशाली व्यक्तियों की प्रतिभा को समाज के सम्मुख लाकर अविस्मरणीय कार्य कर रही है। सम्पादक महोदया द्वारा समय-समय पर समाजजनों से विचार एवं सुझाव की अपेक्षा की जाती है। दिसम्बर अंक में अपने सम्पादकीय में उन्होंने गहरी बात लिखी है कि जनम, परण एवं मरण तो विधि के हाथ है, हम केवल माध्यम बन सकते हैं। इस पर विचार करे और सोचे कि पत्रिका में प्रकाशित एक-एक शब्द का अर्थ है। यह संतोष का विषय है कि जय हाटकेश वाणी दिन पर दिन आकर्षक और उपयोगी होती जा रही है। समाज में जागरुकता लाने का उनका प्रयास तभी सार्थक होगा जब पाठक भी ताल से ताल मिलाएं। जय हाटकेश वाणी शीर्षक के अनुरुप भगवान हाटकेश्वर की वाणी के रुप में प्रत्येक पृष्ठ के उपर 'अनमोल वचन' प्रकाशित किए जाते हैं। बहुत सारी पुस्तकें पढ़ने के बाद जो सारतत्व प्राप्त होता है वह इन अनमोल वचन के पढ़ने से प्राप्त हो जाता है। इन वचनों को आत्मसात करके जीवन को सफल बना सकते हैं। वाणी को समाज के जन-जन तक पहुंचाने, गतिविधियों एवं जानकारियों को एकत्र करने में पूरी टीम का वृहद सहयोग है। कई अवसरों पर जब समाजजनों से पत्रिका के संबंध में चर्चा होती है, तो उसके बारे में अच्छी प्रतिक्रिया सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है। आगामी वर्ष 2009 आप सभी समाजजनों के लिए मंगलमय हो ऐसी शुभकामनाएं देते हुए मैं अपेक्षा करता हूं कि 'जय हाटकेश वाणी' के माध्यम से हम सब अपने सम्पर्क, संबंध एवं शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करते रहें।

सुरेन्द्र शर्मा
(गीता मर्मज्ञ) जिला संयोजक
हि. आ. 106, अलकापुरी, देवास, (म.प्र.)

जय हाटकेशवाणी की अनुपम विशेषताएं

'जय हाटकेश वाणी' का सतत् अ-सदस्य-पाठक रहा हूं। सम्पूर्ण अंकों की सामग्री का चयन एवं चित्रमय समय पर पाठकों तक पहुंचाना इसकी अनुपम विशेषताएं है। बदलते संदर्भो में, संगठन, सहकार एवं एकता अपनी अस्मिता रक्षण हेतु, प्राणवायु सी अनिवार्य है। इसी तथ्य को रेखांकित करती माह दिसम्बर की संपादकीय-समय के साथ प्रगति पथ पर क्षिप्रगति से आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। पत्रिका की सामग्री चयन में आपकी सम्पादकीय दक्षता परिलक्षित होती है। कविताएं व्यंग्य विनोद सब सुरुचि पूर्ण है। समाजरत्न श्री विष्णुप्रसाद जी नागर, डॉ. जी.के. नागर, डॉ. रामरतन शर्मा पर लिखे आलेख नये क्षितिज छूने को प्रेरित करते है। वहीं मैडम प्रभा शर्मा का मालवी गद्य पठनीय, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय लोकभाषा के प्रति आपकी अभिरुचि प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। घर की परिभाषा, क्रांतिदूत, नवनौका आदर्श, नहीं दिखता है, लेकिन होता है, क्रमशः पुष्पा मेहता, शिव मेहता, ब्रजेन्द्र नागर वस्तुतः अपनी रचनाओं से, जय हाटकेश वाणी को स्नेह सौरभ से सुरभित करते हैं। श्रीमद् भागवत में क्या है? श्रीमती बिन्दु मेहता की शोध परक लघु टिप्पणी मन को छूकर, श्रीमद् भागवत्, पारायण की ललक पैदा करती है। पत्रिका इसी प्रकार निरन्तर सामाजिक सरोकारों को बोधित करती हुई, दीर्घ जीवा हों। इसी मंगल कामना के साथ

अभिमन्यु त्रिवेदी 'गड़बड़ नागर'
78/2, वररुचि मार्ग, माधवनगर, उज्जैन (म.प्र.)
(0734-251099)

समाजसेवा में भी अग्रणी...

व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी अर्थशास्त्री प्रोफेसर डॉ. रामरतन शर्मा

गतांक से आगे...

वर्तमान में रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा भोपाल एवं रायपुर ने डॉ. शर्मा की बी.ए. स्तर पर चार एवं स्नातकोत्तर स्तर पर तीन पुस्तकें प्रकाशित की है। स्नातकोत्तर स्तर की पुस्तकें सम्पूर्ण भारत के विश्वविद्यालयों में अर्थशास्त्र विषय पर अनिवार्य प्रश्न पत्र के रुप में चल रही है। इस प्रकार डॉ. शर्मा की 1974 से आज तक 56 पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हुई है। जो एक रेकार्ड है। संभवतः मध्यप्रदेश के किसी भी अर्थशास्त्री ने इतनी बड़ी संख्या में पाठ्यपुस्तकें नहीं लिखी है। आपने रामप्रसाद एण्ड संस की पांच अन्य स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए अर्थशास्त्र विषय में पुस्तकें लिखने का अनुबंध किया है। छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने भी डॉ. शर्मा से पाठ्यपुस्तकें लिखने का अनुबंध किया है।

शोध निर्देशन, शोधपत्र एवं आलेख प्रकाशन- डॉ. शर्मा ने अपने शिक्षकीय जीवन में ❖ 33 शोधार्थियों को अर्थशास्त्र के विभिन्न विषयों पर पीएचडी की उपाधि अवार्ड कर निर्देशित किया। ❖ 6 शोधार्थियों को वर्तमान में निर्देशन कर रहे है। ❖ 2 वृहत् एवं लघु रिसर्च प्रोजेक्ट प्रस्तुत किये। ❖ 5 गांवों का आर्थिक सर्वेक्षण किया। ❖ एन.सी.सी. प्रोजेक्ट आफिसर के रुप में 10 गांवों में वृहत् एन.एस.एस. शिविर लगाये। ❖ माधव महाविद्यालय में 21 वर्ष एवं अर्थशास्त्र अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय में 10 गांवों में वृहत् एन.एस.एस. शिविर लगाये। ❖ माधव महाविद्यालय में 21 वर्ष एवं अर्थशास्त्र अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय में 10 वर्षों तक अध्यापन किया तथा 11 वर्ष तक शिक्षा विभाग में। ❖ 10 हजार से अधिक (अर्थशास्त्र) सामान्य विषयों पर स्टेंडर्ड पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए और आज भी लेखन कार्य निरन्तर है। ❖ अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में विषय विशेषज्ञ पद पर कार्य किया। ❖ म.प्र. आर्थिक परिषद में उपाध्यक्ष रहे। ❖ म.प्र. आर्थिक परिषद् जरनल ने शोध पत्रों का प्रकाशन । ❖ उज्जैन सीटी चेनल में उज्जैन नगर के गौरव कार्यक्रम में आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर साक्षात्कार का प्रसारण। ❖ देश के विभिन्न आर्थिक परिषद् सेमीनार में सहभागी एवं शोध-पत्रों का वाचन। ❖ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा आयोजित अर्थशास्त्र पारिभाषिक शब्दकोष वर्कशाप विक्रम विश्वविद्यालय एवं पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में सहभागिता। ❖ विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स प्रतियोगिता में स्पोर्ट्स एवं विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित यूथ फेस्टिवल में 3-4 वर्षों तक संयोजक, एवं विश्वविद्यालय परीक्षाओं के लिए केन्द्राध्यक्ष के रुप में कार्य किया। ❖ मध्यप्रदेश में "Who's who in M.P."में सम्मानजनक स्थान। ❖ पत्रकारिता में 1969 से आज तक का अनुभव। ❖अखिल विश्वगायत्री परिवार शाखा, उज्जैन ट्रस्ट में ट्रस्टी रहे। ❖उज्जैन नगर में रवीन्द्र नगर गृह निर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष तथा रवीन्द्र नगर की स्थापना 1979 में। ❖विक्रम विश्वविद्यालय बोर्ड ऑफ स्टडी के सदस्य रहे। ❖33 वर्षों से पीएचडी शोध निर्देशन। ❖ अनेक विश्वविद्यालयों में अर्थशास्त्र विषय में माडरेटर रहे। ❖पीएचडी एवं डी.लिट. के परीक्षक।

अन्य सामाजिक कार्य-

डॉ. शर्मा नागर ब्राह्मण सामाजिक कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहे। आपने दैनिक अवन्तिका उज्जैन के संस्थापक स्व. गोवर्धनलाल जी मेहता के दाहिने हाथ के रुप में रहकर पत्रकारिता जगत में स्थान बनाया। आपने दैनिक अवन्तिका उज्जैन की बुनियाद में अपनी सेवाएं प्रदान की और पत्र को आगे बढ़ाने में विज्ञापन प्रबंधक के रुप में तथा बाल जगत सम्पादक के रुप में रहकर कार्य किया।

डॉ. शर्मा ने स्व. मेहताजी के साथ ही नागर ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ, स्व. गोपीलालजी शर्मा राऊ, स्व. गेंदालालजी शर्मा राऊ, स्व. जानकीलालजी नागर राऊ, स्व. मांगीलालजी शर्मा पटेल रुपाखेड़ी, स्व. मायारामजी जोशी पाटपाला, स्व. विष्णुप्रसाद जी नागर उज्जैन, स्व. वैद्य कृष्णवल्लभजी नागर, उज्जैन के सानिध्य में रहकर नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास धर्मशाला हरसिद्धि दरवाजा रामघाट, उज्जैन की स्थापना 1976 एवं निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। स्व. मेहताजी दासाब ने डॉ. शर्मा की विद्वत्ता, अनुभव, कार्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी को दृष्टिगत रखते हुए न्यास का सचिव बनाया तथा आज भी आप इस पद पर सक्रिय हैं। डॉ. शर्मा उज्जैन नगर की विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक समितियों के सदस्य रहे हैं। आप विगत 20-25 वर्षों से गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार के संस्थापक वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ गुरुवर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के आशीर्वाद से गायत्री परिवार ट्रस्ट शाखा, उज्जैन के ट्रस्टी सदस्य रहे और गायत्री मिशन की सभी प्रकार से तन-मन, धन से आज भी सेवा कर रहे है। आप यज्ञ, सभी प्रकार के संस्कार कराने, प्रवचन, गाने बजाने में भी निपुण हैं।

डॉ. शर्मा नागर ब्राह्मण समाज के प्रत्येक दुःख सुख कार्यक्रमों में सदैव भागीदारी निभाते रहे हैं। इसीलिए आपको नागर समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आप उज्जैन नगर में सरल, मधुर, मिलन सारिता तथा एक सज्जन पुरुष (गुरुजी) के रुप में पहचाने जाते हैं। आपने महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में रहते हुए छात्रों एवं सामान्य पाठकों के लिए जो कार्य किया उसके कारण ये उनके बीच बहुत ही लोकप्रिय शिक्षक माने जाते हैं।

आपने 43 वर्षों तक शिक्षा विभाग से लेकर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में अध्यापन किया और एक लेखक के रुप में अपना नाम भारतवर्ष में गौरवान्वित किया। आज आपके द्वारा पढ़ाये गये छात्र नेता, कलेक्टर, तहसीलदार, उद्योगपति, पत्रकार, वकील, प्रोफेसर के रुप में कार्यरत है। नागर ब्राह्मण समाज उज्जैन ने भी आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को दृष्टिगत रखते हुए सम्मानित किया। वस्तुतः आप अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण उज्जैन नगर ही नहीं सर्वत्र गौरवपूर्ण दृष्टि से पहचाने जाते है। हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और भगवान हाटकेश्वर, मां गायत्री से प्रार्थना करते है कि आप स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रहे और समाज की सेवा में तत्पर रहे। वर्तमान में आप 71 वर्ष के हो गये है और हम भगवान हाटकेश्वर से शतायु होने की कामना करते हैं।

प्रस्तुति-
दीपक शर्मा, इन्दौर

सम्पादकीय

दिवंगत परिजनों को विस्मृत न करें...

क्या आप जानते हैं कि आपके सुनहरे सुन्दर 'आज' के लिए आपके परिजनों ने कितने संघर्ष किए, कितने त्याग किए। हम-तुम बड़ों से सुनते रहते हैं कि पहले बहुत अभाव था, एक वेषभूषा में साल भर निकाल देते थे। खाद्य सामग्री थी तो बहुत सस्ती लेकिन उसका अभाव था, आने-जाने के लिए या तो पैदल का सहारा था या बेलगाड़ी का, यह सब बातें ज्यादा पुरानी नहीं है, हमारे पिताजी ने यदि कम संकट झेला, परन्तु दादाजी इस अभाव और संघर्ष के साक्षी रहे हैं। यह कहानी एक घर की नहीं घर-घर की कहानी हैं उन्होंने संघर्ष किया तो हम सहर्ष हैं। हमारी समृद्धि, प्रतिष्ठा, सुख में उनका बड़ा योगदान है, अभाव और संघर्ष तो अपनी जगह है उन्होंने इनके बावजूद सिद्धांत नहीं छोड़े और सत्कर्म किए। आपने सुना होगा कि 'मां बाप का करम बच्चा होन के भुगतना पड़े' आज तुम यदि सन्तुष्ट और सुखपूर्वक हो तो उसके पीछे अपने बड़े बुजुर्गों के सतकर्म भी है। आज समृद्धि के साथ हम संस्कृति को लुप्त होते देख रहे हैं। सब कुछ है तो भी बेईमानी और भ्रष्टाचार में लिप्त हो रहे हैं। उन्होंने अभाव के बावजूद संस्कार और संस्कृति का दामन थामे रखा। इसलिए अपने दिवंगत परिजनों को याद रखें। बंधुओं मासिक जय हाटकेशवाणी आपको सौजन्य अवसर प्रदान करती है कि आप अपने परिजनों की स्मृति को जीवित रख सकते हैं। साथ ही एक कैलेण्डर भी प्रकाशित किया गया है। इस नागर कैलेण्डर में परिजनों की पुण्यतिथि एवं जन्मतिथि प्रकाशित की गई है। अपने दिवंगत परिजनों की जयंति, पुण्यतिथि पर उन्हें यादकर उनकी तस्वीर पर पुष्पमाला अर्पित कर उन्हें अपने साथ होने को महसूस करें। उनके संघर्ष, सत्कर्मों को याद करें। साथ ही नई पीढ़ी को समझाएं कि हमारे पिताजी-दादाजी ने अभाव के बावजूद अपने सिद्धांत नहीं छोड़े इसीलिए वे सुखपूर्वक रहे तथा हमारे लिए सुन्दर संसार की रचना की।

-संगीता शर्मा

विनम्र अनुरोध-

ज्ञातव्य है कि जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन प्रतिमाह 6 तारीख को किया जाकर डाक प्रेषित की जाती है। उन सभी सदस्यों को पत्रिका नियमित भेजी जा रही है, जो 250 रु. जमा कर तीन वर्ष के लिये सदस्य बन चुके है। डाक विभाग की लापरवाही से यदि आपको पत्रिका प्राप्त न हो तो कृपया सीधे कार्यालय (0731) 2450018 पर फोन करें। पत्रिका प्राप्त न होने पर पुनः भेजी जाती है। आपके शहर में समाज की गतिविधि से सम्बंधित समाचार एवं फोटो अवश्य भेजें उनका प्रकाशन किया जाएगा जबकि वैवाहिक, जन्मदिन, पुण्यतिथि एवं बधाई सम्बंधि समाचार केवल सदस्यों के ही प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका का प्रकाशन समाज को जागरुक बनाने तथा आसपास चल रही गतिविधियों से वाकिफ कराने के लिए है अतः पूर्णतः सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। **- सम्पादक**

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

'सुविधा' को दुरुपयोग मत करो

'राम' कने एक बार कई से ज्यादा पइसा अई गया तो उने सुविधा देखी के श्याम के जरुरत पड़ने पे पइसा उधार दई दिया। उने मन से ज श्याम की स्थिति देखी के उकी मदद करी दी, पर 'श्याम' तो राम से उधार पईसा पाने को अधिकार समझी बैठियो। वी पईसा उने लौटई दिया, पर थोड़ा दिन बाद उससे ज्यादा पईसा उधार मांगने पोंची ग्यो। संयोग से उना टेम राम के पईसा की सुविधा नी थी तो उने मना कर दियो। अब श्याम के या बात भोत बुरी लगी। यां तक के राम ने जो पेला उकी मदद करी थी वा भी भूली ग्यो ने मन में उके गाली भी दी। म्हारो केने को यो मतलब है के नरा लोग अपना जीवन में सुविधा को दुरुपयोग करे। जिनके पानी भरपूर मिली रियो है वी उकी कदर नी करे। ऐसा टेम पे उन लोग होण को ध्यान रखनो चाहिए जो अभाव देखी रिया है। तमारे यदि पानी की सुविधा है तो उको दुरुपयोग मत करो। सम्भाली के वापरो। इका अलावा तमारी या आदतज पड़ी गई है के कोई तमारे उंगली पकड़ाए तो तम उको पोंचो पकड़ लो। म्हारो तो यो केनो है के जैसे तमारे सुविधा भोत पसंद है वैसे दूसरा की सुविधा को भी ध्यान रखो। तम घर से बायर निकल्या तो दूसरा वाहन वाला की परवाह नी करीके खुद पेलां निकलनो चाव, सामने वाला वाहन चालक की भी सुविधा देखी लो। किना कार्यालय में गया तो बाबू कई दूसरों काम करी रियो होगा तो तमारे तो जल्दी पड़ी है, उकी सुविधा को भी ध्यान रखी लो। तमारे कोई मदद करे तो उके अपनो अधिकार मत समझी लो, मदद पे मदद मांगने का पेलां सामने वाला की सुविधा को भी ध्यान रखी लो, घर में सब अडमाप है उको सदुपयोग करो जैसी सुविधा होण तमारे मिली है ऐसी सबके थोड़ी मिले पर तम उकी कदर नी करो। अपना काम और वेवार में तम जित्तो आराम ने सुविधा चाव उत्तो ध्यान सामने वाला को भी रखी लो तो या धरती स्वर्ग बनी जाएगी। तम अपनी वाली चलई के सुविधा को दुरुपयोग करो ने, मदद करने वाला का प्रति आभार व्यक्त करने का बजाय उके गाली बको। यो कां को न्याय है। म्हारो यो केनो है के तमारे सुविधा से जित्तो प्यार है, उत्तो ज दूसरा की सुविधा को भी ध्यान रखो तमारो जीवन स्वर्ग जैसो सुन्दर नी बनी जाय तो म्हार से की जो।

-प्रभा शर्मा

बेटियां वरदान है..

बेटियां वरदान है, ये ईश्वर द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद है, जो व्यक्ति बेटी को अभिशाप मानकर जन्म से पूर्व ही उनकी हत्या कर देते हैं, वे निश्चित रुप से अपने भाग्य का गला घोंट देते हैं। जब बेटी का जन्म होता है तो वह लक्ष्मी का आगमन है, उसके जन्म के साथ घर में सुख, समृद्धि एवं शांति का आगमन होता है। जब वह पालन-पोषण होकर युवावस्था में विवाह के पश्चात ससुराल जाती है तो दो घरों की तारणहार बनती है। गुणवान, सहनशील बेटी स्वयं पर नियंत्रण रखकर जीवनभर स्वयं भले ही दुःखी रहे परिवार के प्रत्येक सदस्य को खुश रखना चाहती है। आज के युग मेंजब बेटे अपने नई नवेली पत्नी का पल्लू पकड़कर चलने लगते हैं बेटियां अपने माता-पिता का सहारा बनती है वे समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी है कहा जाए कि आने वाला समय बेटियों का है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वर्तमान स्थिति में बेटियों का महत्व एवं ओजस्व जानते हुए भी भ्रुण हत्या, दहेज हत्या जैसी कुरितियां न केवल चिंता का बल्कि आश्चर्य का विषय है। इस वक्त जो बेटियां होकर अपनी बेटियां की हत्या कर रही है उन्हें बेटी का पैगाम है कि 'मां मैं तेरी बेटी हूं, मुझे मत मार मां, मुझे मत मार'' ''मैं ये दुनिया देखना चाहती हूं, तुझसे मिलना चाहती हूं''

मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है जो तू मुझे खत्म कर देना चाहती है मैं तो तेरा अंश हूं ना माँ। मुझे मत मार, मुझे मत मार।

उम्मीद है कि बेटी की यह करुण पुकार प्रत्येक व्यक्ति सुने और उसे खत्म करने का पाप न करें।

-कु. श्रद्धा शर्मा

नागर इन्टर प्राईजेस

दलहन एवं तिलहन (अनाज) के क्रेता एवं विक्रेता

प्रोपा.
एल.एन. नागर
राजेश नागर,
सुरेन्द्र नागर

शादी एवं पार्टी के लिये मारुती वेन एवं अन्य वाहन उपलब्ध है

रेल्वे स्टेशन चौराहा, ए.बी. रोड, शाजापुर, (म.प्र.) फोन 228711 मो. 9424000477, 9425034721, 9893800501

मैं ऐसा क्यों हूं?

डॉ. सतीश व्यास, प्लास्टिक सर्जन, एक प्रवासी,

इन्दौर। भारत वंशीय (मिशिगन, अमेरिका) व्यवसायिक कर्म के अतिरिक्त विनम्रता, प्रफुल्लता, मुस्कान, हास्य हंसमुखता लिए उनका लिबास और एक बहु-आयामी ललित कलाओं का पुंज प्रतिभाशाली व्यक्तित्व।

शैशव से आज तक जिन्दगी का सफर समस्याओं, और परेशानियों से जद्दो-जहद करते आसान नहीं रहा। मेडिकल अध्ययन प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के उपरांत देश में जीवयापन हेतु नौकरी पाने में असफल रहने के बाद, विदेश में परिश्रम व लगन के साथ आगे का विद्याध्यन कर, अमेरिका में स्थापित होकर निजी प्लास्टिक सर्जन के रुप में ख्याति प्राप्त की। आज भी विदेश में कर्मभूमि होने के बावजूद डॉ. व्यास अपनी मातृभूमि से जुड़े हुए है। विगत 30 वर्षों से निरन्तर प्रति वर्ष 2 बार भारत (इन्दौर) आकर जरुरत मदों की निःशुल्क प्लास्टिक सर्जरी कर मानवीय सेवा, समर्पण व कर्त्तव्य धर्म मातृ भूमि के प्रति निर्वाह कर रहे हैं। जन्म भूमि से कर्म भूमि (अमेरिका) की संघर्षपूर्ण प्रगति-यात्रा के जीवन सफर में जो अनुभव व परिस्थितियों से सामना हुआ उस अन्तर्वेदना ने इस व्यक्तित्व को सृजनात्मकता की दिशा में भी मोढ़ दिया। इन्हीं आन्तरिक उद्वेलन का प्रतिफल एक कुशल चित्रकार, मूर्तिकार, भावुक कवि आध्यात्मिकता, देवी-गुणों, सहजता, सरलता, बहुभाषी गायक और वाद्य-वादक के नवीन डॉक्टर का रुप अपनी सर्वांगीणता में सामने देखने को मिलता हैं। इन्हीं गुणों की लिपी बद्ध तस्वीर डॉक्टर साहब की पुस्तक 'मैं कवि नहीं हूं' सचित्र कविता संग्रह के रुप में प्रकाशित हुई है- संग्रह की कविताओं का सबसे मुखर रंग हास्य है, जो अपने पर, परिजनों पर और दोस्तों पर किये गये व्यंग से उद्धृत हैं। भावना का पथिक जीवन उनके मन का क्रंदन जो व्यंग के कड़े कवच में छुपा, उनकी कविताओ में भी उभर कर आया हैं। **डॉ. सतीश व्यास के कविता संग्रह का लोकार्पण, नई दिल्ली में माननीय डॉ. मुरली मोहन जोशी के मुख्य आतिथ्य एवं आदरणीय डॉ. गोविन्द व्यास की अध्यक्षता में दिनांक 14 दिसम्बर 2008 को हिन्दी भवन सभागार, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।** डॉ. सतीश व्यास जी को 'मां सरस्वती' की प्रतिमा भेंट कर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। सर्व श्री अल्हड़ बीकानेरी, श्री अरुण जेमिनी, डॉ. सुरेश अवस्थी, सुश्री नूतन कपूर, श्री दिनेश रघुवंशी, सरदार मंजीतसिंह, श्री नरेश शाण्डिल्य, श्री योगेन्द्र मुद्‌गिल, श्रीमती अंजू जैन कवियों ने अपनी रचनाओं के पाठ से उपस्थितों को आल्हादित किया।

❖ डॉ. सतीश व्यास की दो कविताएं ❖

मैं कवि नहीं हूं

मैं कवि नहीं हूं, केवल एक कुशल दर्जी हूं,
कल तक तो कपड़े सीता था,
अब जर-जर जीवन सीता हूं।
जीवन के अंतरद्वन्द्वों ने किये वस्त्र जब क्षीण,
तो रफू से किया रिपेअर।
दुष्टों ने की छीना-झपटी,
दुर्जन फाड़ गये जब चादर,
हृदय फटा और हुआ रक्त से रिक्त,
तब स्वाभिमान की सुई में,
मर्यादा के धागे डाले।
सीता गया, संजोता गया, स्वयं को प्रतिपल
पर हुआ नहीं मैं नग्न।
मैं कवि नहीं हूं केवल एक कुशल दर्जी हूं।

मित्र

यदि इस लोक के आगे कोई परलोक है,
और आत्मा की आह सुनने के लिए परमात्मा।
तो कभी जीवन की सरिता,
सागर में घुल मिल जाएगी,
तब किनारा एक होगा,
क्षितिज होगा एक,
जलाशय एक होगा,
फासले मिट जाएंगे,
और हम खड़े होंगे निकट,
तकते प्रभाती सूर्य को।
हम खड़े होंगे निकट
तकते प्रभाती सूर्य को।

प्रस्तुति- पुरुषोत्तम जोशी
528, उषा नगर, एक्स. इन्दौर

खंडवा नागर समाज के पूर्व अध्यक्ष

स्वर्गीय श्री गजानन काशीशंकर शर्मा- एक संस्मरण

मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री गजानन काशीशंकर शर्मा की 16 वीं पुण्य तिथि पर मैं उन्हें श्रृद्धा सुमन अर्पित करती हूं और मेरी याददाश्त के अनुसार उनके साथ बिताये हुये पलों कों मैं अपने सजातीय भाई बन्धुओं के साथ बांटना चाहती हूं। उन्हें याद करके ऐसा महसूस होता है मानो कल ही की बात हो। पिताजी का मुझसे विशेष लगाव था कारण मैं हमेशा उनकी बात मानती थी जहां उनकी बात में सहमति न देनी होती तो मैं तर्क वितर्क करके अपनी बात मनवा लेती थी। वे बहुत ही सरल स्वभाव के थे गुस्सा उन्हें बहुत ही कम आता था। यदि नाराज हो भी जाते और डॉट देते थे तो हम सहम जाते तब वह धीरे से व्यंगात्मक हंसी में मुस्कुरा देते थे जिससे हम पर उनकी डॉट का असर नहीं होता था। इस तरह हम अपनी गलती दोहराया करते थे।

मैं कक्षा 9 वीं में थी तब से वे मुझे अपना पूरा वेतन दे दिया करते थे और कहते थे तुम ही घर का सामान आदि देखो कभी भी हिसाब नहीं पूछा उनका वेतन ऑफिस का चपरासी लिफाफे में रखकर लाता था। बाद में जब हम पिताजी से पूछते की कितना पैसा है तो कह देते उसमें लिखा होगा सब बराबर है। उन्हें पैसे से मोह नहीं था उनका कहना था पैसे के पीछे भागोगे तो पैसा दूर जावेगा यदि नहीं भागोगे तो पैसा पास आवेगा। 35 वर्ष की सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्होंने एक बैंक में अपना खाता खोला। एक बार दीपावली की छुट्टियों में रेलवे पास निकालने के लिए हम से पूछा कि कहां जाना है। मैंने और मेरी छोटी बहन रेखा ने कश्मीर जाने की फरमाईश की पास निकाला किन्तु इटारसी में जहां हम रहते थे एक एक्सीडेंट होने के कारण उनकी छुट्टी रद्द हो गयी। चार दिन बात जब हम से पूछा अब कहां चलना है तो छोटी बहन ने नाराज होकर कहा अब मैं आपके पास से कभी यात्रा नहीं करुंगी। इस तरह बहन की शादी होने तक उसने पिताजी के पास में यात्रा नहीं की। उस वक्त मैं पिताजी के साथ अकेले बैंगलुर, मैसूर, हैदराबाद, नागपुर घूमकर आयी। मेरे पिता बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के थे जीते जी मैंने अपने पिताजी को ही भगवान का दर्जा दिया उन्हें ही अपना दोस्त माना। उनके जाने के बाद मेरा ध्यान आध्यात्म से जुड़ता चला गया।

पिताजी अपनी मां की बहुत इज्जत करते थे कभी उनसे तेज आवाज में बात नहीं की। दादी ने एक दिन कहा मुझे रामेश्वर की यात्रा करनी है तो पिताजी ने सपरिवार रामेश्वर की धार्मिक यात्रा करायी। बाद में मैंने अपने पिताजी के साथ द्वारका, रामेश्वर, मदुरै, तिरीचापल्ली, तिरुपति, मद्रास, बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि सभी तीर्थ स्थलों की यात्रा की। बद्रीनाथ की यात्रा सन् 1982 में जब उनकी उम्र 60 वर्ष की थी, केदारनाथ की चढ़ायी पिताजी ने पैदल की तब ऐसा लगा कि मैं अपने माता-पिता को स्वर्ग की सीढ़ी चढ़ा रही हूं। उन्होंने मुझे कभी बेटी नहीं समझा बेटा ही समझते थे। वह दिन भर में मेरा नाम 15 या 20 बार ले लेते थे उनके न रहने पर आज भी कभी-कभी कानों में शक्ति-शक्ति शब्द गूंज उठता है। इसी वर्ष दिनांक 1/9/08 से 11/9/08 तक मैं बीमार पड़ी रेलवे में सिक लगाया पूरी रात मैं बुखार में तपती रही। तब मुझे पिताजी बहुत याद आये मैं रातभर रोती हुई सो गयी। मुझे पिताजी सपने में दिखाई दिये। कहने लगे अरे तू तो मेरी बेटी नहीं बेटा है ठीक हो जायेगी रोती क्यों है। तेरी जीजी (हम अपनी मां को जीजी कहते हैं) तेरे पास है घबरा मत। तब हमने आंख खोलकर देखा तो हमारी माँ हमारे पास खड़ी पूछ रही थी बुखार तो नहीं है। उस वक्त सुबह के 5 बजे का समय था। इस तरह मेरे पिता निधन के बावजूद भी आज मेरे साथ है। दिसम्बर का माह आते ही 31 दिसम्बर 1992 की रात 10 बजे मैंने अपने पिता को गुलाब जामुन बनाकर खिलाये और आने वाले नये वर्ष की शुभकामनाये भी दी, 1 जनवरी 1993 को सुबह मेरी बेटी योगिता नागर की तबियत खराब होने के कारण पिताजी उसे डॉक्टर के पास ले गये। मैं रोने लगी कि मेरी बच्ची के चेहरे पर कैसे सुजन आ गई कैसे ठीक होगी तो पिताजी कहने लगे। ऐसे हम भी रोने लगते तो तुम्हें कैसे पालते। सब ठीक हो जायेगा और कहने लगे योगिता तो सब बच्चों में सबसे आगे निकलेगी। दोपहर को मैंने पिताजी के साथ बैठकर खाना खाया मेरी भाभी स्व. प्रतिभा शर्मा ने हमें उस वक्त गरम-गरम खाना परोसा खाना खाकर मैं अपने ऑफिस चली गई और भाभी शाम 5 बजे नेपानगर को रवाना हो गई। 5.30 पर जब मैं घर पहुंची तो मैंने देखा मेरी बेटी योगिता नाना को चम्मच से पानी पिला रही थी उस वक्त उसकी उम्र मात्र 4 वर्ष की थी घर में कोई नहीं था। पिताजी की तबियत खराब होने लगी मैंने तुरन्त मेरे काका श्री ऋषी कुमार शर्मा को बुलाया उन्होंने एम्बुलैंस से पिताजी को अस्पताल पहुंचाया 2 घंटे के भीतर वे स्वर्ग सिधार गये मैंने पंचाग में देखा उनकी राशि देखी जिसमें लिखा था लम्बी यात्रा होगी।

अच्छे इंसान को ईश्वर भी प्यार करते हैं उसके पश्चात 6 माह बाद मेरी दूसरी पुत्री विधी नागर ने जन्म लिया तब मेरे पिता मुझे सपने में दिखाई दिये और मेरी 8 दिन की बच्ची को उठाकर मंदिर ले जाने लगे तब मां ने कहा ये क्या कर रहे हो अभी महिने भर की भी नहीं तो कहने लगे भगवान के दर्शन में उम्र का क्या काम है। तब मैंने पूछा आप हमको छोड़कर क्यों चले गये वापस आ जाओ तो कहने लगे तुम नागर समाज गयी थी, हाटकेश्वर जयन्ती पर गयी थी, क्या राजेन्द्र मामा मिले थे तो मैंने कहा मैं कही नहीं जाती इस पर पिताजी कहने लगे नागर समाज में जाया करो माताजी के मंदिर में जाया करो। मैं एक दिन तुम्हें अवश्य मिलूंगा और सुबह 6 बजे मेरा सपना टूट गया। मैं हमेशा मंदिर जाती हूं हाटकेश्वर मंदिर भी जाती हूं पर मुझे कहीं भी उनके चरणों के निशान नहीं मिलते।

सुपुत्री- शक्ति नागर, खण्डवा

राम-कथा [राम व्यथा]

भारतीय समाज में भगवान रामचन्द्र का एक अलग ही स्थान है। कोई भी मुसीबत आने पर 'हे राम' या नमस्कार के स्थान पर 'श्रीराम' भी कहा जाता है। किन्तु सत्य तो यह है कि भगवान श्रीराम सहानुभूति के पात्र है। हर जगह इंसान ही सहानुभूति का पात्र क्यों?

बेचारे राम के नाम की हर जगह फजीहत है। ऑफिस में बॉस अनुपस्थित हो और शेष स्टाफ का मस्ती मारो कार्यक्रम चल रहा हो, मक्कारों की फौज हो तो 'रामराज चल रहा है' कहा जाता है। मक्कारों के बीच राम या राम का राज?

प्रकृति का नियम है। सीधे-सादे को लोग ज्यादा परेशान करते हैं। राम भी बड़े सीधे-सादे, सहनशील रहे होंगे. इनोसेन्ट टाईप। पिता ने कहा तो जंगल चल दिए। पत्नी ने कहा तो हिरण पकड़ने दौड़ पड़े। घर आकर देखा तो वाईफ गायब। आश्चर्य तो हुआ पर क्रोध नहीं के बराबर। इतने पर तो आजकल बड़े-बड़े अपराध तक हो जाते हैं। पत्नी को रावण के चंगुल से छुड़ाने में वर्षों खराब हो गए। टेन्शन अलग। सुनते हैं भगवान आकाश में उड़ लेते थे। फिर क्या प्रॉबलम थी? उड़कर फटाफट लंका पहुंचते और मामला निपट जाता। बरसों खराब हो गए।

एक बैंक शाखा के प्रबंधक तो बड़े ही नास्तिक निकले। कह रहे थे, 'राम ने ऐसा किया ही क्या जो इतना नाम चलता है राम का' पूरी जिन्दगी में एक बार साउथ गए और रावण को मारा। (जैसे कोई डिपार्टमेंट से एलटीसी सुविधा लेकर साउथ इंडिया घूमने गया हो) ''पूरा साउथ घूम चुका हूं'' वे बोले बड़े-बड़े विस्फोट करके संसार हिला दिया कई लोगों ने। यह बात अलग है कि उन पर ग्रंथ लिखने वाले वाल्मीकि और तुलसीदास मौजूद नहीं।

भगवान रामचन्द्र ने बहुतों का परोपकार किया। वे न होते तो बेचारे वाल्मीकि और तुसलीदास क्या लिखते? इतनी लम्बी स्टोरी मिली उन्हें लिखने को। रामचन्द्रजी यदि प्रोसीजर को लम्बा नहीं खींचते तो ये लोग क्या लिखते? महात्मा गांधी अंतिम समय में गोली खाते समय क्या बोलते? शवयात्रा में लोग राम की जगह क्या नाम लेते। राम के जैसा सीधा, नेक और परोपकारी आज तक नहीं हुआ। बेचारे अयोध्या से जंगल की ओर चले तो बिना किसी इंतजाम के। खराब रास्तों पर भटकने के लिये पैर में स्पोर्ट्स शूज वगैरह कुछ नहीं। लकड़ी की खड़ाऊ पहनी। हाथ में मोबाईल वगैरह भी नहीं कि मित्र-रिश्तेदारों से टच में रहो। एसएमएस ही कर दो, 'मैं जंगल में पहुंच गया' घरवाले मोबाईल पर लोकेट तो कर लेते। रिलायन्स, बीएसएनएल, एयरटेल, आयडिया वगैरह ने भी उस समय उनका कठिन समय में ध्यान नहीं रखा। ये सभी बाद में जागे। चलो कोई बात नहीं क्योंकि रखते भी तो जंगल में नेटवर्क कवरेज की समस्या तो आती ही। बेकार है सब कंपनियां। अब आई है बाजार में। अरे जब तुम हमारे भगवान का ही ध्यान नहीं रख पाए तो हम इंसानों की क्या औंकात? अब क्या। अब तो बहुत देर हो चुकी । हमारे भगवान तो चौदह साल तक नेट में उलझे रहे और आज हम वर्क में उलझे हैं।

आज हमारे रामचन्द्रजी होते तो ओलंपिक में भारत के लिए अभिनव बिन्द्रा के साथ तीरंदाजी में स्वर्णपदक ले आते। बाकी देशों के प्रतियोगी तो हमारे भगवान से डरकर पहले ही पीछे हटने लगते। आखिर भगवान है भाई। भगवान को कौन हरा सकता है? एकाध रजत पदक, साथ गया लक्ष्मण भी ले आता। चौदह साल जंगल में निशानेबाजी की प्रैक्टिस करते तो अभिनव बिन्द्रा को कहीं पीछे छोड़ देते। बीजिंग के बाद लन्दन के ओलम्पिक में भारत के प्रतिनिधि के रुप में राम का नाम अभी से पक्का हो जाता। बीजिंग से उनके स्वर्णपदक लेकर लौटने पर एयरपोर्ट पर स्वागत और जयघोष होता- 'जयश्रीराम' सीता भी जंगलों में कूदने-फांदने की प्रैक्टिस करते एक अच्छी एथलीट होती। ऊंची कूद में एकाध कांस्य पदक तो ले ही आती। पर अवसर प्राप्त नहीं हुआ। एक्सपोजर नहीं मिला। बेचारे राम का कैरियर स्पॉईल कर दिया कैकयी ने। हम हैं, कि अपने बच्चों का कैरियर बनाने में लगे है। दशरथ का गणित कुछ समझ में नहीं आया। बच्चों के कैरियर के लिए लोग क्या नहीं करते। दशरथ ने कैकयी को प्रामिस क्या किया, बेचारे राम फंस गए। उस जमाने में पैरेन्ट्स जागरुक नहीं थे। इतना बड़े टैलेन्ट बेकार हो गया। राम भी सीधे-सादे थे। पिता का आदेश मिला तो कुछ बोल भी नहीं पाए। आजकल के बच्चे तो बड़े-बड़ों को समझा देते हैं। पापा, आपको यह नहीं मालूम, ऐसा करो या वैसे करो। पापा ने कहा तो राम जीवन के चौदह वर्ष जंगल में बिगाड़ आए। वेस्टेज ऑफ टाईम। इतने समय में कम से कम तीन बार इंजीनियरिंग हो जाती है। अच्छी कम्पनी में प्लेसमेन्ट के साथ इतने वर्ष में पैकेज शानदार हो जाता है। अच्छे शहरों में सुविधा के साथ रहना मिलता है। जंगल में कुटिया में नहीं। बेचारे राम की जवानी बिगड़ गई। बच्चे कैरियर के लिए एक साल का ड्राप लेना भी रिस्क समझते हैं। रामचन्द्रजी के तो चौदह वर्ष में उम्र बढ़ने के साथ बाल सफेद होने लगे होंगे। सीताजी के भी। तस्वीरों में तो काले ही दिखते हैं। डाय वगैरह किया करते होंगे। कौन जाने।

बहरहाल शवयात्रा में 'राम नाम सत्य है' बोला जाता है जैसे राम के नाम की सत्यता पर कोई संदेह हो या राम नाम की सत्यता को हमारे सर्टिफिकेट की आवश्यकता हो। कहने की भला क्या आवश्यकता? राम का नाम यदि वाकई में सत्य है तो मांगलिक प्रसंगों में या वरमाला के समय क्यों नहीं? शादी के मण्डप में वरमाला को वधू द्वारा जब वर के गले में डाला जाए तो सब बोलो 'राम नाम सत्य है' इसमें गलत या बुरा क्या है? वधू की भावना होनी चाहिये कि उसका पति ही उसका राम है और यही सत्य है। हो गया राम नाम सत्य। आगे 'कुर्यात सदा मंगलम्।' हजारों देवी देवता हैं। सबकी अपनी-अपनी जवाबदारियां है। मरने के समय का काम भला राम ही क्यों देखे। अब ड्यूटी चेन्ज भी करो। मंगल प्रसंगों में शादी के कार्ड में राम को वेटेज मिलना चाहिये। शादी की पत्रिका में अन्य भगवानों और इंसानों के नाम के साथ कहीं पर लिखा हो, 'श्रीराम जयराम जयजय राम' या 'राम नाम सत्य है'। मांगलिक कार्य में, भजन संध्या में, कीर्तन में, आनन्द के अवसर पर गणेश, श्रीकृष्ण, भोलेनाथ, दुर्गामैया। मरने में राम का नाम। राम की ड्यूटी मुक्तिधाम में। चुनाव जीतने के लिये राम को घसीटो। आखिर राम को वापरने की कोई सीमा है या नहीं?

समय तेजी से बदल रहा है। नई पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान है। कई प्रतिभाएं है। पहले वाली बात नहीं कि बड़ों ने कहा और चुपचाप मान लो। बच्चे नए आईडियाज के साथ बड़ों को सलाह देते हैं। बुद्धि, अनुभव को सुपरसीड कर रही है। शुक्र है, राम-रावण की कहानी अब भी वैसे ही जीवित है। तेजी से बदलते युग में भीसभी उम्र के लोग प्रभु की शक्ति में विश्वास रखते हैं। समाज और लोग आस्तिक हैं यही परम संतोष है। जय श्रीराम।

प्रेषक-

विनय नागर

125, पलसीकर कालोनी, इन्दौर

मो. 9893449974, 9893944336

जहां अपरिचित व्यक्ति भी हंसकर मिलते हैं

मेरे जीवन की यह दूसरी विदेश यात्रा थी। इससे जुड़ी कुछ बातें व संक्षिप्त विवरण इस लेख के माध्यम से प्रकाशित कर रहा हूं। दो साल पहले हम दोनों (मैं व मेरी पत्नी) जब रोमानिया गए थे तब जो रोमांच था वह इस बार कुछ ज्यादा ही था। क्योंकि इस बार हम लोग यूरोप के कुछ सुन्दर स्थान देखने जा रहे थे। हमारी यात्रा 10 जून 08 से प्रारंभ हुई जब हम 'अवंतिका एक्सप्रेस' से मुंबई पहुंचे। वहां से 13 जून 08 की रात्रि में 'ऐयर फ्रांस' से हम रवाना हुए। एक बुरा अनुभव हमें इस यात्रा के प्रारंभ में देखने को मिला। हुआ यूं कि हमारे पास 4 सूटकेस (बड़ी साईज) थे। वहां का कर्मचारी बोला कि आपका सामान स्वीकृत वजन से अधिक है, अतः अतिरिक्त भाड़ा लगेगा। यह सब हमारे एयरपोर्ट्स पर ही होता है। जैसे-तैसे 2,000/- देकर आगे बढ़े। 1.40 (मध्य रात्रि) पर हमारा प्लेन 'पेरिस' के लिये उड़ा। प्रातः 8 बजे हम वहां से दूसरे प्लेन द्वारा 'एक्सटरडम' (हालेण्ड) पहुंचे जो मात्र $1^{1/2}$ घंटे का सफर था। हमने उतरकर सबसे पहले अपनी घड़ी वहां के समयानुसार मिलाई। भारत व नीदरलैंड के समय में $3^{1/2}$ घंटे का अंतर है। एयरपोर्ट पर मेरा कनिष्ठ पुत्र मनीष-परिवार सहित उपस्थित था। कार द्वारा हम लोग 1 घंटे की सफर पूरी कर 'रोटरडम' पहुंचे जहां मेरा पुत्र 'अर्सेलट-मित्तल कं.' में कार्यरत है नीदरलैण्ड में दो दिन बाद हम 'किन्डरडाइक' नामक स्थान पर गए जिसकी गणना "World Heritage"में होती है। यह स्थान पवन चक्कियां (Windmills) के लिये प्रसिद्ध है व दर्शनीय है। सबसे पहली 'पवन चक्की' यहां सन् 1738 में बनाई गई थी। नीदरलैंण्ड (हॉलेण्ड) समुद्रतल से काफी नीचे है और जल प्रबंधन में इन पवन चक्कियों से काफी मदद मिलती है। पूरे हॉलेण्ड में ऐसी पवनचक्कियां यहां-वहां देखने को मिलती है।

21 जून को हम 'ग्लीथॉर्न' नामक सुंदर स्थान पर घूमने गये। यह स्थान हॉलेण्ड का 'वेनिस' कहलाता है। चारों ओर हरी वादियों के बीच एक बड़ी सी झील देखी तो ऐसा लगा जैसे हम किसी समुद्र किनारे आ गये हो। उस झील में हमने दो घंटे बोटिंग का आनन्द लिया। बहुत ही जीवन का आनन्ददायक क्षण था।

रोटरडम में प्रति मंगलवार व शुक्रवार को हमारे गांवो के 'हाट' (साप्ताहिक बाजार) जैसा बाजार लगता है, पर इतना बड़ा व विस्तृत होता है कि हर चीज मिल जाती है। यह भी दर्शनीय होता है।

29 जून को हमारी यात्रा 'नीदरलैण्ड' की राजधानी 'एमस्टरडम' की रही। काफी बड़ा, सुन्दर भवनों से आच्छादित व चारों और पानी ही पानी, साफ-सुंदर सड़के, व्यवस्थित बाजार वाला शहर है। 3-4 घंटे घूमने के बाद हम वापस रोटरडम आ गए।

1, जुलाई 2008 को हम लोग फ्रांस, जर्मनी होते हुवे 'लक्जमबर्ग' पहुंचे। 'लक्जमबर्ग' बहुत छोटा देश है लेकिन यूरोप में इसका नाम तीसरे धनी देश के रुप में आता है। 'लक्जमबर्ग' चारों ओर मनोरम पहाड़ियों व झीलों से घिरा एक मनोहारी देश है। दो दिन घूमकर वापस रोटरडम आ गए।

हॉलेण्ड (नीदरलेण्ड) की एक विशेषता देसी-सुंदर से बसे गांव, चारों ओर हरियाली, नहरों का जाल, प्यारे-प्यारे लोग। **अनजान भी मिलता है तो मुस्कुराकर 'हलो' जरुर करता जबकि हमारे भारत में अपरिचित कभी नमस्ते भी नहीं करता है।** हॉलेण्डवासियों को फूलों से बहुत प्यार है- गांव हो या शहर हर घर के आगे विविध प्रकार के फूल जरुर मिलेंगे। जून से अगस्त तक के माह गर्मी के रहते हैं, अतः फूल भी खूब खिलते हैं बाकी तो बर्फ ही रहती है। मार्च-अप्रेल में ट्यूलिप को फूल खूब दिखाई देते हैं। नीदरलेंड की कार्य संस्कृति (वर्क-कल्चर) हमारे देश से बिल्कुल भिन्न है वहां प्रातः 9 से सायं 6 के बाद कोई कार्य नहीं करता है। साथ ही शनिवार, रविवार वीक एण्ड मनाया जाता है। हमारे यहां तो अधिकारी व कर्मचारी देर रात तक तथा छुट्टी के दिन भी कार्य करते हैं। दिनांक 18, जुलाई को हम दुनिया के स्वर्ग स्विटजरलैंड की यात्रा पर एक सप्ताह के लिये चल पड़े। रोटरडम से प्रातः 8 बजे चलकर कार द्वारा ब्रसेल्स होते हुए 'लक्जमबर्ग' पहुंचे। वहां रात बिताई एक दूसरे दिन स्विटजरलैण्ड हेतु निकले। रास्ते में फ्रांस, जर्मनी के कई गांव व शहरों से गुजरे। लगभग 12.30 पर 'स्ट्रासबोर्ग' नामक शहर होते हुवे शाम 4 बजे स्विटजरलैण्ड के 'इन्टरलेन' स्थान पर पहुंचे। यह जगह स्विस में सबसे सुन्दर है। भारतीय फिल्मों की काफी शूटिंग लोकेशन यहां है। सारे स्थान खूबसूरत बर्फआच्छादित पहाड़, बडीरे, झीलें सच में स्वर्ग में आ गए, ऐसा लगा। शहर के बीचो बीच नीले रंग के पानी की नदी देखी। 20, जुलाई को हम शिलयॉर्न पहाड़ पर केबल कार द्वारा पहुंचे। य ह स्थान समुद्रतल से 2938 मीटर ऊंचा व यूरोप का टॉप कहा जाता है। उपर तक पहुंचने में हमें 45 मिनिट लगे। वापसी में हमने 'ट्रमबॉक' जल प्रपात, जो जमीन के अंदर की ओर है, देखा। दस ग्लेशियर जलप्रपात है जिसमें भयंकर गर्जना के साथ 20,200 लिटर प्रति सैकण्ड के हिसाब से पानी गिरता है क्या कुदरत का करिश्मा था। स्विटजरलैंड में जहां-तहां बड़ी-बड़ी झीलें (समुद्र की अहसास कराती हुई) है पानी इतना निर्मल व स्वच्छ की हमारे देश की बड़ी-बड़ी नदी भी शर्मा जाए। इस प्रकार हमारी यात्रा सम्पन्न हुई। बहुत ही मजा आया। भाग्य ने हमें ये प्राकृतिक सौंदर्य दिखाया जिसके वर्णन को मैंने शब्दों में पिरोने की कोशिश की है सचमुच अवर्णनीय है। इतना सब कुछ देखने के बाद भी लगता है कि हमारा देश सचमुच महान है।

महेश त्रिवेदी, 200 सिल्वर ऑक्स, इन्दौर

हाल निर्माण के संकल्प के साथ, हुई चार लाख रुपये की व्यवस्था

पीपलरांवा। प्रबल इच्छा शक्ति एवं पारदर्शिता से किये जा रहे कार्य से कोई भी बड़ा से बड़ा संकल्प सहज रुप से पूरा हो जाता है। पीपलरांवा की नागर परिषद इसका उदाहरण है। पीपलरांवा में नागर समाज के मात्र 10 परिवार है जिन्होंने विगत 10 वर्ष में 9 लाख रुपये के निर्माण कार्य करवाकर समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

गत 17 नव 08 को नागरों के ईष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर पीपलरांवा के सानिध्य में नागर परिषद शाखा पीपलरावां के अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर की अध्यक्षता में परिषद की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिससे अध्यक्ष श्री नागर ने विगत 6 माह का लेखा विवरण प्रस्तुत करते हुए बतलाया कि स्वजन श्री कन्हैयालालजी व्यास, डॉ. श्री पूर्णानंदजी व्यास, डॉ. श्री धर्मेन्द्रजी नागर, श्री गोपालकृष्णजी व्यास तथा श्री रमाशंकरजी नागर से 1 जुलाई 07 को प्रत्येक से दस-दस हजार रुपये लिया गया ब्याज मुक्त ऋण 30 नव. 08 तक सभी को क्रमवार भुगतान कर वर्तमान में दस हजार रुपये की निधि तथा विगत 10 फरवरी 08 को पीपलरांवा में आयोजित नागर परिवार मिलन एवं सम्मान समारोह के अवसर पर नागर भूषण पं. श्री कमलकिशोरजी नागर द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि रु. 10,1111 (एक लाख एक हजार एक सौ ग्यारह) एफ.डी.के रुप में बैंक में सुरक्षित है। इस राशि के सदुपयोग हेतु परिषद ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि परिषद द्वारा कुंडीवाली भूमि 70X30 फीट पर एक सुन्दर हाल निर्माण किया जावें, जिसकी अनुमानित अधिकतम राशि 5 लाख रु. होगी। इनमें से शेष चार लाख रु. में से लगभग डेढ़ लाख रुपये स्थानीय (पीपलरांवा, इकलेरा माताजी एवं सोनकच्छ) स्तर पर ब्याज मुक्त ऋण संकलित किये जाने का लक्ष्य रखा गया जो पूर्ण कर लिया गया है। शेष ढाई लाख रुपये देवास, शाजापुर, इन्दौर एवं उज्जैन आदि नागर पुष्प वाटिकाओं में से ऐसे पुष्पों का चयन कर ईष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर पीपलरांवा को अर्पण किये जावें जो उदात्त एवं अर्थ सौरभ समृद्ध है। बैठक में उपाध्यक्ष श्री त्रिभुवनलाल मेहता, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल, डॉ. श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी, डॉ. श्री अशोक कुमार व्यास, राघवेन्द्र मेहता तथा श्री सुरेशचन्द्र त्रिवेदी सहित लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे। उक्त नगरों से लक्षपूर्ति हेतु गत 14 दिस. 08 को परिषद अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर के नेतृत्व में कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार शुक्ल, सचिव श्री रमेशचन्द्र नागर, डॉ. श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी, श्री चन्द्रकांत व्यास (दादाभाई), श्री गोपालकृष्ण व्यास एवं श्री अरविन्द नागर का एक शिष्टमण्डल प्रातः 8 बजे पीपलरावां से यात्रा पर निकला तथा 1,32605/- रु. ब्याज मुक्त ऋण का लक्ष्य पूर्ण कर वापस रात्री बारह बजे पीपलरावां पहुंचा। इस राशि में से रु. 42605/- पूर्ण समर्पित है। इस प्रकार इस समाचार के लिखे जाने (20 दिस. 08) तक रु. 392605/- संकलित एवं स्वीकृती प्राप्त हो गई है। अध्यक्ष श्री नागर ने बतलाया कि शेष एक लाख रु. की राशि 31 जनवरी 08 तक प्राप्त होने के लिये हम आशान्वित है। उल्लेखनीय है कि जिन महानुभावों द्वारा ब्याज मुक्त ऋण प्रदान किया जा रहा है उसके भुगतान तक की अवधि का ब्याज 5 प्रतिशत मासिक दर से नकद राशि के रुप में शिलालेख में उल्लेख किया जावेगा। यह राशि 31 दिस. 2010 तक हर दशा में भुगतान कर दी जावेगी। निर्मित हाल नागर भूषण पं. श्री कमलकिशोरजी नागर सेमली आश्रम के नाम समर्पित होगा तथा उन्हीं के कर कमलों द्वारा समारोह पूर्वक इसका शुभारम्भ होकर इस अवसर पर सहयोगदाताओं को यथोचित सम्मानित किया जावेगा। सहयोग अपेक्षित है।

1. श्री बृजगोपालजी मेहता, शाजापुर, 10000.00 सम्पूर्ण राशि श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित की गई, 2. श्री कन्हैयालालजी व्यास, पीपलरावां , 10000.00 राशि सधन्यवाद वापस की गई, 3. श्री गोपालकृष्णाजी व्यास, इकलेरा माताजी, 10000.00, तथैव, 4. श्री डॉ. धर्मेन्द्रजी नागर, सोनकच्छ, 10000.00, तथैव, 5. श्री रमाशंकरजी नागर, देवास, 10000.00 तथैव, 6. डॉ. श्री पूर्णानंदजी व्यास, उज्जैन, 10000.00, तथैव

परिषद् द्वारा चयनीत पुष्प (ब्याजमुक्त ऋण समर्पण राशि विवरण)

1. श्री कन्हैयालालजी व्यास, पीपलरावां 50000.00 स्वीकृती प्राप्त, 50000.00 आवश्यकता होने पर और स्वीकृति का आश्वासन, 2. श्री हरिनारायण नागर (अध्यक्ष), पीपलरावां, 10000.00, स्वीकृती प्राप्त, 3. श्री राजेन्द्र शुक्ल (कोषाध्यक्ष) पीपलरावां 10000.00, तथैव, 4. श्री गोपालकृष्णाजी व्यास, इकलेरा माताजी, 20000.00, तथैव, 5. श्री जनेषचन्द्रजी नागर इकलेरा माताजी 20000.00, सम्पर्क शेष है। 6. श्री डॉ. धर्मेन्द्रजी नागर, सोनकच्छ 10000.00 स्वीकृती प्राप्त, 7. श्री सुशील जी नागर (एड्व्होकेट) सोनकच्छ 10000.00, तथैव, 8. श्री रमाशंकरजी नागर, देवास 20000.00 तथैव, 9. श्री बृजगोपाल मेहता (स.आ.), शाजापुर, 50000.00, स्वीकृती प्राप्त, राशी शीघ्र प्राप्त होगी, 10. श्री राजेन्द्रकुमारजी नागर, शाजापुर, 10000.00, स्वीकृति प्राप्त, 11. श्री आशीषजी त्रिवेदी, इन्दौर 10000.00, सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त एवं श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित, 12. श्री प्रवीण कुमारजी त्रिवेदी, इन्दौर 10000.00, सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त एवं श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित, 13. श्री रमेशप्रसादजी रावल, इन्दौर, 10000.00, स्वीकृति प्राप्त, 14. श्री सत्यनारायण शर्मा, इन्दौर, 5101.00 सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त एवं श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित, 15. श्री संतोष कुमार नागर, इन्दौर 5001.00 सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त एवं श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित, 16. श्री रामकृष्णजी नागर, उज्जैन 10000.00 लोटाते समय 2501 रु. श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित करें, 17. श्री रामकृष्णाजी नागर, उज्जैन (इकलेरा वाले) 10000.00 स्वीकृति प्राप्त, 18. श्री कृष्णकांतजी व्यास, उज्जैन (इकलेरा वाले) 5001.00 स्वीकृति प्राप्त एवं सम्पूर्ण राशि श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित होगी, 19. डॉ. श्री पूर्णानंदजी व्यास, उज्जैन, 30000.00 स्वीकृति प्राप्त एवं आवश्यकता होने पर स्वीकृति का आश्वासन, 20. श्री बालकृष्ण मेहता, भोपाल (एच.इ.एल.), 2501.00 सम्पूर्ण नकद राशि श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित होगी, 21. श्रीमती दीपिका श्री रजत जैन, मेरठ, 5001.000 सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त एवं श्री हाटकेश्वर के चरणों में समर्पित ।

हरिनारायण नागर
अध्यक्ष नागर परिषद्, शाखा

चांद से नजदीकियां, मुल्कों के बीच दूरियां

युवा ही ला सकते हैं खुशहाली

राष्ट्रीय युवा योजना के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. महेन्द्र नागर से रवीन्द्र व्यास की चर्चा

इन्दौर। हमारी चांद से तो नजदीकियां बढ़ रही हैं, लेकिन मुल्कों के बीच दूरियां लगातार बढ़ रही हैं। श्रीलंका में चल रहे सर्वोदय आंदोलन का उद्देश्य यही है कि कैसे दुनियाभर के युवाओं को करीब लाकर जहरीली हो रही धरती पर खुशहाल विकास की बयार बहाई जा सके। इसके लिए युवाओं में मौजूद दुर्जन शक्ति को खत्म कर कैसे उनमें सृजनात्मक शक्ति का विकास किया जाए और इसका रचनात्मक इस्तेमाल हो, यही चिंतन होना चाहिए। यह कहना है राष्ट्रीय युवा योजना के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. महेन्द्र नागर का। वे हाल ही में श्रीलंका में पृथ्वी पर उत्तम स्थायी जीवन के लिए केन्द्रीकृत सामुदायिक गतिविधियां विषय पर हुई वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेकर लौटे हैं।

यह कॉन्फ्रेंस श्रीलंका में सर्वोदय श्रमदान आंदोलन की पचासवीं सालगिरह पर 4 से 7 दिसम्बर तक आयोजित की गई थी। डॉ. नागर कहते हैं कोलंबो के पास मोराटुआ गांव में हुई इस कांफ्रेंस में भारत, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, सिंगापुर, बेल्जियम, जापान, अमेरिका, नीदरलैंड्स और जर्मनी के प्रतिनिधियों ने शिरकत की। वे कहते हैं इस आंदोलन का उद्देश्य ही यह है कि कैसे युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा का राट्रीय विकास में रचनात्मक इस्तेमाल किया जा सके। आज श्रीलंका सिंहली और तमिलों के बीच हिंसा की समस्या से ग्रस्त है और श्रीलंका के चालीस प्रतिशत युवा सेना में हैं। यही कारण है कि श्रीलंका में युवाओं का देश के विकास में भरपूर इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। श्रीलंकाई श्रमदान आंदोलन के एआर आर्यरत्ने गांधी विचारों से प्रभावित हैं और वे युवाओं में जनजागृति पैदा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से यह आंदोलन चला रहे हैं। डॉ. नागर कहते हैं हम आने वाले पचास सालों में भारत की एक ज्यादा बेहतर और चमकीली तस्वीर देखना चाहते हैं।

इसके लिए जरुरी है हम आज के युवाओं के सामने ऐसा मॉडल रखें और ऐसा विजन दें कि वे हर तरह की समस्या से मुक्त एक शक्तिशाली देश को देख सकें। इसके लिए यह और भी जरुरी है कि अधिकतम युवाओं में नैतिक साहस, उदार मुल्यों के प्रति श्रद्धा, उसे हासिल करने की इच्छाशक्ति तथा आने वाली चुनौतियों के मद्देनजर एक विवेकशील रणनीति के लिए सक्रिय समर्पण पैदा किया जा सके। आज हमारा देश भी अलगाववाद, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। इसलिए ऐसे समय में इस तरह के कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। डॉ. सुब्बाराव के नेतृत्व में राष्ट्रीय युवा योजना इस दिशा में काम कर रही है। इसके अलावा देशभर में अन्य युवा संगठनों को भी इस दिशा में पहल कर ठोस काम करना चाहिए।

नागर महिला मंडल की बैठक 17 जनवरी को

इन्दौर। नागर महिला मंडल की ओर से आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं। सभी को सूचित किया जाता है कि मंडल की आगामी बैठक 17 जनवरी 2009 को आयोजित की गई है। जिसमें प्रतियोगिता 'मटर के व्यंजन' मीठा एवं नमकीन दो ग्रुपों में आयोजित है। व्यंजन घर से बनाकर लाना है, तथा अपनी विधि को एक पेज पर परिमाण सहित लिखकर लाना है। निर्णायक प्रस्तुति स्वाद एवं पौष्टिकता के आधार पर अपना निर्णय देंगे। सभी से अनुरोध है कि नये वर्ष का अपना एक संकल्प, उद्देश्य या विचार एक पेज पर लिखकर लावें, साथ ही अपना पासपोर्ट आकार का फोटो भी लावें, उसे पुस्तिका के रुप में संकलन किया जाएगा। पश्चात तम्बोला का आयोजन होगा। सभी के लिए लाल रंग के परिधान का सुझाव मान्य किया गया है। दिनांक 17 जनवरी 09 शनिवार, दोपहर ढाई से पांच बजे तक, स्थान 331 ए.डी. स्कीम नं. 74, अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई का निवास स्थान

सम्पर्क- श्रीमती शारदा मंडलोई 255626, डॉ. रेणुका मेहता 2550550, श्रीमती अरुणा व्यास 2493706

राहुल त्रिवेदी प्रतिभा सिंटेक्स में

इन्दौर। छब्बीस वर्षीय राहुल त्रिवेदी बी.टेक टेक्सटाइल टेक्नॉलॉजी तथा एम.बी.ए. मार्केटिंग। वर्तमान में इंटरनेशनल मार्केटिंग मर्चेन्डाइजर (फैशन एण्ड अपैरल) के पद पर प्रतिभा सिंटेक्स लि. इन्दौर में कार्यरत हैं। इससे पूर्व आप मराल ओव्हरसीज लि. एवं टेक्स ट्रेड इंटरनेशनल सूरत में कार्यरत थे। आप पर्यावरणविद् प्रो. डॉ. राकेश त्रिवेदी व श्रीमती रेखा त्रिवेदी के सुपुत्र तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार स्व. महेन्द्र त्रिवेदी के पौत्र एवं पटेल स्व. दुर्गाशंकर नागर के नाती है।

40, रुपराम नगर कालोनी, माणिकबाग रोड, इन्दौर फोन 0731-2475785

श्री यशपाल मेहता को पदोन्नति

इन्दौर। श्री यशपाल मेहता (सुपुत्र-श्री बी.के. मेहता-श्रीमती अंजना मेहता) ग्रुप मैनेजर प्रॉडक्ट एंड गेम्बल इंडिया लि. मंडीदीप की पदोन्नति हेड एशिया पेसिफिक (सप्लाय चेन एंड लेजिस्टिक) के पद पर हुई है। आप जनवरी 2009 से कम्पनी के सिंगापुर कार्यालय में अपना कार्यभार संभालेंगे. आप समस्त एशियाई देशों एवं आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड व कोरिया में कंपनी के उपरोक्त विभाग के अध्यक्ष होंगे. बधाई-अथर्व मेहता, सिमरन मेहता, श्रेया मेहता, श्री अतुल गौरी मेहता, श्री अशोक श्रुति व्यास एवं श्री निपुण व्यास।

श्री अतुल मेहता की विशेष उपलब्धि

इन्दौर। श्री अुतल मेहता (सुपुत्र- श्री बी.के. मेहता-श्रीमती अंजना मेहता हेड डायरेक्टर मार्केटिंग बजाज आलियान्ज जनरल इंश्योरेंस कं. लि. का चयन आलियान्ज एसई फ्यूचर लीडर कार्यक्रम में हुआ इस कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री अतुल मेहता को कम्पनी के वरिष्ठतम मैनेजमेंट में काम करने के लिए विशेष प्रशिक्षण मिलेगा. इस उपलब्धि पर बधाई। अथर्व मेहता, सिमरन मेहता, श्रेया मेहता, शांतनु त्रिवेदी, श्री प्रवीण-मीना त्रिवेदी एवं श्री यशपाल-सोनाली मेहता।

लाड़कुंवरबाई त्रिवेदी का देहावसान

इन्दौर। स्व. वामनरावजी त्रिवेदी (रतलाम वाले) की धर्मपत्नी तथा स्व. रमाकांत त्रिवेदी व श्री अनिल त्रिवेदी की माताजी श्रीमती लाड़कुंवरबाई त्रिवेदी का 96 वर्ष की आयु में भोपाल में निधन हो गया। वे पूर्व सांसद स्व. राधेलालजी व्यास की छोटी बहन थी तथा नगर निगम के पूर्व जनसंपर्क अधिकारी स्व. महेन्द्र त्रिवेदी, रसायन शास्त्री डॉ. आर.के. मेहता, डॉ. नरेन्द्र नागर (इंजी) तथा श्री सूर्यप्रकाश व्यास (शिक्षक) की सासुजी थी।

अपनों ने धोखा दिया, आप सहारा दे दो

इन्दौर। टेलीव्हीजन पर प्रसारित एक खबर छत्रपति शिवाजी टर्मिनल रेल्वेस्टेशन पर आतंकवादी हमले में पीड़ित एक महिला के पति की मृत्यु हो गई वह अकेली अपनी तीन माह की बालिका को लिए अस्पताल में उसका इलाज करा रही। महिला का देवर उसके पति का मृत्यु प्रमाण पत्र व मुआवजे के मिले रु. 50,000 की राशि लेकर लापता हो गया। महिला अपनी बालिका के साथ असहाय अवस्था में अस्पताल में करुणावस्था में अकेली पड़ गई। उसका व बालिका का भविष्य अंधकार मय हो गया। उसकी सहायता को कोई नहीं। एक संस्था 'आय लव्ह मंबई' सोमा महल प्रथम मंजिल मेरिनड्राट्व्ह मुंबई 20 ने उसके प्रति सहयोग करने की पहल की है। और बालिका के लालन-पालन हेतु कोष एकत्र करने की दिशा में टेलीव्हीजन पर अपील की है। यह खबर टेलीव्हीजन पर देखकर दिल पसीज गया व मन दुखी हो गया। इससे प्रेरित हो बालिका के सहायतार्थ कोष हेतु उक्त संस्था को अपनी क्षमता को ध्यान रखते रु. 100/- का मनी आर्डर उक्त संस्था को भेजें अन्य इच्छुक समाजसेवी श्रद्धा वा आस्थावश कोष हेतु राशि संस्था को सहयोगत्मक रुप से भेजें तो मां-बेटी का भविष्य संवर जाएगा। यह अपील विनंति है।

प्रस्तुति- पुरुषोत्तम जोशी
528, उषा नगर, एक्स. इन्दौर

लघुकथा

लड़का-लड़की

सात वर्षीय सोनू मम्मी के साथ भीड़-भरी सड़क पर जा रहा था। मम्मी को गंतव्य पर पहुंचने की जल्दी थी। भीड़ में पिछड़ न जाए या स्कूटर-साइकिल टक्कर न मार दे, इस भय से सोनू बार-बार मम्मी का हाथ या साड़ी का पल्लू पकड़ने की कोशिश कर रहा था। इससे मम्मी की गति में बाधा पड़ रही थी। इस बार फिर जब सोनू ने उसी प्रकार की कोशिश की, तो मम्मी झल्ला उठी- 'क्या लड़कियों की तरह बार-बार पल्लू पकड़ रहा है?'

-सूर्यकांत नागर

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान
(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)
10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

गागर में 'नागर'

नागर ब्राह्मण समाज के उद्भव एवं विकास का इतिहास यदि 90 पृष्ठों की पुस्तक में समाहित कर दिया जाए तो यह कार्य गागर में नागर को समाने जैसा है। सच भी है कि लोगों के पास आजकल न तो पढ़ने का समय है, न रुचि। जबकि वास्तविकता यह है कि पढ़ने से जितना ज्ञान प्राप्त होता है, उतना टीवी देखने या अन्य साधन से नहीं होता। लेखक एवं संकलनकर्ता डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता ने समाज के प्रतीक चिन्ह से लेकर ऐतिहासिक तथ्य, पौराणिक गाथा, संक्षिप्त इतिहास के साथ ही गोत्र, वेद, प्रवर, अवटंक, कुल देवी, गणपति और भैरव का सामान्य परिचय, उपजातियों के साथ द्विज जातियों के सोलह संस्कार, भी प्रस्तुत किए हैं। एक छोटी सी पुस्तक में लेखक ने बहुत कुछ समाने का प्रयास किया है, इसीलिए जब मैं समीक्षा का शीर्षक खोजने लगा तो 'गागर में नागर' से अच्छा शीर्षक ध्यान में नहीं आया। दरअसल प्रत्येक व्यक्ति को उसका इतिहास जानना चाहिए। राम की गाथा यदि हमें मर्यादा सिखाती है, कृष्ण की भागवत यदि कर्मयोग बताती है तो हमारा इतिहास हमारे अंदर आत्मशक्ति को पैदा करता है। हम उसी प्रकार बनना चाहते है, आचरण को अपनाते हैं तथा गौरवशाली होना चाहते हैं, जो हमारे पूर्वज थे। खासकर नई पीढ़ी के लिए इस प्रकार की पुस्तकें बहुत उपयोगी है, क्योंकि उनके बड़ों के पास अपना गौरवशाली इतिहास बताने का समय नहीं है। प्रत्येक समाजजन अपने मन में यह विश्वास रखे कि इतिहास अपने आपको दोहराता है।

पुस्तक- नागर ब्राह्मण समाज का उद्भव एवं विकास
प्राप्ति स्थल- डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता

एम 1/7, ए.बी.ए. क्वाटर्स, विक्रम वि.वि. परिसर भरतपुरी चौराहा, देवास रोड, उज्जैन फोन 0734-2510708 सहयोग राशी 51/-

लघुकथा

कार्य-शैली

जिले में अभी-अभी पदस्थ युवा जिलाधीश के समक्ष उपस्थित हो गरीब किसान ने पटवारी की शिकायत की- साब जी, पटवारी बहुत तकलीफ दे रहा है। न खेत ठीक से नापता है, न ठीक से हदबंदी करता है। लगान भी इस बार अधिक बता रहा है। ऊपर से पैसे मांग रहा है।

जिलाधीश सोच में पड़ गए। पहले उनके चेहरे पर क्रोध की रेखाएं उभरीं। फिर हलकी-सी मुस्कराहट के साथ उन्होंने कृषक के आवेदन पर मय सील-सिक्के के आदेश लिखा-प्रिय पटवारी जी, इनका काम बिना कुछ लिए कर देंगे तो बड़ी कृपा होगी।

-सूर्यकांत नागर

जियो तो ऐसे जियो

जीवन के रंग, खुशियों के संग

जिन्दादिल डॉक्टर श्री प्रदीप मेहता ने एस. नन्द एवं अतुल मित्तल के संयुक्त प्रयास से पुस्तक के रुप में खुशियों का गुलदस्ता प्रस्तुत किया है। दरअसल हमारे जीवन में ज्यादातर समस्याएं एवं तनाव स्वयं हमारे द्वारा ही उत्पन्न किए गए हैं। हम देखते हैं कि एक प्रसन्न व्यक्ति पूरे परिवार एवं समाज को प्रसन्न कर देता है तथा इसी प्रकार दुःखी व्यक्ति दुःख ही बांटता है। खुशी एवं प्रसन्नता बाहरी वस्तु नहीं है यह अंतर का मामला है। 'जीवन के रंग, खुशियों के संग' नामक यह पुस्तक विभिन्न तरीके बताती है खुशमय जीवन बिताने को

डॉ. प्रदीप मेहता

मित्रों हर पल को जिओ, अंतिम पल ही जान
अंतिम पल है कौन-सा, ये कौन सका है जान

सबसे खास बात यह है कि अनंत आवश्यकताओं के फेर में पड़कर हम उन वस्तुओं, साधनों का आनन्द नहीं ले पाते जो हमारे पास मौजूद है। इच्छाएं करना एवं सपने देखना वर्जित नहीं है परन्तु वर्तमान जीवन को संतुष्टीदायक तरीके से जीकर यह काम किया जाए तो 'सार्थकता' की प्राप्ति होती है। पुस्तक में जीवन को सुखमय बनाने के लिए 'अच्छी आदतें' समय की गुणवत्ता, महक रिश्तों की, प्रेम, विचारशील सहृदयता, शुभकामनाएं व आशीर्वाद, कृतज्ञता, कार्यकुशलता, तनाव का अंत, बिखेरें महक समाज के लिए, जीवन का ध्येय, जीवन की कर्मयोजना, सकारात्मक सोच, सपने बुनिए और उन्हें सच कीजिए, जीवन के अनमोल मूलमंत्र प्रस्तुत किए गए हैं। बंधुओं, इतिहास गवाह है कि डॉक्टर अच्छे लेखक साबित होते हैं, क्योंकि वे मानवीय भावनाओं संवेदनाओं से प्रतिदिन साक्षात्कार करते हैं। बात वह जो मन में जोश भर दे, किताब वह जो दिल की गहराईयों में उतर कर सोचने के लिए मजबूर कर दे। वास्तव में एस. नन्द, डॉ. प्रदीप मेहता एवं अतुल मित्तल की त्रिमूर्ति ने 'जीवन के रंग खुशियों के संग' के रुप में ऐसा गुलदस्ता प्रस्तुत किया है। जिसमें सुगंध भी है, प्रेरणा भी है, जोश भी है। पुस्तक परिवार के प्रत्येक सदस्य के पढ़ने योग्य है।

'जीवन के रंग, खुशियों के संग'
प्रकाशक- सेन्टर फॉर सेल्फ डेवलपमेंट
एल-201, शालीमार टाउनशिप, इन्दौर
फोन 2570777 मुल्य 100 रु.

श्री दिलीप मेहता रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित

इन्दौर। वर्ष 2008 का स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार देवास के वरिष्ठ शिक्षक श्री दिलीप मेहता को प्रदान किया गया है। उज्जैन के विक्रम कीर्ति मंदिर में 25 दिसंबर को नागर समाज के राज्यस्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रदेश के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री मंत्री श्री पारस जैन ने उन्हे इस पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार के रुप में श्री मेहता को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और एक हजार एक रु. की सम्मान निधि ा भेंट की गई। इस अवसर पर प्रतिष्ठित प्रवचनकार पं विजयशंकर मेहता, श्री अमिताभ मण्डलोई, म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र व्यास, प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के अध्यक्ष श्री रमेश मेहता प्रतीक सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। यह पुरस्कार हर साल शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाध ारण उपलब्धियों के लिए मध्यप्रदेश नागर समाज के किसी शिक्षक/शिक्षिका को दिया जाता है। पुरस्कार के लिए श्री मेहता का चयन नागर समाज के सात वरिष्ठ शिक्षकों की चयन समिति की अनुशंसा के आधार पर किया गया। वर्ष 1972 से शिक्षा विभाग में कार्यरत श्री दिलीप मेहता एक लोकप्रिय शिक्षक व प्रधान अध्यापक के रूप में देवास जिले मे पदस्थ रहे हैं। शिक्षक दिवस समारोह में श्रेष्ठ शिक्षक के रुप में सम्मानित श्री मेहता का शिक्षक कांग्रेस व जायंट्स क्लब सहित अनेक संस्थाओं ने सम्मान किया है। वे मध यप्रदेश कन्या दृष्टिहीन कल्याण केन्द्र के उपाध्यक्ष भी रहे हैं । यह पुरस्कार नागर समाज के वरेण्य तथा देवास के पूर्व सहायक जिला शाला निरीक्षक स्व. रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी पुत्री श्रीमती संगीता विनोद नागर ने स्थापित किया है जो कि स्वयं भी एक शिक्षक हैं। इससे पहले वर्ष 2006 में शाजापुर के राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक श्री हेमंत दुबे को और वर्ष 2007 में उज्जैन की वरिष्ठ शिक्षिका सुश्री शीला व्यास को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

(श्रीमती संगीता विनोद नागर)
अध्यक्ष चयन समिति

हम-तुम जीवन साथी

झाबुआ। दिनांक 23 नवम्बर 08 को सौ.कां. वंदना (सुपुत्री- श्री राजेश-सौ. लीना नागर) का शुभ विवाह चि. द्विजेन्द्र (सुपुत्र- स्व. श्रीमान बालकृष्णजी-स्व. पुष्पा व्यास) के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

इन्दौर। सौ.कां. रुपाली (सुपुत्री- रमाकान्त-सौ.सुधा नागर) का शुभ विवाह चि. नितीन (सुपुत्र-श्री रामचन्द्रजी-सौ. शकुन्तला नागर) के साथ दिनांक 12 दिसम्बर 08 को सानंद सम्पन्न हुआ।

इन्दौर। चि. चिरायु (सुपुत्र सौ. कादम्बरी-विनित कुमार व्यास) का शुभविवाह सौ.कां. ख्याति (सुपुत्री-सौ. वीणा बकुल भाई बुच के साथ दिनांक 7 दिसम्बर 08 को सानंद सम्पन्न हुआ।

भौंरासा (देवास)। सौ.कां पूजा (सोनू) (सुपुत्री- अशोक-सौ. प्रियवंदा नागर) का शुभ विवाह चि. आलोक (निलेश) (सुपुत्र- श्री राजेन्द्रकुमारजी-सौ. सुषमा पंड्या बजरंग नगर देवास) के साथ दिनांक 7 दिसम्बर 08 को सम्पन्न हुआ।

इन्दौर। चि. नवीन (सुपुत्र- श्री कैलाश-शारदा नागर) भाटगली उज्जैन का शुभविवाह सौ.कां.प्रतिमा (सुपुत्री- श्री मोहन भट्ट-सौ.आशा) के साथ दिनांक 11 दिसम्बर 08 को सानन्द सम्पन्न हुआ।

इन्दौर। चि. अमित (सुपुत्र- डॉ. महेन्द्र-सौ. ऊषा नागर) का शुभ विवाह सौ.कां. पूजा (श्री वीरेन्द्र-सौ. लता मण्डलोई) के साथ दिनांक 11 दिसम्बर 08 को सम्मन्न हुआ।

नवी सी कामना

नये वर्ष की शुभकामना
देने के लिये सारी सद्भावना
गर्व से उठाया शीश
हाथ और सरल दृष्टि
सामने देखा आपको पाया
निहाल हो के बधाई दे रहा
स्निग्ध भावना से भाव सहज
चाहत अनोखी प्रतित सी
आशीष पाने को नये वर्ष में
सुलभ नवी सी कामना

-व्रजेन्द्र नागर
इन्दौर

शुभकामनाओं सहित
शर्मा ब्रदर्स
ब्रोकर, कॉटन सीड, केक एंड आईल
4/2, मुराई मोहल्ला, श्री निकेतन, शॉप नं. 1 छावनी, इन्दौर
फोन 2706115, 2707115, मो. 94240-09615, 9826088115, 9826081115, 9926088115, 9009562115

वर्षा नागर के कोकिल कंठों से हुई श्रीमद् भागवत ज्ञान की वर्षा

बांसवाड़ा। माही गंगा के तट पर लोढी काशी बांसवाड़ा के लिए भागवत कथा का पारायण कोई नवीन आयोजन नहीं है प्रातः स्मरणीय श्री डोंगरे महाराज महंत श्री दीन बन्धुदासजी और स्वामी रामानंदजी के संरक्षकत्व में स्थापित श्रीमद भागवत समिति बांसवाड़ा कई आयोजन करवा चुकी है परन्तु बाल विदुषीसंत वर्षा नागर की 22 से 28 दिसम्बर 08 की यह पावन कथा बहुत हटकर अनूठी सिद्ध हुई है।

नलखेड़ा (जिला शाजापुर) में 20 अक्टूबर 1993 को रक्षाबंधन के दिन जन्मी इस बालिका का नाम स्वाभाविक रुप से उनकी मातुश्री श्रीमती लता नागर और पिता श्री महेश नागर ने 'रक्षा' के रुप में किया परन्तु भागवत में होने वाली अमृत वर्षा से अभिप्रेरित पत्रकारों ने कथा की समीक्षा करते समय त्रुटीवश नाम वर्षा कर दिया जिसके लिए बाद में उन्होंने खेद भी प्रकट किया परन्तु भागवत प्रेमियों ने उसे वर्षा के नाम से ही स्थापित कर दिया। माता-पिता तो शिक्षण व्यवसाय से जुड़े हुए हैं परन्तु दादाजी भागवत कथा करते हुए अस्वस्थ हो गये और अनायास ही इस 7 वर्षीय बालिका ने उसे पूरा करने का संकल्प ले लिया। उस रोज से यह पावन गंगा बहती रही, वाणी में निखार आता गया ज्ञान तो दैविक शक्ति के रुप में मिला ही था।

इतनी उम्र में देवी भागवत, रामकथा, शिवपुराण, गणेश पुराण के साथ-साथ वेद उपनिषदों की मूलरुप से मिमांसा श्रोताओं को अभीभूत करने के लिए काफी है। यही कारण है कि विलक्षण प्रतिभा की धनी इस बाल विदुषी ने 450 से अधिक स्थानों पर कथा आरम्भ करके विराम दे चुकी है। विदुषी से हमारा परिचय भी बहुत लम्बा नहीं था बांसवाड़ा में भगवती मण्डल प्रतिवर्ष शतचण्डी यज्ञ का आयोजन नागरवाड़ा में जगन्नाथजी की रथयात्राओं के दिनों में करता रहा है, उन्हीं दिनों कोटा राजस्थान में वर्षाजी नागर का कार्यक्रम चल रहा था उत्सुकता से श्रद्धालुओं ने सम्पर्क कर बांसवाड़ा में दो तीन घंटे का समय मांगा, नागरवाड़ा से आया प्रस्ताव विदुषी नागर ने हाथों हाथ लिया, कार्यक्रम हुआ उत्साहित लोगों ने पूरी भागवत कथा का प्रस्ताव समिति के माध्यम से रखा। संत श्री और पिता महेशजी को तुरन्त मेहसाणा (गुजरात) में श्री पन्नालालजी नागर का न्योता भी याद आया और उनकी स्वीकृती से इस भागवत कथा ने मूर्त रुप लिया।

22 दिसम्बर 2008 को सायं पावन हाटकेश्वर मंदिर नागरवाड़ा से शोभायात्रा आनन्द और उत्साह से कथा स्थल पृथ्वी क्लब, गांधी मूर्ति पर पहुंची। सभी के लिए विस्मय और कौतुहल का विषय था कि वर्षाजी इस उम्र में इतने विशाल पाण्डाल में भागवत कथा का रसपान करवायेगी? सबकी जिज्ञासा पर खरी उतरती विदुषी ने न केवल भागवत कथा की वरन् रामकथा के साथ-साथ भारत में पनप रहे आतकंवाद को ललकारा, और कहा समय आ गया है इसकी जननी को समाप्त करे। भारत माता का जयघोष करवाया, गीता और श्रीकृष्ण के मर्म की शिक्षा दी।

भ्रूण परीक्षण और हत्या को धिक्कारा और कहा यदि मेरे माता पिता भी इस प्रवृत्ति के शिकार होते तो न मैं होती न ही यह व्यासपीठ और आप भक्तों श्रोताओं का यह परिवार उन्होंने प्रत्येक सामाजिक पहलुओं को सजाया संवारा और नव श्रृंगारित रुप में सबके सामने पेश किया अपने खाली समय का भी उन्होंने खूब उपयोग किया। बांसवाड़ा सिद्ध क्षेत्र के सभी तीर्थों सिद्धविनायक गणेश, 51 शक्ति पीठों में स्थान रखने वाले त्रिपुरा सुन्दरी, मदारेश्वर महादेव, साँईबाबा मंदिर, अकलेश्वर में अपनी आस्था के दीप जलाये। स्वामी रामानंदजी की पावन याद में स्थापित वेद विद्यालय जाकर 10-12 वर्ष के वेद पाठियो का उत्साहवर्धन किया उन्हें अपनी व्यास पीठ पर सामूहिक रुप से बुलाकर स्वयं सम्मानित किया और श्रद्धालुओं से भी यही आग्रह किया विश्रांति की घड़ी आयी नागर बन्धुओं और माताओं ने पुझरो मानी लेजो और अये अमारे घेर जइये रे मा जय अम्बे गाकर संत प्रवर को अपनी अश्रुपुरित बिदायी दी-

मंजू प्रमोदराय झा
सी-20 सुविधीनगर, एरोड्रम रोड़, इन्दौर
वर्षाजी नागर
नलखेड़ा जिला शाजापुर (म.प्र.)
फोन 07361-223260, मो. 9425938776

डाकघर की विभिन्न बचत योजनाओं में निवेश कर आकर्षक लाभ कमायें

किसान विकास पत्र ❐ छह वर्षीय बचत पत्र ❐ सावधी जमा ❐ ५ वर्षीय आर.डी. खाता ❐ मासिक आय योजना ❐ लोक भविष्यनिधि खाता ❐ वरिष्ठ नागरिक बचत योजना ९ प्रतिशत ब्याज

सम्पर्क सूत्र- डाकघर बचत अभिकर्ता, कृष्णकांत शुक्ल
सी-५९, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड़, उज्जैन फोन २५११८८५, मो. ९४२५९-१५२९२

द्वारकाधीश की नगरी में ऐतिहासिक आयोजन

भगवान द्वारकाधीश के चरणों में प्रवाहित ज्ञान गंगा का अपार जन समूह ने लाभ लिया

द्वारकापुरी। श्रीमद् भागवत गीता में उद्धत है कि संत महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता है, क्योंकि इन संत महापुरुषों के दर्शन मात्र से ही कल्याण हो जाता है। लेकिन जब संत महात्मा तीर्थ में जाकर ज्ञान गंगा की वर्षा करे, उसका कितना लाभ मिलता होगा यह सोच से ही परे है। भगवान द्वारकाधीश के चरणों में मालव माटी के सपूत पं. श्री कमलकिशोरजी नागर ने ज्ञान गंगा प्रवाहित की तथा कोटिश जनता ने उसका रसास्वादन कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। भगवान द्वारकाधीश की राजधानी द्वारकापुरी में दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक आयोजित पावन ज्ञान गंगा में देश भर से जनसमुदाय उमड़ा। द्वारकावासियों का मत है कि उन्होंने इतना बड़ा एवं सुव्यवस्थित आयोजन आज तक नहीं देखा। चारों दिशाओं से आ रहे जनसमुदाय की व्यवस्था आयोजकगण श्री ओछवलाल कंचनदेवी माहेश्वरी एवं उनके सुपुत्रों श्री ओमप्रकाश, श्री रामगोपाल श्री राजकुमार ने प्रेमपूर्वक की। बढ़ते अपार जनसमुदाय को देखते हुए जहां श्रोताओं की बैठक व्यवस्था में तीन गुना वृद्धि करना पड़ी वहीं आवास एवं भोजन व्यवस्था में मानो स्वयं द्वारकाधीश भगवान की कृपा रही। 'विश्वास में भगवान है' ये वहीं द्वारकाधीश भगवान है जिन्होंने सुप्रसिद्ध संत नरसि मेहताजी की सुपुत्री नानीबाई का मायरा स्वयं आकर किया था। मालव माटी में माँ सरस्वती के वरद् पुत्र पं. श्री कमलकिशोरजी नागर की यह वर्षों पुरानी साध थी कि एक बार ज्ञान गंगा भगवान द्वारकाधीश के चरणों में प्रवाहित करना है, तथा पूर्व जन्मों के योग से लाखों लोग इस चरणामृत को पाने पहुंच गए उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि आयोजन की सारी व्यवस्थाएं भगवान द्वारकाधीश ने अपने हाथों में ले रखी है। तीर्थकथाओं की श्रृंखला में हुए इस आयोजन में आयोजक एवं श्रोता तो कृत-कृत्य हो ही गए। द्वारकावासी भी इस ऐतिहासिक आयोजन से अभिभूत हुए। आयोजकों ने द्वारकापुरी की सभी होटलें बुक कर ली थी तथा देशभर से पधारे अपने मेहमानों की पूरी शिद्दत से आवभगत की। उनका आग्रह था कि म.प्र. के अलीराजपुर कस्बे से हमारी उद्योग यात्रा शुरु हई जो जामनगर से दिल्ली तक पहुंची। प्रभु कृपा से जीवन में जो कुछ भी कण व क्षण पाया वह पुरुषार्थ में लगा रहे। इसी भावना को लेकर सर्वप्रथम सतगुरुदेव श्री शुकदेव मुनि के आश्रम शुकताल में हमें श्रीमद् भागवत कथा का निमित्त मिला। वही पुण्यफल परमात्मा ने सार्थक कर पुनः सत्संग सेवा का अवसर प्रदान किया। गुरु ने ही हमें गोविन्द तक पहुंचाया। गुरु से गोविन्द तक, शुकताल से द्वारका तक की यह पावन यात्रा हम सभी के लिए अविस्मरणीय है। आयोजकों की पवित्र भावना एवं पं. श्री नागरजी की वर्षों पुरानी सद्इच्छा के परिणाम स्वरुप स्वयं भगवान द्वारकाधीश ने एक बार फिर भक्त नरसि मेहता की तरह भक्त पं. श्री नागर के आयोजन को सफल बनाकर इतिहास को दोहराया है। इस ज्ञान गंगा का सार एवं प्रचार यही है कि क्रिसमस के दिन यह कथा शुरु हुई जिसने यह संदेश दिया कि अपने आपको धर्म की सलीब पर टांग दो तथा इसके समापन दिन 31 दिसम्बर को जो लोग पश्चिमी सभ्यता से ओतप्रोत हो अवगुणी एवं व्यसनयुक्त कर्म करते है वे धार्मिक एवं अध्यात्मिक तरीके से नए वर्ष का स्वागत करें एवं खुशियां मनाएं यह शिक्षा प्रदान की। जिस आयोजन की तारीखें ही स्वयं शिक्षाप्रद हो, अहंकार मुक्त आयोजक तथा सरलहृदय वक्ता तो द्वारकापुरी में स्वर्ग उतरना ही था। जो भरोसे हो जाते हैं, भगवान उनका साथ देते ही इस बात में संशय कहां है?

प्रस्तुति-दीपक शर्मा

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति का

प्रत्येक क्षेत्र में प्रोत्साहन का अनूठा प्रयास

उज्जैन। वर्तमान समय की मांग है कि बच्चों को पढ़ाई के साथ अन्य कलाओं में भी निपुण होना चाहिए। अनेक बच्चों में प्रतिभा जन्मजात होती है जबकि कुछ में कला के विकास के लिए अवसर प्रदान करना पड़ते हैं। म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति का प्रतिवर्षानुसार आयोजित 24 एवं 25 दिसम्बर को प्रतिभा प्रदर्शन एवं सम्मान समारोह अपने आप में अनूठा है यह प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए 'प्रोत्साहित' करता है।

जीवन बीमा निगम में कार्यरत रहे समाजसेवी श्री विष्णुप्रसादजी नागर ने 1978 में इस समिति की स्थापना की थी तब से लेकर आज तक समिति अपने उद्देश्यों में रत है। 24 दिसम्बर 08 को सर्दरात में कालीदास अकादमी में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें छोटे बच्चों के समूह ने श्लोक गायन, भजन गायन तथा नृत्य की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम की खास बात यह थी कि कम से कम उम्र के बच्चों के मन से मंच का भय निकालने के लिए उन्हें अवसर प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के प्रायोजक गांधीनगर (गुजरात) के श्री सुभाष भाई भट्ट थे। समिति के इस आयोजन में उज्जैन के अलावा अन्य शहरों की प्रतिभाओं को भी हिस्सा लेना चाहिए। 25 दिसम्बर को दोपहर विक्रम कीर्ति मंदिर में शिक्षा के क्षेत्र में अपना एवं समाज का नाम गौरवान्वित करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री पारस जैन थे जबकि अध्यक्षता म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास ने की, विशिष्ट अतिथि युवा उद्यमी श्री अमिताभ मंडलोई थे इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री रमेश मेहता प्रतीक समग्र नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष श्री नरेश राजा एवं श्री सुभाष भाई भट्ट भी उपस्थित थे. भाजपा सरकार के पूर्व कार्यकाल में उच्च शिक्षा मंत्री रहे, श्री पारस जैन ने विद्यार्थियों का आव्हान किया कि वे अपना लक्ष्य तय कर मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़े तथा मंजिल तक पहुंचने का यत्न करें। म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास ने कहा कि समिति का प्रतिवर्ष होने वाला यह आयोजन अनुकरणीय है। विशिष्ट अतिथि श्री अमिताभ मंडलोई ने अपने सम्बोधन में कहा कि विद्यार्थी जीवन में 'प्रोत्साहन' का बहुत महत्व है, यहीं 'प्रोत्साहन' आत्मशक्ति पैदा कर सफलता दिलाता है। **उन्होंने समिति को 51 हजार रु. का योगदान भी प्रदान किया।** समिति का प्रतिवेदन अध्यक्ष श्री रमेश मेहता प्रतीक ने प्रस्तुत किया तथा संचालन श्री अशोक व्यास ने किया। इस वर्ष का आशा-विष्णुस्वर्ण पदक वागीश जोशी (आत्मज- श्री विकास जोशी-श्रीमती वंदना जोशी को प्रदान किया गया। श्रीमती हेमकांता दामोदरजी मेहता स्मृति पुरस्कार (मंजूषा) हाईस्कूल स्तर पर अमन त्रिवेदी आत्मज श्री प्रवीण त्रिवेदी, देवास हायर सेकण्डरी स्तर पर श्री अनिरुद्ध व्यास आत्मज श्री अश्विनी व्यास, इन्दौर, विश्वविद्यालयीन स्तर पर अर्पण नागर आत्मज श्री विनोद नागर विशिष्ट उपलब्धि प्रांशु मेहता आत्मज श्री प्रवीण मेहता रतलाम को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पुरस्कृत एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चयन हेतु प्रदान किया गया। **कु. नेहा पंड्या आत्मज श्री एस. पांड्य उज्जैन को राज्य पुरस्कार (गायन) प्राप्त होने पर सम्मानित किया।** प्रोत्साहन से भरपूर दो दिवसीय आयोजन जहां प्रतिभाओं के लिए उत्साहवर्द्धक है वहीं पालकों को अपने संबंधि रिश्तेदारों एवं समाजजनों से मिलने, बतियाने का अवसर प्रदान करता है।

प्रस्तुति- श्रद्धा शर्मा

कुमारी नेहा सुपुत्री श्री शैलेन्द्र पंडया खंडवा को भारत स्काउट्स गाईड के अंतर्गत राज्य पुरूस्कार प्राप्त करने पर उज्जैन में आयोजित एक समारोह में मध्यप्रदेश के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री पारस जैन सम्मानित करते हुए।

जन्मदिन पर बधाई

चि. आर्य शर्मा
सुपुत्र- विशाल-पूजा शर्मा
जन्म दिनांक 29 जनवरी
कोटा मो. 09351669760

रुद्रपर्ण नागर
सुपुत्र- संजय-संगीता नागर
जन्मतिथि 18-01-1995

प्रत्युम्न नागर
सुपुत्र- संजय-संगीता नागर
जन्मतिथि 15-01-2001
56, बीमा नगर, इन्दौर (म.प्र.)
फोन (निवास) 4001214, मो. 94259-57903

चि. हर्षित नागर
सुपुत्र- कुलेन्द्र गायत्री नागर
जन्म तिथि- 5 जनवरी 1988
समस्त नागर परिवार अकलेरा (राज.)
फोन 07431-272506

ध्वज त्रिवेदी
(सुपुत्र- श्रीमती अभिलाषा-अमित त्रिवेदी)
7 जनवरी 2007
(प्रथम जन्मोत्सव 26 दिसम्बर 08 को केशवाश्रम धर्मशाला नागरवाड़ा बांसवाड़ा में आयोजित हुआ।)

श्रेयांस व्यास
(सुपुत्र- श्री सतीश-शोभा व्यास
17 जनवरी 2002
हाटपिपल्या जिला देवास
मो. 9300901267

सम्बंध सेतू है परिचय सम्मेलन

उज्जैन में आयोजित परिचय मेले में जुटे 300 से ज्यादा प्रतिभागी

उज्जैन। नागर ब्राह्मण समाज में जीवनसाथी परिचय सम्मेलन के प्रति रुचि बढ़ रही है इसका प्रमाण है उज्जैन में आयोजित परिचय सम्मेलन, जिसमें विभिन्न शहरों से 300 से ज्यादा प्रविष्टियां आई। आम तौर से ये परिचय सम्मेलन 'सम्पर्क सेतू' का काम करते हैं, बाकि देखा-देखी, पत्रिका मिलान एवं सम्बंध का काम यहीं से धीरे-धीरे शुरु हो जाता है, इसी प्रकार परिचय पुस्तिका में जो युवक-युवतियों के विवरण प्रकाशित हो गए हैं उनका विधिवत विवाह के लिए रजिस्ट्रेशन हो जाता है, हाथों-हाथ संबंध बने या न बने इसके माध्यम से 'होले-होले' संबंध बन ही जाते है।

म.प्र. नागर ब्राह्मण युवक परिषद शाखा द्वारा अ.भा. स्तर का यह परिचय सम्मेलन आयोजित किया। जिसमें 300 से अधिक प्रतिभागी एवं उनके अभिभावक जुटे। सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास, डॉ. जी.के. नागर, श्री विजय पुराणिक, श्री रामप्रसादजी रावल, डॉ. रामरतन शर्मा, श्रीमती वत्सला बेन, श्री मनीष मेहता सभी उज्जैन पं. रमेश प्रसादजी रावल (इन्दौर) श्री उपेन्द्र नारायण मेहता (देवास) श्री वीरेन्द्रजी नागर (जयपुर) श्री विष्णुदत्त नागर (रतलाम) श्री बालकृष्ण मेहता (भोपाल) श्री बाबूलाल नागर (मंदसौर) से पधारे अतिथियों ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। पश्चात मुंबई में आतंकवादी घटनाओं के विरोध में मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। अतिथियों का पुष्पहार से स्वागत सर्वश्री दिलीप मेहता, कुश मेहता, हेमन्त व्यास, शैलेन्द्र व्यास, विकास नागर, हेमन्त त्रिवेदी, मधुसुदन नागर, रमेश नागर 'परोत' दीपक नागर, श्रीमती नेहा मेहता, डॉ. अरुणा व्यास आदि ने किया। अतिथियों ने परिचय पुस्तिका 'सर्वमंगल' का विमोचन किया। अतिथि संबोधन में श्री वीरेन्द्र व्यास एवं डॉ. जी.के. नागर ने इस वृहद् आयोजन में युवाशक्ति के संकल्प एवं परिश्रम की सराहना की। सम्मेलन के प्रथम सत्र में पांच-पांच युवक-युवतियों को मंच पर बुलाकर उनका परिचय कराया गया। भोजनावकाश के पश्चात द्वितीय सत्र में अभिभावकों ने चयनित प्रत्याशियों को बुलाकर सम्पर्क किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्री लव मेहता, श्री कुश मेहता एवं श्री हेमन्त व्यास ने किया।

आयोजन के सुचारु संचालन हेतु आठ काउन्टर के माध्यम से जानकारी देने की व्यवस्था की गई। जिसमें तात्कालिक पंजीयन, परिचय सामग्री का वितरण, भोजन पास, सूचना केन्द्र, हाटकेश्वर समाचार एवं जय हाटकेश वाणी की सदस्यता, संत नरसि मेहता स्मृति सहायतार्थ कोष, स्वागत कक्ष, मीडिया कक्ष, प्राथमिक उपचार शामिल है। सम्मेलन को सुचारु रुप से संचालित करने हेतु प्रोजेक्टर की व्यवस्था हाल के बाहर परिसर में की गई थी। परिचय स्थल पर कुंडली मिलान की व्यवस्था पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी एवं पं. कैलाश शुक्ल ने देखी। इस आयोजन में म.प्र. के अलावा कोटा, हैदराबाद, नई दिल्ली, वाराणसी, बड़ौदा, जूनागढ़, कोलकाता, बांसवाड़ा, जयपुर, अहमदाबाद, भुवनेश्वर, उदयपुर, प्रतापगढ़, अजमेर, आगरा के प्रतिभागी भी सम्मिलित हुए।

प्रस्तुति- श्री कृष्णकांत शुक्ल

श्रद्धांजलिः श्रीमती लक्ष्मीबाई शर्मा

देवास। श्री रामेश्वर शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीबाई शर्मा का देहावसान दिनांक 16 दिसम्बर 08 को हो गया। इनका उत्तरकार्य दिनांक 28 दिसम्बर 08 को सम्पन्न हुआ जिसमें समाज के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सुपुत्र शिवकुमार शर्मा एवं सर्वश्री जानकीलाल, बाबूलाल, ओमप्रकाश, रमेशचन्द्र, मनोहरलाल, सत्यनारायण, कैलाशचन्द्र, अशोक, सुरेन्द्र, मुकेश, मोहन, बद्रीलाल, विजय, गणेश सहित समस्त शर्मा परिवार ने दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाने वाले समाजबंधुओं के प्रति आभार व्यक्त किया है।

श्रद्धांजलिः श्रीमती शांतादेवी नागर

उज्जैन। श्रीमती शान्तादेवी नागर (धर्मपत्नीः स्व. डॉ. श्री ललितकुमारजी नागर) का देहावसान दिनांक 25 दिसम्बर 08 को हो गया। इनका उत्तरकार्य दिनांक 6 जनवरी 09 को उज्जैन में सम्पन्न हुआ। सर्वश्री प्रदीप नागर, शरद नागर, अभय, योगेश, शान्तनु, लोकेश ने दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाने वाले समाजबंधुओं के प्रति आभार व्यक्त किया है।

कु. प्राची प्रावीण्य सूचि में

सागर। कु. प्राची नागर (सुपुत्री-श्री प्रमोद अलका नागर) ने सागर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल्स साईन्स सागर म.प्र. से बी फार्मा की परीक्षा 80 प्रतिशत अंकों से विशेष योग्यता प्राप्त कर प्रावीण्य सूचि में स्थान अर्जित कर सफलता प्राप्त की। वर्तमान में प्राची राजीव गांधी टेक्नीकल युनिवर्सिटी भोपाल के फार्मेसी विभाग में एम.फार्मा (फार्मास्युटिक्स) में अध्ययनरत है। ये श्री रामवल्लभजी नागर उज्जैन की सुपौत्री है। प्राची की इस उपलब्धि पर समस्त नागर समाज गौवान्वित है। भगवान हाटकेश्वर इन्हें उत्तरोत्तर प्रगति प्रदान करें।

कैसा रहेगा - २००९

❋ मेष राशि- नामाक्षर- चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

राशि स्वामी- मंगल, शुभवार- मंगल, रवि, गुरु, उपासना हनुमानजी

वर्ष के आरम्भ में ही आपको किसी सरकारी कार्य में सफलता मिलेगी स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा। फरवरी से मई के मध्य कुछ सावधानी रखे अन्यथा अपनी लापरवाही के कारण किसी कानूनी समस्या में आ सकते है। वर्ष के मध्य आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे। किसी जोखिम के कार्य में सफलता मिल सकती है। यात्रा से लाभ होगा। आपके विरोधी षड़यंत्र करेंगे परन्तु हानि नहीं पहुंचा पाएंगे। वर्ष के अंत में कोई दुःखद घटना हो सकती है। मई माह में आपको आर्थिक हानि का योग है। जून माह में आपको कोई बड़ा लाभ प्राप्त हो सकता है। पैसा उधार किसी को नहीं दे। अन्यथा सम्बंध खराब होने के साथ अपमान भी हो सकता है। वर्ष में हनुमानजी की आराधना करें विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

❋ वृषभ राशि- नामाक्षर- इ,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो

राशि स्वामी- शुक्र, शुभवार- शुक्र, शनि, बुध, उपासना- लक्ष्मीजी

वर्ष के आरम्भ में ही आपको संतान पक्ष से कोई चिंता मिल सकती है। बेरोजगार युवकों को रोजगार प्राप्त होगा। इस वर्ष व्यापारी वर्ग के जातक किसी विशेष कार्य पर खर्च का बोझ अधिक महसूस करेंगे नौकरी पेशा वर्ग का तबादला सम्भव है। आप कर्मक्षेत्र में सफलता व उन्नति प्राप्त करेंगे। अप्रैल माह में आपकों आर्थिक संकट के साथ मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस वर्ष परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। जून माह में उच्च अधिकारी वर्ग से सहयोग प्राप्त होगा तथा पत्राचार से आपको कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। वर्ष के अन्त में उन्नति हो सकती है। वृषभ राशि वाले जुलाई माह में खानपान में सावधानी रखें तथा चिकनाई का कम प्रयोग करें अन्यथा पेट की समस्या का योग है। इस राशि की महिलाये अपने जीवनसाथी के साथ किसी प्रवास पर जा सकती है। अगस्त माह में इस राशि की महिला वर्ग जो कार्यरत है। उनको भी आंशिक लाभ का योग है। महिलाओं की माँ दूर्गा को उपासना अधिक लाभ देगी। पुरुष वर्ग इस वर्ष शनिवार को मीठे जल से पीपल की उपासना करे। सितम्बर माह में संतान पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है। अक्टूबर-नवम्बर माह में धन के मामले में सावधानी अवश्य रखें। किसी ऐसी जगह निवेश न करें जहां हानि का थोड़ा भी योग हो अन्यथा पैसा डूब जाएगा। दिसम्बर माह में आप अपना मन थोड़ा पूजा-पाठ में की ओर अवश्य लगाये अन्यथा कभी भीषण समस्या में घिर जायेंगे। जनवरी-फरवरी में मानसिक चिंता परन्तु महिलाओं को लाभ, मार्च-अप्रेल-मई में धनलाभ तथा कर्म क्षेत्र यश प्राप्ति का योग है। अप्रेल में वाहन चालन में सावधानी रखे। जून-जुलाई में आर्थिक हानि तथा स्वास्थ्य समस्या। अगस्त-सितम्बर में यात्रा का योग साथ अधिक खर्च होगा। कोई अदालती निर्णय होने वाला तो प्रयास कर दिसम्बर तक टाले अन्यथा निर्णय आपके विरोध में जा सकता है।

❋ मिथुन- नामाक्षर- क,की,कू,घ,ड,छ,के,को

राशि स्वामी- बुध, शुभवार- बुध, शुक्र, शनिवार, उपासना- माँ दूर्गा

मिथुन राशि वालों के लिये यह वर्ष मिला-जूला फल लेकर आयेगा किन्तु इसमें शुभ फल अधिक होंगे। वर्ष के आरम्भ में ही आप लम्बी यात्रा करेंगे. इन यात्राओं से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। यह ध्यान रखे कि आपकी यात्रा भारत में ही होगी। इस वर्ष आपने यदि वाणी संयम तथा क्रोध पर नियंत्रण किया तो लाभ प्राप्त होगा। मिथुन राशि की महिलाये अंजाने लोगों से सावधान रहे अन्यथा अपमान होने का योग है। इस वर्ष मिथुन राशि के पुरुष व महिला वर्ग की सुख-सुविधा में वृद्धि होगी तथा कोई वाहन भी खरीद सकते है। किसी समारोह में सम्मिलित होने पर किसी से मित्रता होगी जो भविष्य में आपको लाभ देगी। वर्ष के अन्त में कोई विशेष कार्य सिद्ध होगा। आप अपने लोगों से अवश्य सावधान रहे क्योंकि उनसे ही घात का योग है। जनवरी-फरवरी में कोई समस्या हो सकती है। परन्तु आर्थिक लाभ भी होगा। मार्च से मई तक आपको मेहनत अधिक करनी पड़ सकती है। किन्तु यह मेहनत आपकी उन्नति में नये मार्ग प्रशस्त करेगी जून से जुलाई तक कोई विशेष बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। व्यापारी वर्ग को व्यवसाय के कारण कोई समस्या आ सकती हैं। अगस्त में आर्थिक लाभ का योग है। जो लाभ आपको प्राप्त होगा वह सितम्बर में संतान की विद्या के लिये खर्च करना पड़ सकता है। अक्टूबर में अपने और जीवनसाथी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे कोई शल्यक्रिया हो सकती है। नवम्बर-दिसम्बर में आपको आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक यश भी प्राप्त होगा।

❋ कर्क राशि- नामाक्षर- ही,हु,हे,हो, डा,डी,डू,डे,डो।

राशि स्वामी- चन्द्र शुभवार- सोम, मंगल, गुरुवार। उपासना- शिवजी

यह वर्ष आपके लिये लाभ प्राप्त करने का है। आप जितना परिश्रम कर रहे है। आपको उससे अधिक लाभ मिलेगा। किसी महिला के कारण लाभ प्राप्त कर सकते है। आपको वाहन पर भी खर्च की संभावना है। आप यदि कोई नया कारोबार करने का विचार कर रहे है तो आप की तलाश पूर्ण होगी। कर्क राशि की जो महिलाये नौकरी करती है। उनको अपने कर्मक्षेत्र में सावधानी रखनी चाहिए। वर्ष के प्रथम दो माह में कोई विशेष कार्य सफल होगा। किसी को धन उधार न दे अन्यथा धन हानि का योग है। आप इस वर्ष भोग विलास की वस्तु खरीदने में व्यय करेंगे। परन्तु बाद में इसके लिये आपको पछतावा होगा। जुलाई-अगस्त में स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखे। वर्ष के मध्य में आपको आराम अधिक मिलेगा। इसका कारण स्वास्थ्य खराब होना अथवा कोई अन्य कारण हो सकता है। सितम्बर माह में कोई शुभ समाचार से मन प्रसन्न रहेगा तथा कोई अधूरा कार्य पूर्ण होगा। व्यापारी वर्ग अपने व्यवसाय के कागज ठीक रखे अन्यथा कोई सरकारी समस्या हो सकती है। जिसमें आर्थिक हानि के साथ सामाजिक अपमान भी हो सकता है। जनवरी-फरवरी में अनेक प्रकार के कष्ट व आर्थिक हानि मार्च-अप्रेल में संतान की ओर से कोई समस्या परन्तु महिला वर्ग को आर्थिक लाभ मई माह में अचानक ही कोई बड़ा खर्च अथवा किसी को धन देना पड़ सकता है। जून-जुलाई में परिवार में किसी विवाद के कारण मानसिक कष्ट अगस्त में तबादले का भय परन्तु पदोन्नति का योग। सितम्बर-अक्टूबर में मित्र वर्ग से लाभ तथा अधिकारी वर्ग भी प्रसन्न नवम्बर-दिसम्बर में किसी विशेष कार्य में सफलता प्राप्त होगी। किसी अपाहिज को भोजन कराये। एक रोटी पर सरसो का तेल व एक रोटी पर घी लगाकर दोनों के बीच काले तिल व गुड रखकर कुत्ते को खिलाये।

❋ सिंह राशि- नामाक्षर- मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे।

राशि स्वामि- सूर्य, शुभवार- रविवार, मंगल, गुरुवार उपासना-ब्रह्माजी

इस समय आप शनि की साढ़ेसाती से गुजरे रहे हैं। इसलिये आपके प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन व तबादले के आसार बने हुये है। घर एवं कार्यालय में भी तनाव अथवा झगड़ा संभव है। आपके लिये एक यात्रा का योग अवश्य है। जो आपको लाभ दे सकता है। इस वर्ष आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना है। विशेषकर कमर के निचले हिस्से में। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। साथ ही कोई अशुभ खबर भी आ सकती है। आप अपने मित्रवर्ग व संबंधीवर्ग में थोड़ी सावधानी रखे अन्यथा हानि हो सकती है। मार्च माह के आरम्भ में ही आपके परिवार के किसी सदस्य के कारण विवाद हो सकता है। मई-जून में आर्थिक लाभ की संभावना है। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। पदोन्नति में आने वाली बाधाये दूर होगी तथा पदोन्नति होगी। यदि कोई विभागीय परीक्षा दी है तो उसमें सफलता प्राप्त होगी। अगस्त-सितम्बर में व्यय की अधिकता के कारण मानसिक कष्ट होगा। किसी स्थाई सम्पत्ति क्रय की योजना भी पूर्ण हो सकती है। परन्तु सम्पत्ति खरीदने से पहले कागजो का अच्छी प्रकार से अध्ययन कर ले। अक्टूबर-नवम्बर में किसी राजनेता से सहायता प्राप्त होगी तथा कोई नया कार्य भी आरम्भ कर सकते है। सिंह राशि की महिलाओं को शारीरिक कष्ट अधिक होंगे तथा परिवार में विरोध भी हो सकता है। जनवरी-फरवरी में किसी मित्र के कारण सामाजिक अपमान व वाहन दुर्घटना का योग है। इस समय आप पीपल आराधना का नियम बना ले तथा मीठा जल अर्पित करे। तो शुभ होगा। काले घोड़े की नाल का छल्ला अवश्य धारण करें।

✻ कन्या राशि- नामाक्षर- टो,पा,पी,पू,ष,ठ,पे,पो।

राशि स्वामी- बुध, शुभवार- बुध, शनि, शुक्रवार उपासना- माँ दुर्गा

इस वर्ष आप भी शनि साढ़े साती का सामना कर रहे है। परन्तु इस वर्ष आपको लाभ अधिक प्राप्त होंगे। आरम्भ में ही किसी विशेष मेहमान के आने से मन प्रसन्न रहेगा। आपको इस वर्ष परिश्रम अधिक करना पड़ सकता है। प्रथम दो माह में आप प्रत्येक विवाद से दूर ही रहे अन्यथा किसी गम्भीर संकट में आ सकते है। भाई बन्धुओं से विवाद की सम्भावना है। कोई अदालती निर्णय आपके पक्ष में हो सकता है। इस वर्ष धन का आवागमन लगा ही रहेगा। परन्तु आप चिन्ता न करें, आपको आर्थिक समस्या नहीं आयेगी। इस वर्ष आप गाय को घास अवश्य खिलाये। आप पीपल के वृक्ष के साथ केले के वृक्ष की भी सेवा करे तो अच्छा होगा इस वर्ष आप अपने मिलने वालो से मदद की उम्मीद न रखे। यदि आपकी महादशा भी शुभ है तो आने वाला समय बहुत अच्छा रहेगा। विशेषकर 6 माह आप अधिक उन्नति कर सकते है। अप्रेल में आप कोई नया कार्य अभी आरम्भ न करे। किसी नये व्यक्ति से भी नये सम्पर्क न बनाये। विशेषकर स्त्री से अन्यथा हानि होगी। व्यापारी वर्ग को व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी परन्तु किसी सरकारी मद में खर्च भी करना पड़ सकता है। किसी अन्य की तरफदारी न करे अन्यथा अपमान सहना पड़ सकता है। मई-जून में बहुत समय से रुका हुआ कार्य सिद्ध होगा। जिसमे आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। जुलाई-अगस्त में परिवार के वृद्ध सदस्य के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे अन्यथा किसी गंभीर रोग के कारण आपको खर्च करना पड़ सकता है। सितम्बर-अक्टूबर में आर्थिक लाभ अधिक होगा साथ ही कोई व्यय भी करना पड़ सकता है। नवम्बर-दिसम्बर माह आपके लिये अच्छा समय लेकर आयेगा जिसमे आपको पदोन्नति व सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा।

✻ तुला राशि- नामाक्षर- रा,री,रु,रे,ता,ती,तू,ते।

राशि स्वामी- शुक्र, शुभवार- शुक्र, शनि, बुधवार उपासना श्री लक्ष्मीजी

आपकी राशि के आधार पर यह वर्ष आपके लिये कुछ ऐसे लाभ के मार्ग प्रशस्त करेगा जिसकी आप वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे। जनवरी माह में जीवनसाथी व पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे आप इस वर्ष नया कार्य आरम्भ कर सकते है। परन्तु यदि किसी के साथ भागीदारी का विचार है तो अवश्य ही इस पर गम्भीरता से सोचे क्योंकि भागीदारी में किया गया कार्य आपको हानि दे सकता है। आपकी माता आपकी मदद करना चाहे तो उनसे आपको अवश्य ही लाभ प्राप्त होगा। मार्च माह में आपको शुत्र अवश्य परेशान करेंगे तथा कुछ हानि भी दे सकते है। महिला वर्ग से आपको दूर रहना है. जून के प्रथम सप्ताह में आपकी यात्रा का प्रबल योग है। इस यात्रा में आपकी हानि की संभावना है। जुलाई माह में आप सम्पत्ति के मामले में ध्यान रखे क्योंकि धन हानि का योग है। जुलाई माह में किसी अज्ञात व्यक्ति पर विश्वास न करे तो अधिक शुभ होगा। अगस्त-सितम्बर माह में स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखे। कर्मक्षेत्र में भी सम्मान प्राप्त होगा आपकी चिन्ता सितम्बर माह में समाप्त होने वाली है। अक्टूबर माह में कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता प्राप्त होगी। नवम्बर माह में विशेष ध्यान रखे क्योंकि आपके शत्रु आपको अप्रत्यक्ष रुप से लालच देकर आपका अहित करने का विचार बना सकते है। दिसम्बर माह पूर्णरुप से आपका है। इस माह में पुरुष वर्ग चाहे वह व्यवसायी हो अथवा नौकरी करते है। उन्हें लाभ प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे आपके जीवनसाथी की ओर से मदद अवश्य प्राप्त होगी वाहन चालन में तथा महिला वर्ग से सावधानी रखे मां लक्ष्मी के मंदिर अगरबत्ती का पैकट व लाल वस्त्र अर्पित कर आये।

✻ वृश्चिक राशि- नामाक्षर- तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू।

राशि स्वामी- मंगल शुभवार- मंगल, रवि, गुरु उपासना श्री हनुमानजी।भैरोजी

वर्ष के आरंभ में ही आपको उच्चाधिकारियों के मेल से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा परन्तु मानसिक तनाव रहेगा किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। जनवरी माह में आपको रुका धन मिल सकता है। साथ ही पत्र के माध्यम से कोई शुभ समाचार मिल सकता है। फरवरी में किसी महिला से सम्पर्क का योग है। मार्च माह में धन के मामले में सावधानी रखे। अप्रेल-मई माह में आपको अनेक मार्ग से कुछ मिलेजूले सुझाव आयेंगे जिसमें आपको अपने मस्तिष्क का प्रयोग करना है। इस समय में आपके निकट कुछ ऐसे नये मित्र आयेंगे जो आपको भविष्य में लाभदायक सिद्ध होंगे। जून माह में आप कोई यात्रा अवश्य करेंगे. मिलेजूले फल लेकर आया है। तो सितम्बर माह में आपको कुछ नये मार्ग प्राप्त होंगे जिससे आपके व्यवसाय को नया नाम व यश मिल सकता है। अक्टूबर माह के अन्त में संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। नवम्बर-दिसम्बर माह में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे किसी भी प्रकार के विवाद से दूर ही रहे। यदि आप नया वाहन क्रय करने का विचार बना रहे है तो अगले वर्ष के लिए टाल दे। क्योंकि इस समय क्रय किया वाहन आपके पास अधिक समय तक नहीं रहेगा। इसके साथ आप अपनी प्रथम संतान पर ध्यान दे।

✻ कुंभ राशि- नामाक्षर- गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,दा।

राशि स्वामी- श्री शनिदेव शुभवार- शनि,शुक्र,बुध उपासना- भैंरोजी

यह वर्ष आपको आरम्भ से ही व्यस्त रखेगा। जनवरी माह में आपके दैनिक कार्य अव्यवस्थित होंगे तथा परिवार में अनेक प्रकार की समस्याएं आयेगी जिसमें आपको धैर्य की अधिक आवश्यकता होगी। फरवरी माह में आप खान-पान में भी सावधानी रखे अन्यथा उदर रोग से पीड़ित हो सकते है। मार्च माह आपके लिये सम्मानदायक अवश्य ही सिद्ध हो सकता है। आपको सम्मान के साथ आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन कोई अचानक ही हानि का योग है। अप्रेल माह का आरम्भ ही किसी अशुभ समाचार अथवा दुर्घटना आदि से होगा परन्तु सरकारी कार्य में सफलता प्राप्त होगी। आपके प्रयास भी सफल होंगे। परिवार में वृद्धि तथा कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। मई-जून माह में भूमि विवाद तथा आवास परिवर्तन का योग है। महिला वर्ग से मदद प्राप्त होगी। सितम्बर माह में आपको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। विरोधी सक्रिय रहेंगे यात्रा का भी योग है। परन्तु यात्रा सावधानी से करे अन्यथा सामान चोरी का योग है। अक्टूबर-नवम्बर माह सभी वर्ग के लिये लाभदायक है। दिसम्बर माह में आप सावधानी रखे। किसी को न तो धन उधार दे और न ही किसी से ले। पानी के हाथ से पांच शुक्रवार की किसी विवाहित को सुहाग सामग्री दिलवाये तथा नीम के पेड़ को सोमवार को जल से सीचें।

✻ मीन राशि- दी,दू,थ,झ,त्र,दे,दो,चा,ची।

राशि स्वामी- देवगुरु बृहस्पति, शुभवार- गुरुवार, सोमवार, मंगलवार उपासना श्री विष्णु

वर्ष में आरंभ में विपरित लिंग के लोगों से सावधान रहे आपको आर्थिक हानि के साथ अपयश भी दे सकती है। जनवरी माह में आयी यात्रा में रुकावट दूर होगी तथा यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। फरवरी माह में आप किसी धार्मिक स्थल पर भी जा सकते है। आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी। मार्च माह में आपका मन अदालती कार्यवाही में होने वाली देरी से बैचेन रहेगा। अप्रेल माह में सरकारी नौकरी वालों को तबादले का भय रहेगा। मई माह में आर्थिक हानि अथवा चोरी आदि का भय रहेगा। जून-जुलाई माह में आपको अत्यन्त सावधान रहना है। अगस्त माह में आपको कर्मक्षेत्र में प्रशंसा मिलेगी तथा अधिकारी वर्ग भी प्रसन्न रहेगा। व्यवसायी वर्ग भी अपने व्यवसाय में होने वाले लाभ से प्रफुल्लित रहेंगे। सितम्बर माह आपके लिए कुछ समस्या लेकर आ सकता है। अक्टूबर माह में किसी विवाद का हल निकलेगा अथवा कोई अदालती निर्णय आपके पक्ष में हो सकता है। नवम्बर माह के आरम्भ में जो भी कार्य करें। सोच समझकर ही आगे बढ़ाये अन्यथा समस्या आ सकती है। दिसम्बर माह में आप कोई भी व्यय सोच-समझकर ही करें क्योंकि धन हाथ में कम ही रहेगा। किन्तु कोई कार्य रुकेगा भी वहीं क्लैश हो सकता है जो आपको मानसिक प्रताड़ना देगा।

विशेष कार्यक्रम 93-5एसएफएम पर अवश्य सुने
प्रति सोमवार- 11 से 1 तक
प्रति शनिवार- 12 से 2 तक
(अपने सुझाव के लिए पत्र व्यवहार करें)

पं. विजय नागर (देवी आराधक)
235 /ए, सुन्दरनगर मेन सुखलिया, इन्दौर
मो. 94250-67741, 94257-04668

❐ संरक्षक
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली-मालवा फोन 9329144644
श्रीमती शारदा विनोद मंडलोई
इन्दौर फोन- 0731-2556266
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल 07552552100
श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
इंदौर 07312450018
श्रीमती रमा सुरेंद्रजीमेहता 'सुमन'
उज्जैन 07342554455
श्रीमती अंजना सुरेंद्रजी मेहता
शाजापुर 07364229699

❐ प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा 99262-85850
❐ संपादक
सौ.रुचि उमेश झा 98260-46043
❐ सह सम्पादक
सौ.मीना प्रवीण त्रिवेदी 93290-78757
सौ.शीला जगदीश दशोरा
फोन-0731-2562419
सौ.तृप्ति निलेष नागर
मोबा. 9303229908
सौ.मंजू रविन्द्र व्यास
मो. 92298-25454
सौ.सोनिया विवेक मंडलोई
मो. 097121-38061
सौ.वन्दना विनीत नागर
फोन- 2594507
सौ.निशा पं.अशोक भट्ट
मो.9302105856
सौ.बिन्दु प्रदीप मेहता
मो. 94240-84744
सौ.ज्योति राजेन्द्र नागर
मो.93032-74678
सौ.ममता मुकुल मंडलोई
फोन- 0731-2484370
सौ.आशा योगेश शर्मा
मो. 94250-72237

❐ <u>प्रदेश संवाददाता</u> ❐
उज्जैन- मो.9977766777
सौ.तृप्ति संदीप मेहता
उज्जैन- मो.9301137378
सौ. अनामिका मनीष मेहता
शाजापुर-मो.94250-34818
सौ.चेतना विवेक शर्मा
खण्डवा-मो.98267-74742
सौ.शोभना सरोज जोशी
खरगोन-मो.98936-18231
सौ.वर्षा आशीष नागर,
रतलाम-मो.94251-03628
सौ.हर्षा गिरीश भट्ट
नीमच-मो.94240-33419
सौ.सावित्री रमेश नागर
नागदा-मो.98270-85738
सौ.शैलबाला विजयप्रकाश मेहता
भोपाल-फोन-0755-2463303
सौ.पूर्णिमा डॉ.पियूष व्यास
खड़ावदा-मो. 98267-32441
सौ.नैना ओमप्रकाश नागर
पचौर-मो.94244-65799
सौ.संध्या शैलेन्द्र नागर
रीवां-मो.-94258-74798
सौ.मालिनी किशन पण्डया
राऊ-फोन-0731-6538275
सौ.माया गिरजाशंकर नागर
माकड़ोन-फोन-07369-261391
सौ.सुनीता महेन्द्र शर्मा
पीपलरावां-फोन-07270-277722
सौ.शकुंतला हरिनारायण नागर
देवास-मो.98273-98235
सौ.सरिता मोहन शर्मा
सागर- मो. 98270-88588
श्रीमती अलका प्रमोद नागर

❐ <u>अंतर्राज्यीय संवाददाता</u> ❐
नई दिल्ली-श्रीमती मृदुला-सुधीर पांड्या
ई-921, सरस्वती विहार, दिल्ली- 34
फोन-09868048080
मुम्बई-सुश्री कांता बेन त्रिवेदी
2, प्रेम नगर सर विट्ठलदास नगर नार्थ
एवेन्यू रोड सांताक्रुज वेस्ट, मुम्बई
फोन-022-26604762
कोलकाता-सौ. शशि आर.के. झा
पी-6 डोबसन लेन हावड़ा-01
फोन-033-26665094
हैदराबाद-नवरत्न राजेन्द्र व्यास
के. चन्द्रकांत ज्वेलर्स
21-3-131/7, आगरा होटल के पास
चरकमान, मो.09346998456
इलाहाबाद-श्रीमती सुधा नित्यानंद नागर
60/45, ऊँचा मंडी, फोन- 0532-2240059
जूनागढ़-सौ. गिरा-दुर्गेश आचार्य
'अमर' गोकुल नगर
बी/एच. लोहियावाड़ी, जूनागढ (गुज.)
अकलेरा- श्रीमती गायत्री-कुलेन्द्र नागर
जिला झालावाड़ फोन 07431-272506
प्रतापगढ़-श्रीमती मंजू शिवशंकर नागर
'प्रज्ञा' सांवरिया कालोनी, एरियापति मार्ग
बांसवाड़ा-राजेन्द्रप्रसादजी त्रिवेदी
27/1,सुभाष नगर, फोन-09413626058
चित्तौड़गढ़-श्रीमती पुष्पा डॉ. रमेश दशोरा
39, नगर पालिका कालोनी,मो 9414097972
कोटा-श्रीमती आशा डॉ. अशोक मेहता
4-एफ/16, विज्ञान नगर, फोन-982910081
उदयपुर-श्रीमती शैला हेमन्त दशोरा
8,दशोरा की गली, मोती चोहट्टा
फोन-02942529620
जयपुर-सुषमा वीरेन्द्र कुमार नागर
सी-5, प.नै.बैंक अधिकारी आवासीय
कालोनी, जगतपुरा रोड, मालवीय नगर,
मोबा.-09414214143

सम्पादकीय कार्यालय

मासिक जय हाटकेशवाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर 452002
फोन (0731) 2450018, मो. 9425063129, फेक्स (0731) 2459026
awantikaindore.com, hotkeshvani@gmail.com, manibhaisharma@gmail.com

युवतियां

जीवन साथी परिचय-उज्जैन, २४ दिसम्बर

श्वेता प्रभातकुमार मेहता एम.ए.
30-3-1981, (उज्जैन 03.05 रात्रि)
फोन 0734-2510432

पूजा दिनेश नागर बी.सी.ए.
30-05-1988, (उज्जैन, 3.00 दिन)
मो. 9827637647

माधुरी अशोक नागर बी.ए.
15.1.1986, देहरी पचोर, 9 प्रातः
फोन 0731-2575645

स्मृति अशोक नागर बी.ए.
3-12-1983, (देहरी पचोर, 16.30)
फोन 0731-2575645

अदिति रणवीर नागर M.A. जर्नलिज्म
24-03-1983, (इन्दौर, 10.55 रात्रि)
फोन 0734-2521157

सुरभि अनिलकुमार नागर (बी.ई.)
12-3-1984, (उज्जैन, 10.10 रात्रि)
फोन 0734-2510240

मीता मधुसुदन नागर एम.बी.ए.
5-12-82, बड़नगर, (23.55 रात्रि)
फोन 0734-2520747

श्रृंगारिका विजयकुमार त्रिवेदी
18-04-85, (देहरादून, 2.45 रात्रि)
फोन 0734-2550704

जूही राजीव लोचन शर्मा बी.ई.
20-7-84, उज्जैन, (7.50 रात्रि)
फोन 0734-2511741

आद्या भरत मेहता बी.ई. टेलिकॉम
14-10-84, शिवपुरी (9.35 रात्रि)
फोन 0734-2514225

व्योमा चिंतामणी मंकोड़ी बी.कॉम.
28-11-1985, देवास (3.30)
फोन 07272-251465

डॉ. रुचि अम्बालाल मेहता
6-5-1980, कोटा (2.00 दोपहर)
फोन 0744-2380034

निधि नवीनचन्द्र नागर
11-05-90, उज्जैन (11.00 रात्रि)
मो. 9926418740

अर्पिता संतोष नागर बी.कॉम.
30-12-1987, इन्दौर (15.44)
फोन 0731-4060538

भारती महेश नागर एम.ए.
18-4-1987, ब्यावरा (2.05)
फोन 9826238434

तृप्ती शरदचन्द्र मिश्रा एम.बी.ए.
17-8-1980, इन्दौर (10.58 रात्रि)
फोन 0731-2534791

मोनिका डी.डी. गुरु
6-12-1983, उज्जैन, (6.45 प्रातः)
फोन 0733-2246856

रंजना राजेन्द्र व्यास एम.ए.
12-12-82, आलोट, 11.05 प्रातः
मो. 9981116769

मेनका कुलेन्द्र नागर एम.ए.
13-09-1984, माचलपुर, 4 प्रातः
फोन 07431-272506

प्रेरणा बालकृष्ण मेहता
8-2-1987, इन्दौर, (4.25 प्रातः)
फोन 9926611963

श्वेता महेन्द्रकुमार व्यास एम.ए.
23-4-1986, जयपुर (10.15 रात्रि)
फोन 0734-2517847

पूनम राजेन्द्र नागर एम.ए.
29-08-1984, नरसिंहगढ़ (20.55)
फोन 93030-02335

चेतना हरीशचन्द्र मेहता एम.कॉम.
15-02-1984, इन्दौर (9.50 रात्रि)
फोन 0731-2882863

श्वेता राजेन्द्र नागर पी.जी.डी.सी.ए.
7-3-1987, प्रतापगढ़, (9.55 रात्रि)
फोन 9424042137

पल्लवी कैलाशचन्द्र पंडित P.G.D.C.A.
31-10-1983, खालवा 12.40 रात्रि
फोन 0733-2248961

मोनिका कैलाशचन्द्र नागर M.S.C.
14-12-1981, भोपाल (9.30 प्रातः)
फोन 9826741159

तुलिका लक्ष्मीशंकर व्यास M.S.C.
30-04-1984, खण्डवा 11.55 प्रातः
फोन 98275-10566

शुभदा मधुर त्रिवेदी M.P.A.
27-06-1985, शाजापुर (16.44)
फोन 07364-228375

अदिति अतुल व्यास बी.कॉम.
22-9-1986, इन्दौर (2.10 अप.)
फोन 4071756

शीतल अरुण नागर बी.ए.
11-2-1984, उज्जैन, (6.00 प्रातः)
फोन 0734-2517013

नेहा धनराज व्यास डिग्री द्वितीय वर्ष
29-8-1990, उज्जैन (08.40 प्रातः)
फोन 939104983

झरना मनीष पण्डया डिग्री द्वितीय वर्ष
3-9-1990, हैदराबाद (4.45 सायं)
फोन 9393327738

शक्ति आर.डी. मेहता एम.ए.
1-11-1976, उज्जैन, 4.30 सायं
फोन 9977166556

स्मृति आर.डी. मेहता एम.ए.
6-5-1970, उज्जैन, (10.15 रात्रि)
फोन 9977166556

मयूरी विजय नागर एम.बी.ए.
4-9-1984, राजगढ़, (8.30 प्रातः)
फोन 07372-254753

संध्या अशोक नागर एम.ए.
26-1-1984, प्रतापगढ़, (1.45 दोप.)
फोन 09414418770

योगिता मोहनलाल नागर
21-3-1987, उज्जैन, (11.30 दोप.)
फोन 07270-277179

मिताली प्रभाशंकर मेहता
8-9-1988, मंदसौर (5.55 प्रातः)
फोन 9200260809

रितु शिवेशचन्द्र त्रिवेदी एम.ए.
30-9-1983, गोटेगांव (10.40 रात्रि)
फोन 0734-2559713

पूजा जगदीश नागर 12 वीं
12-2-1990, उज्जैन, (6.05 सायं)
फोन 07363-267460

ऋचा कैलाश मेहता
12-12-1990, केसूर, (5.55 सायं)
फोन 93294-71787

टीना जगदीशचन्द्र नागर B.S.C.
1-10-1986, नरसिंहगढ़, (07.45)
फोन 9300029212

वर्षा सूरजप्रसाद नागर बी.कॉम.
12-09-1986, नरसिंहगढ़ (03.00)
फोन 9300029212

सुषमा दिगम्बर शास्त्री
31-10-79, महिदपुर, 12.10 दोप.
फोन 07365-231694

नूतन मेघशंकर नागर एम एस सी
17-1-1985 बडायला (2.30 a.m.)
फोन 07462-224827

नेहा ओमप्रकाश भट्ट एम.बी.ए.
27-09-1985, नौगांव (07.45 सायं)
फोन 9893778525

रिचा विभूति शेखर नागर एम.बी.ए.
31-5-1982, काशीपुर (2.16 रात्रि)
फोन 011-26254384

लक्ष्मी कमल रावल 10 वीं
25-5-1984, इन्दौर (12.30 दोप.)
फोन 98272-26028

क्षमा स्व. श्रीराम पोद्धार एम.ए.
7-10-1980, खण्डवा (3.40 रात्रि)
फोन 98270-83393

रुकमा सत्यनारायण त्रिवेदी एम.ए.
21-12-77, खजराना, 12.45 दिन
फोन 0731-2595924

रीतू विनोदकुमार मेहता एम.कॉम.
15-7-1984, नरसिंहगढ़ 3.20 रात्रि
फोन 07375-245323

स्नेहा मुकेश नागर बी.ई.
13-7-1987, इन्दौर, 12.01 दोप.
फोन 9826123450

श्वेता मुकेश नागर बी.एस.सी.
12-10-1985, उज्जैन, 9.35 प्रातः
फोन 98261-23450

दीपा प्रद्युमराम नागर
7-10-1977, वाराणसी 10.40 सायं
फोन 0542-2387001

समीक्षा बलराम व्यास
09-09-1984, बनारस, 06.02 प्रातः
फोन 0542-2405311

क्षिप्रा बलराम व्यास बी.कॉम.
31-3-1983, नौगांव 1.30 रात्रि
फोन 0542-2405311

प्रीति रमेशचन्द्र नागर
3-8-1985, कोटा 4.42 सायं
फोन 0744-2431481

प्रतिक्षा रुद्रशंकर भट्ट P.G.D.C.A.
16-12-1979, वाराणसी, 16.23
फोन 0733-2224978

श्वेता सतीश नागर स्नातक
4-6-1986, शाजापुर, 9.45 प्रातः
फोन 9229888547

मेघा रमेशचन्द्र नागर P.G.D.C.A.
18-9-1983, शाजापुर, 6.55 प्रातः
फोन 9993988643

प्रियंका वल्लभ नागर
11-4-1983, उज्जैन, 7.15 सायं
फोन 9770333815

रुचिता सुभाष नागर एम.ए.
14-5-1984, नीमच, 03.10 रात्रि
फोन 9826053538

प्रिया नागर B.Com.P.G.D.C.A.
26-8-1986, मोड़ी, 2.28 रात्रि
फोन 07364-228797

रुचि जगदीश नागर बी.कॉम.
3-12-1987, शाजापुर, 5.00 सायं
फोन 07364-228797

अंजली सुरेशचन्द्र नागर एम.ए.
09-09-1987, शामगढ़ 4.5 प्रातः
फोन 07422-261345

वंदना सुरेश व्यास एम.एस.सी.
10-7-1988, ब्यावरा 8.15 प्रातः
फोन 99260-36104

मेघा दिनेश जोशी एम.बी.ए.
22-8-1980,
फोन 0731-2491007

अवनी मुकुन्द राय एम.ए. इंग्लिश
17-5-1977, भावनगर 22.45
फोन 0265-2774287

वीणा मनोहरलाल नागर
20-3-1978, प्रतापगढ़, 8.20 प्रातः
फोन 9799073114

ऋचा राकेश मेहता बी.कॉम.
8-1-1986, कोटा, 9.35 प्रातः
फोन 07366-244824

ऋतु राकेश मेहता
21-11-1987, उज्जैन 12.35 रात्रि
फोन 07366-244824

कीर्ति महेशचन्द्र नागर एम.एस.सी.
17-2-1982, लखनऊ, 18.53
फोन 0542-2436848

कविता स्व. महेन्द्र नागर M.A.B.Ad.
27-10-1983, नागदा, 11.30 रात्रि
फोन 9827571662

ऋचा प्रदीपकुमार मेहता M.S.C.
30-1-1983, भोपाल, 12.27 दिन
फोन 9826396490

गुंजन नीरज नागर बी.बी.ए.
6-9-1987, अलवर 10.55 रात्रि
फोन 07372-255202

स्वागता चेतन नागर एम.बी.ए.
27-12-1984, इन्दौर, 4.15 दोप.
फोन 0734-2555812

दीपिका कैलाशचन्द्र शर्मा बी.कॉम.
1-3-1988, रतलाम, 15.55
फोन 9329417666

सुरभि योगेन्द्रदेव पण्ड्या बी.कॉम.
11-4-1979, खण्डवा, 2.10 दोप.
फोन 0751-6453184

स्वाती चन्द्रकांत मेहता बी.एस.सी.
27-2-1976, रतलाम, 1.27 रात्रि
फोन 07412-243440

हर्षा विरेन्द्रकुमार नागर बी.पी.टी.
1-9-1986, जयपुर 10.15 रात्रि
फोन 0141-2751011

माधवी बालचन्द्र भट्ट एम.कॉम.
21-10-1973, बोतड़ 8.40 प्रातः
फोन 0265-2785938

सोनिया ब्रजगोपाल मेहता M.B.A.H.R.
5-9-1984, शाजापुर, 9.40 प्रातः
फोन 07364-229699

कोमल राधेश्याम शर्मा मिडिल
28-3-1984, डेलची, 12.12 दोप.
फोन 9425494281

अदिति स्व. राकेश भट्ट एल.एल.बी.
30-10-1982, नौगांव, 5.15 प्रातः
फोन 0751-2328038

शिल्पी सुरेश भट्ट एम.एस.सी.
14-11-1982, नौगांव, 2.15 दोप.
फोन 0751-2328038

दृष्टी दीपक मंडलोई एम.एस.सी
6-4-1982, उज्जैन 9.50 रात्रि
0734-2521107

ऋचा सुनिल दवे एम.सी.ए.
28-3-1986, उज्जैन, 2.00 प्रातः
फोन 0734-2585479

दिव्या राजकुमार शर्मा P.G.D.C.A.
16-5-1985, बेरछामण्डी, 8.40 प्रातः
फोन 07363-235131

हर्षा वशिष्ठ नागर एम.ए.
20-7-1982, उज्जैन, 2.20 दोप.
फोन 98263-61992

निधि भुवनेश्वर भट्ट बी.ए.
15-1-1988, खण्डवा, 7.15
फोन 0733-2224668

पूजा देवेन्द्रराय झा बी.कॉम.
13-1-1977, अलीगढ़, 00.35 रात्रि
फोन 033-23454002

अंजना मनोहरलाल नागर एम.ए.
8-9-1985, इकलेरा, 5.00 प्रातः
फोन 9977477043

युवक

अतुल देवेन्द्र मेहता बी.ए.
14-4-1983, नलखेड़ा, 10.25 प्रातः
फोन 0734-2556535

प्रणव ओ.पी. नागर बी.सी.ए.
19-2-1984, उज्जैन, 9.20 प्रातः
फोन 9302222333

रुपेश महेश नागर एम.कॉम.
26-2-1983, उज्जैन 10.15 प्रातः
फोन 0734-2554515

अभिषेक विजय त्रिवेदी एम.बी.ए.
14-10-1983, देहरादून 2.30 दोप.
फोन 0734-2550704

नीरज शैलेन्द्र रावल एम.कॉम.
2-10-1979, शाजापुर, 9.30 प्रातः
फोन 0734-2520789

रवि वरुण पोद्धार 12 वीं
3-12-1980,मुण्डली डागी 7.15 प्रातः
फोन 9981583332

हिमांशु महेश भट्ट एम.आई.बी.
15-6-1983, उज्जैन, 7.10 प्रातः
फोन 94240-46345

विशाल मणीकांत मेहता डी.सी.ए.
6-3-1984, अभयपुर, 1.00 दोप.
फोन 9827597655

मुदित राजेन्द्र व्यास एम.बी.ए.
12-12-1981, उज्जैन 10.12 प्रातः
फोन 9754457975

तनमय राजेन्द्र व्यास एम.बी.ए.
29-10-1980, उज्जैन 1.20 रात्रि
फोन 9754457975

सुनिल जगदीशचन्द्र नागर 12 वीं
4-10-1997, उज्जैन, 11.30 रात्रि
फोन 98272-93383

उदीत भगवतीप्रसाद पण्डित
4-6-1983, उज्जैन, 18.20
फोन 0734-2554107

मयंक योगेशकुमार मेहता (10 + 2)
28-11-1980, खण्डवा, 4.45 शाम
फोन 0734-2557989

विपिन राधेश्याम मेहता बी.ई.
24-11-1983, उज्जैन, 5.15 सायं
फोन 0734-2533137

अम्बर कामेश्वर व्यास मल्टीमिडिया
8-5-1982, शाजापुर, 5.20 सायं
फोन 0734-2556499

नरेश विजेन्द्रकुमार मेहता
15-8-1985, उज्जैन,
फोन 9329496997

निलेश स्व. राजेन्द्रप्रसाद त्रिवेदी 10वीं
3-12-1975, तराना, 9.00 रात्रि
फोन 2519640

ललित रमेशचन्द्र नागर बी.ए.
24-7-1981, रतलाम, 6.59 प्रातः
फोन 9977050413

आशुतोष ओमप्रकाश मेहता M.B.A.
5-8-1977, उज्जैन, 1.50 प्रातः
मो. 9993379998

नवीन संजय जोशी बी.कॉम.
22-9-1982, इन्दौर, 2.50 दोप.
फोन 9826951212

उज्जवल अनिल वसावड़ा 11 वीं
31-10-1970, मुंबई, 9.5 रात्रि
फोन 9924858065

अश्रुत अशोक मेहता टूरिज्म मेनेजमेंट
25-5-1978,अहमदाबाद,12.6 दोप.
फोन 0744-3291990

धर्मेन्द्र जितेन्द्र दवे बी.कॉम.
31-7-1974, बांसवाड़ा, 11.5 रात्रि
फोन 02962-248091

गिरीश स्व. जयंतिलाल नागर बी.ए.
26-11-1982, झाबुआ, 1.30
फोन 9301125255

पवन गिरिजाशंकर नागर 12वीं.
2-10-1981, राऊ 9.10 रात्रि
फोन 9926052287

जयेश गणेशप्रसाद नागर बी.एड.
16-4-1977, इन्दौर 5.33 सायं
फोन 07282-250241

राहुल राजेन्द्र व्यास
11-7-1985, मड़ावदा 2.35 रात्रि
फोन 9981116769

डॉ. राहुल अमृतराम नागर B.A.M.S.
8-4-1983, महू, 23.39
फोन 98269-96882

दीपक महेश नागर 12वीं
17-3-1987, नागदा, 8.00 रात्रि
फोन 9179931977

डॉ. सर्वेश के.पी. नागर B.A.M.S.
15-5-80, आगर मालवा, 1.45 दोप.
फोन 0734-259473

भावेश राजेन्द्र नागर बी.ई.
6-10-1981, नरसिंहगढ़ 23.22
फोन 93030-02335

सूर्यप्रकाश बालकृष्ण मेहता डी.एड.
16-3-1980, शाजापुर, 8.10 प्रातः
फोन 9926611963

अनुज विद्यासागर नागर 12 वीं.
8-11-1975, कोटा, 11.00
फोन 97844397532

मनोज स्व. रतनलाल शर्मा 10वीं
20-1-1984, कड़ोदिया, 3.40 दोप.
फोन 9407158497

राकेश राजेन्द्रनाथ नागर 12वीं
6-9-1972, जयपुर, 1.25 दोप.
फोन 0141-2615168

आलोक स्व. संतकुमार नागर
21-1-1975, राजपुर 5.00 प्रातः
मो. 9893916562

चिराग धीरेन मंकोडी एम.बी.ए.
30-5-1981, वडोदरा, 5.15 सायं
फोन 07272-253159

आशीष हरीशचन्द्र मेहता बी.कॉम.
29-6-1979, इन्दौर, 11.55 प्रातः
फोन 0731-2882863

आशीष महेन्द्रकुमार नागर एम.बी.ए.
2-2-1982, इन्दौर, 4.49 सायं
फोन 9893197695

अरुणकुमार आर.पी. त्रिवेदी B.B.A.
21-4-1974, उदयपुर, 8.20 प्रातः
फोन 0731-6548178

लवकुमार इन्द्रजीत दीक्षित बी.कॉम.
29-8-1981, खण्डवा, 4.30 प्रातः
फोन 0733-2223872

विवेक स्व.मधुसुदन जोशी डी.सी.ए.
28-3-1973, खण्डवा, 2.10 रात्रि
फोन 9826028822

कपिल अशोककुमार व्यास बी.कॉम.
6-8-1983, शाजापुर, 7.5 प्रातः
फोन 9302222622

सुनिलकुमार ओमप्रकाश नागर बी.ए.
3-12-1977, मन्दसौर, 9.39 प्रातः
फोन 02962-250510

गौरव गिरीशचन्द्र पंचोली 12 वीं
30-10-1979, खण्डवा, 6.35 सायं
फोन 099092-86664

विपुल गिरीशचन्द्र पंचोली बी.कॉम.
19-12-80, अहमदाबाद, 2.45 दोप.
फोन 099092-66645

राहुल रविनन्दन नागर डी.सी.ए.
14-10-1984, नलखेड़ा, 1.15 दोप.
फोन 07361-283569

सुमित विजयकृष्ण व्यास M.B.A.
24-3-1983, धार, 4.10 प्रातः
फोन 07363-233621

रुपेश सुरेन्द्र मेहता एम.ए.
1-7-1974, छिन्दवाड़ा 6.20 प्रातः
फोन 9229564649

मनीष नवरतन व्यास एफ.टी.
6-6-1984, हैदराबाद, 3.57 दोप.
फोन 93933-27738

गौरव भुवनेश त्रिवेदी एम.बी.ए.
10-09-1981, नीमच, 4.35
फोन 07369-262119

तन्मय ऋषिकुमार शर्मा बी.कॉम.
18-12-78, इन्दौर, 3.45 प्रातः
फोन 0731-2494549

प्रशान्त अवनिन्द्रलाल नागर ग्रेजुएट
6-4-1971, गोरखपुर, 13.21
फोन 09937132382

प्रणव आर.डी. मेहता एम.ए.
18-10-1971, उज्जैन, 6.45 सायं
फोन 07250-222635

अशोककुमार गंगाप्रसाद नागर
30-10-74,मनोहर थाना, 7 सायं
फोन 0731-274683

विनोद कैलाश नागर 8 वीं
5-9-1989, नहारिया,
फोन 0734-270184

हेमेन्द्र स्व. जयन्तिलाल नागर बी.ए.
13-10-1979, पेटलावद, 8.30
फोन 9301125255

सुनिल मनोहरलाल नागर बी.ए.
10-2-1976, खेरोट, 2.00 दोप.
फोन 9799073114

गगन दिनेश दवे विडियोग्राफी
9-6-1983, आगरा, 11.00 प्रातः
फोन 09997876435

सुनिल स्व. ईश्वरीलालजी नागर 12वीं.
17-12-1981, नागदा, 11.15 प्रातः
फोन 9926973521

अर्पित एस.के. मेहता एम.एफ.टी.
25-7-1984, भोपाल, 10.50 प्रातः
फोन 9826049677

संतोष मनमोहन नागर बी.ए.
18-8-1981, झालरा पाटन 12.55 रात्रि
फोन 9929326203

राजेश कमल रावल 10 वीं
15-6-1974, उज्जैन, 4.00 सायं
फोन 9827226028

भगवान लक्ष्मीकांत नागर बी.एड.
8-3-1983, सामगी, 8.40 प्रातः
फोन 07369-267411

दीपक रामनारायण नागर एम.बी.ए.
22-3-1985, कनार्दी,
फोन 9179978221

रविशंकर मणीशंकर नागर बी.ए.
17-7-1983, बुन्दी, 9.45 प्रातः
फोन 07462-254316

सौरभ दिनेशचन्द्र मेहता एम.बी.ए.
15-9-1980, नीमच, 3.40 रात्रि
फोन 0731-2555650

शंकर स्व. रामशकंर पण्ड्या बी.ए.
25-5-1973, खण्डवा 11.30 रात्रि
फोन 9425928010

सन्दीप लक्ष्मीनारायण नागर बी.कॉम.
16-5-1985, खजराना, 4.10 सायं
फोन 9826286521

सौमेश विनोद मेहता बी.एस.सी.
29-11-1982, शाजापुर, 5.38 सायं
फोन 07375-245323

भावेश रमेशप्रसाद रावल एम.सी.ए.
12-10-1983, इन्दौर, 15.40
फोन 0731-2362605

दुर्गाशंकर मांगीलाल नागर 12 वीं
9-3-1970, 7.00 रात्रि
फोन 9329004133

दीपक स्व. प्रेमशंकर नागर बी.ए.
27-7-1967, उदयपुर, 7.45 सायं
फोन 092515-24895

शैलेष स्व. श्री प्रेमशंकर झा 12 वीं
29-1-1974, बून्दी, 2.45 रात्रि
फोन 09251524895

मधुर राजेन्द्रकुमार नागर बी.ई.
25-8-1982, उज्जैन, 1.45 दोप.
फोन 0734-2550674

सुमित सुरेन्द्र मिश्र बी.ए.एम.एस.
9-2-1982, उज्जैन,
फोन 0734-2526667

आलोक स्व. विजय नागर
15-2-1985, नागदा, 2.30 रात्रि
फोन 07366-241345

अनिल रमेशचन्द्र शर्मा बी.एस.सी.
10-5-1987, राऊ, 6.30 प्रातः
फोन 9926088115

संजय पुरुषोत्तम रावल 10 वीं
25-7-1971, उज्जैन, 11.30
फोन 9926491869

अतुल पुरुषोत्तम रावल 12 वीं
18-6-1984, पालिया, 8.00 प्रातः
फोन 9926491869

अजय सोहनचन्द्र नागर बी.ए.
3-5-1978, निवाई 11.44 प्रातः
फोन 09314088763

आशीष राधेश्याम भारती ईंजीनियरिग
4-12-1987, देवास, 6.40 सायं
फोन 9827398272

अनिल कैलाशचन्द्र नागर एम.सी.ए.
28-11-1985,
फोन 9926027373

गिरजेश प्रमोद त्रिवेदी बी.ई.
14-10-1983, इन्दौर, 9.13 रात्रि
फोन 0734-2511753

राकेश नवलकिशोर जोशी बी.ए.
30-10-1969, खण्डवा, 12.30 रात्रि
फोन 9826571198

सुनिल स्व. गोकुलप्रसादजी शर्मा 8वीं
12-6-1961, इन्दौर, 2.30 दोप.
फोन 9926732566

नीरज मुकुन्द राय एम.एस.सी.
2-11-1978, बड़ौदा, 18.55
फोन 0265-2774287

नागेश तुलसीदास मेहता एम.बी.ए.
14-11-1978, खण्डवा, 6.13 प्रातः
फोन 0731-4068620

नितिन ध्रुवकुमार ठाकोर
27-11-1972, प्रतापगढ़ 10.30 प्रातः
फोन 9414928783

विवेक स्व. विनोदराम नागर बी.ई.
19-9-1976, कोटा, 7.00 सायं
फोन 0744-2476974

रजनीश निरंजन झा एम.बी.ए.
9-7-1976, अजमेर, 5.52 सायं
फोन 0145-2670107

प्रफुल्ल गोपालकृष्ण मंडलोई इंजीनियरिग
30-3-1980, भुसावल, 1.46 रात्रि
फोन 07366-242146

जितेन्द्र सरजीत मेहता 12 वीं
2-12-1981, खाचरौद, 2.45
फोन 93026-40248

नवलकिशोर आर.सी. नागर बी.एड.
9-6-1985,
फोन 9928401296

राकेश आनन्दीलाल मेहता B.S.C.
7-3-1972, महू, 12.30 दोपहर
फोन 09413666892

सचिन रमेशचन्द्र शर्मा एम.ए.
9-6-1980, झालावाड़, 7.45 प्रातः
फोन 07432-232820

समीर स्व. राजेन्द्र मंडलोई बी.एस.सी.
30-8-1973, खण्डवा, 8.30 रात्रि
फोन 09893465668

निशान्त विरेन्द्रकुमार नागर बी.ई.
3-4-1983, उदयपुर, 5.22 सायं
फोन 0141-2751011

अभिषेक कमलकांत नागर L.L.B.
22-12-1978, आगरा, 2.15 दोप.
फोन 0562-2855710

कपिल महेशचन्द्र नागर 10 वीं
4-1-88, छिंच बासवाड़ा, 7.58 प्रातः
फोन 9425944457

रजनीकांत महेशचन्द्र नागर 12 वीं
2-12-83, छिंच बासवाड़ा, 7.35 प्रातः
फोन 9425944457

धर्मेन्द्र स्व. कैलाशचन्द्र शर्मा स्नातक
11-8-1973, उज्जैन,
8.00 प्रातः

आशीष प्रकाशचन्द्र नागर M.S.C.
23-2-1984, बकानी 5.50 प्रातः
फोन 07370-271303

अशोक बालमुकुन्द नागर 8 वीं
1978,
उदयपुर

धीरज रावल रामकृष्ण नागर बी.ए.
5-4-1976, काशीपुर, 9.17 प्रातः
फोन 0291-2641998

सतीश कैलाशचन्द्र नागर 11 वीं
11-4-1983, करंज, 9.45
फोन 07369-236538

राहुल सुरेश रावल एम.बी.ए.
23-7-1981, इन्दौर, 6.40 प्रातः
फोन 0755-2773787

दीपक स्व. वेदप्रकाश नागर बी.ए.
5-3-1979, मोड़ी 9.30 प्रातः
फोन 9407126567

वैभवकुमार प्रमोदकुमार मेहता एम.ए.
26-1-1982, शाजापुर, 4.00 प्रातः
फोन 0731-2486736

विशाल महावीर नागर एम.कॉम.
25-9-1987, निनौर (राज.)
फोन 9827510092

संजय रमेशचन्द्र नागर बी.एस.सी.
21-7-1977, छापरी,
मो. 9993859275

मनोज मोहनलाल शर्मा एल.एल.बी.
14-7-1983, पचलाना, 6.48
फोन 9425494281

जितेन्द्र कमलकिशोर नागर 12 वीं
10-5-1985,नरसिंहगढ़ 10.30 प्रातः
फोन 9827267611

शैलेन्द्र कमलकिशोर नागर B.S.C.
13-3-1983,नरसिंहगढ़, 1.30 दोप.
फोन 9827267611

अभिषेक स्व. राकेश भट्ट बी.ई.एम.टेक.
16-10-1980, नौगांव, 6.20 सायं
फोन 0751-2328038

पुनित भगवतीलाल नागर बी.ए.
20-7-1988, उदयपुर,
फोन 0734-2464240

शरद मोहन नागर बी. कॉम.
28-2-1979, इन्दौर, 00.22
फोन 2551364

दिलीप रामचन्द्र नागर 12 वीं
7-5-1979, इकलेरा
फोन 9753201634

अभिनव कमलकांत नागर B.S.C.
17-12-1981, आगरा, 5.10 प्रातः
फोन 0562-2855710

कृष्णकांत शैलेन्द्र व्यास 12 वीं
9-12-1984, लसुलड़िया, 8.27
फोन 07364-270213

शुभम् भानुकुमार त्रिवेदी बी.एस.सी.
4-8-1982, रतलाम, 1.50 रात्रि
फोन 07412-263460

विनोद स्व.जानकीलाल मेहता एम.ए.
20-6-1979, दतिया, 11.00 प्रातः
फोन 9203200732

अशोक रामनारायण नागर 12वीं
5-5-1985, नाटाराम, 5.05
फोन 9826799785

निलेश स्व. विष्णुप्रसाद नागर बी.ए.
5-2-1983, नलखेड़ा, 19.30 दिन
फोन 9977096607

दुर्गाशंकर प्रभाशंकर नागर 8 वीं
7-1-1976, उदपुरा, 2.00 रात्रि
फोन 9753847271

रितेशकुमार हरिप्रसाद नागर
14-8-1980, झालावाड़
फोन 07432-246470

रोहित चेतन्यप्रकाश नागर 8वीं
उज्जैन फोन 9977745651

वैवाहिक युवती

कु. निधि अभयचंद मेहता
जन्मतिथि- 5-11-1980 (शाम 7.30 अजमेर)
शिक्षा - एम.एस.सी. (माईक्रोबायोलॉजी), एम.बी.ए. (एचआर)
सम्पर्क- बी-56, कालानी बाग, देवास
फोन (07272) 250446, मो. 9425048746

कु. पायल अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 18-1-1982
शिक्षा- बी.कॉम. (फैशन डिजाईनिंग में डिप्लोमा एवं पेन्टिंग)

कु. पूजा अशोक पंचोली
जन्मतिथि- 29-5-1983
शिक्षा- एम.कॉम. (पेन्टिंग व कम्प्यूटर मे दक्ष)
सम्पर्क- 0731-2559011, मो. 98264-10209

वैवाहिक युवक

अर्पित अभयचंद मेहता
जन्मतिथि 25-1-1982
शिक्षा- एम.बी.ए (आईटी एंड मार्केटिंग)
कार्यरत- रिलायंस कम्युनिकेशन मुंबई
सम्पर्क - (07272) 250446, मो. 94250-48746

अभिषेक सुरेश चौबे
जन्मतिथि 15-9-1978
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए.
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर (एच.आर.) एमएनसी, अहमदाबाद
सम्पर्क- 07929289330, 09427071853

विशेष सूचना

परिचय सम्मेलन हो या सामाजिक पत्रिका में वैवाहिक विज्ञापन दोनों का उद्देश्य रिश्तेदारी में सहयोग करना है तथा परिचय का संकेत मात्र उसको विस्तृत रुप तक ले जाकर वैवाहिक सम्बंध बना देता है। उज्जैन में आयोजित परिचय सम्मेलन की प्रविष्टियों को संक्षेप में प्रकाशित कर अधिकाधिक नागरजनों तक पहुंचाने का लक्ष्य यही है कि इन संकेतों के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रिश्ते जुड़े। स्थानाभाव के कारण हमने प्रतियोगी का नाम, पिताजी का नाम उसी के सामने शैक्षणिक योग्यता दर्शा कर जन्मतिथि, समय, स्थान तथा सम्पर्क के फोन, मोबाईल नं. दिए हैं। शेष चर्चा फोन द्वारा की जाकर सम्पर्क को सम्बंध में बदलना आप पाठकों का काम है।

-सम्पादक

मंगल कामना

हमारे प्रिय स्वजन,
नव वर्ष के इस शुभ अवसर पर हम श्वांस-श्वांस से, रोम-रोम से, प्राणो के कण-कण से
आपके लिए मंगल कामना करते हैं कि....
आपके हृदय में सत्य का सूर्य चमके,
शांति का दिया जले, आनन्द का प्रकाश फैले।
आपका जीवन प्रेम से भरे,
प्यार से भरे, आनन्द से भरे, संतोष से भरे।
आपके जीवन में सौन्दर्य के फूल खिलें,
संगीत के फूल खिलें, सुंगंधि के फूल खिलें, शांति के फूल खिलें।
आपका हृदय पवित्र रहे स्वच्छ रहे, निर्मल रहे,
गंगोत्री से निकले हुए गंगाजल के समान पवित्र।
आपकी मति, आपकी रति, आपका प्रेम, परमात्मा के चरणों में सदा लगा रहे।
आपको न कोई रोग हो, न शोक हो, न भय हो, न चिन्ता हो, न विषाद हो,
आपके हृदय में न राग रहे, न द्वेष, न ईर्ष्या रहे, न जलन।
आप सदा प्रसन्न रहें, खुश रहें, आनन्द में रहें,
आपके घर में शांति रहे, संतोष रहे, तृप्ति रहे, प्रेम रहे।
आपकी वाणी में मिठास रहे, माधुर्य रहे, रस रहे, अमृत रहे,
आपका हृदय सदा उदार रहे, परोपकार की भावना से भरा रहे।
श्रीकृष्ण की सोच, मां दुर्गा का ओज,
शिव की शक्ति, मीरा की भक्ति,
राम की मर्यादा, भीष्म का वादा,
गणेश की सिद्धि, चाणक्य की बुद्धि,
माँ शारदा का ज्ञान, कर्ण का दान,
हरिशचन्द्र की सत्यता, कुबेर की सम्पन्नता
इस नव वर्ष में आप इसके हकदार बनें, यही नव वर्ष की मंगल कामनाएं,
समस्त समाज बंधुओं के लिए जय हाटकेश वाणी।

नागर कैलेण्डर : निःशुल्क

मासिक जय हाटकेश वाणी के साथ नए वर्ष 2009 का कैलेण्डर पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। नियमानुसार यह पत्रिका के साथ डाक से वितरित नहीं हो पा रहा है। अतः इन्दौर से बाहर पत्रिका के स्थानीय संवाददाताओं के माध्यम से कैलेण्डर भेजे जा रहे हैं। कृपया पाठक आपसी सुविधा से कैलेण्डर प्राप्त कर लेवें। इसी प्रकार इन्दौर शहर में कैलेण्डर प्राप्ति के लिए चारों दिशाओं में केन्द्र बनाए गए हैं, अतः पाठक वहां से कैलेण्डर प्राप्त कर अनुगृहित करें।

1. जय हाटकेश वाणी कार्यालय, खजूरी बाजार, इन्दौर
2. आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ), 10, बीमा नगर, खजराना रोड, इन्दौर
3. मेहता एंड संस, 970, सुदामा नगर, इन्दौर
4. श्रीमती शारदा मंडलोई, 331, ए.डी. 74, स्कीम सी सेक्टर, विजय नगर, इन्दौर
5. श्री व्रजेन्द्रजी नागर, 251, श्री मंगल नगर, बिचोली हप्सी रोड, इन्दौर